डाक पंजीयन नं. 99/2021–23

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

# आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

PG-5

PG-5

सिनेमाः नच पंजाबन ट्रेंड करते दिखे अभिताभ बच्चन फैंस ........

वर्ष -08 अंक -99 | प्रयागराज, गुरुवार 23 जून, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

## संक्षिप्त समाचार

### उपराज्यपाल और चुनी हुई सरकार में शुरू हुई तकरार

**नई दिल्ली ।** नेता मनीष सिसोदिया ने आरोप लगाया कि भाजपा नेता मनोज तिवारी की एक पुरानी शिकायत को दिल्ली के नवनियुक्त राज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने जांच के लिए भेजा है। दिल्ली की चुनी हुई सरकार की उपराज्यपाल से तकरार शुरू हो गई है। उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने भाजपा की उस शिकायत को फर्जी करार दिया है, जिसके आधार पर उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने निर्माणाधीन अस्पतालों में कथित भ्रष्टाचार की जांच की सिफारिश भ्रष्टाचार निरोधक शाखा (एसीबी) से की है। भाजपा की शिकायत को राजनीति प्रेरित बताते हुए सिसोदिया ने उपराज्यपाल पर नियमों को दरकिनार करने का भी आरोप लगाया है। साथ ही नसीहत भी दी है कि उपराज्यपाल एमसीडी, पुलिस और डीडीए में हो रहे भ्रष्टाचार की जांच कराएं। इस बारे में उन्होंने उपराज्यपाल को एक पत्र भी लिखा है। मीडिया से मंगलवार बात करते हुए मनीष सिसोदिया ने कहा कि भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने करीब एक साल पहले अस्पताल बनाने में भ्रष्टाचार को लेकर पूर्व उपराज्यपाल अनिल बैजल से शिकायत की थी। तत्कालीन उपराज्यपाल ने जांच में शिकायत को राजनीति से प्रेरित पाया था। सिसोदिया के मुताबिक, सवाल जांच का नहीं है। भाजपा सैकड़ों बार जांच करवा सकती है। पिछले आठ सालों में भाजपा ने कई जांचें कराई भी हैं, जिसमें उनको कुछ भी नहीं मिला है। असल दिक्कत जांच के फेर में फंसकर जनता के काम रुक जाने की है। मनीष सिसोदिया का आरोप है कि भाजपा काम रुकवाने की नीयत से अधिकारियों को जांच के दायरे में फंसाने की कोशिश कर रही है। भाजपा की जिन राज्यों में सरकारें हैं, वहां तो वो काम नहीं करती हैं, लेकिन दिल्ली सरकार के काम में अड़ंगा जरूर लगा देती हैं। अधिकारियों में डर फैलाने और काम रुकवाने के लिए भाजपा फर्जी शिकायतें कर रही है।

## सामना' में दावा, सूरत में शिवसेना विधायकों को गुजरात पुलिस ने पीटा, नितिन देशमुख को कराना पड़ा अस्पताल में भर्ती

**मुम्बई।** महाराष्ट्र में जारी सियासी संकट के बीच शिवसेना ने बड़ा दावा किया है। शिवसेना ने अपने मुखपत्र 'सामना' में लिखा है कि शिवसेना के विधायकों को सूरत में गुजरात पुलिस ने पीटा है। वे मुंबई आना चाहते थे, लेकिन गुजरात पुलिस उन्हें पकड़कर सूरत ले गई, जहां उन्हें बुरी तरह से पीटा गया। इतना ही नहीं पार्टी के विधायक नितिन देशमुख को इतना मारा गया कि उन्हें दिल का दौरा तक पड़ गया। इसके चलते उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। इससे पहले मंगलवार को शिवसेना विधायक नितिन देशमुख की पतनी प्रांजलि ने अकोला पुलिस स्टेशन में गुमशुदगी की शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने बताया, मेरे पति को जान का खतरा है। वह मंगलवार को घर आने वाले थे, लेकिन उनका फोन नहीं लग रहा है। वह लापता हो गए हैं। दस विधायकों को जबरन गुजरात ले जाया गया सामना में शिवसेना ने आरोप लगाया है कि विधान परिषद चुनाव के बाद शिवसेना के 10 विधायकों को उठाकर गुजरात ले जाया गया। इसमें से चार से पांच विधायकों ने भागने का प्रयास किया। हालांकि, गुजरात पुलिस ने उन्हें पकड़कर ऑपरेशन कमल वालों के हवाले कर दिया। शिवसेना ने कहा विधायक कैलाश पाटिल घेराबंदी तोड़कर वहां से भाग निकले और किसी तरह मुंबई आए। विधायकों को कराया गया एयरलिफ्ट महाराष्ट्र के सियासी घमासान के बीच एकनाथ शिंदे के साथ करीब 40 विधायक असम के गुवाहाटी पहुंचे हैं। खबरों के मुताबिक, उन्हें स्पेशल फ्लाइट से गुवाहाटी ले जाया गया है। इसके बाद बस से उन्हें होटल तक छोड़ा गया है। होटल के आसपास सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं।

## सिद्धू मूसेवाला हत्याकांड में चौंकाने वाला खुलासा शूटरों ने उगला अब तक का सबसे बड़ा राज

**पंजाब।** पंजाबी गायक सिद्धू मूसेवाला की हत्या के आरोप में गिरफ्तार किए गए शूटरों ने एक नया खुलासा किया है। सिद्धू मूसेवाला की हत्या करने से पहले उसकी चार बार हत्या करने की कोशिश की गई थी। मगर अधिक भीड़ व कड़ी सुरक्षा के चलते वह सिद्धू मूसेवाला की हत्या नहीं कर पाए थे। कई बार सिद्धू मूसेवाला शूटरों के बिल्कुल पास से निकल गया था। दूसरी तरफ जांच में ये भी बात सामने आई है कि गोल्डी बराड़ ने सिद्धू मूसेवाला की हत्या के लिए उसकी गतिविधियों पर नजर रखने के लिए निगरानी टीम भी बनाई थी। स्पेशल सेल के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि गिरफ्तार प्रियव्रत उर्फ फौजी ने पूछताछ में खुलासा किया है कि लॉरेंस बिश्नोई और गोल्डी बराड़ ने करीब छह महीने पहले ही शूटरों को सिद्धू मूसेवाला की हत्या के लिए निर्देश दे दिया था। तभी से शूटर सिद्धू की हत्या के करने के लिए उसके पीछे लग गए थे।पंजाब में एक बार बॉलीबॉल खेल हुआ था। यहां भी शूटर सिद्धू की हत्या करने गए थे, मगर यहां भीड़ बहुत ज्यादा थी। इस कारण ये सिद्धू की हत्या नहीं कर पाए थे।एक बार सिद्धू को पंजाब की एक कोर्ट में भी मारने का प्रयास किया गया था। शूटर कोर्ट में चले गए थे। कोर्ट में भी उस समय बहुत भीड़ थी। सिद्धू इनके पास से गुजर गया था और ये हत्या नहीं कर पाए थे। सिद्धू की हत्या करने से पहले कई बार रेकी की गई थी। पुलिस अधिकारियों के अनुसार गोल्डी बराड़ ने पंजाबी गायक की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए निगरानी टीम भी बनाई थी।ये टीम गायक मूसेवाला कहां जा रहा है, किससे मिल रहा है और उसके क्या-क्या कार्यक्रम होते हैं आदि पर नजर रख रही थी। शूटरों ने पूछताछ में ये बताया है कि सिद्धू की गतिविधियों पर इसलिए नजर रखी जा रही थी कि ताकि ये पता लग सके कि सिद्धू की सुरक्षा कम होती है और सुरक्षाकर्मी कब-कब नहीं होते हैं।

## राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार की खोज कहां तक पूरी हुई, भाजपा किस पर खेलेगी दांव

**नई दिल्ली ।** राष्ट्रपति पद के लिए 18 जुलाई को चुनाव होना है। इसके लिए सियासी गलियारों में हलचल बढ़ चुकी है। भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए और कांग्रेस की अगुआई वाले यूपीए में उम्मीदवार को लेकर मंथन जारी है। विपक्ष के दो संभावित उम्मीदवारों ने राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी के तौर पर अपना नाम अलग कर लिया है। वहीं, एनडीए में कई दिग्गजों के नामों पर बातचीत अब भी जारी है। आइए जानते है कि राष्ट्रपति चुनाव को लेकर एनडीए में क्या तैयारी चल रही है? उम्मीदवार को लेकर भाजपा की खोज कहां तक पूरी हुई और किन-किन नामों पर चर्चा चल रही है चुनाव को लेकर भाजपा ने अब तक क्या-क्या किया एनडीए ने रक्षामंत्री राजनाथ सिंह को जिम्मेदारी सौंपी है कि वह विपक्ष और एनडीए में शामिल पार्टियों से समर्थन हासिल करें। इसके लिए राजनाथ सिंह ने ममता बनर्जी, शरद पवार, मल्लिकार्जुन खड़गे, अखिलेश यादव, उद्धव ठाकरे, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक समेत विपक्ष और एनडीए की सहयोगी पार्टी के कई बड़े नेताओं से संपर्क किया।इसके अलावा भाजपा ने मैनेजमेंट टीम भी बनाई है। इसके समन्वयक गजेंद्र सिंह शेखावत हैं। सह संयोजक विनोद तावड़े और सीटी रवि बनाए गए हैं। वहीं, 11 सदस्य भी नियुक्त किए गए हैं। विपक्ष को एकजुट करने के लिए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी काफी कोशिशें कर रहीं हैं। 15 जून को ही उन्होंने 22 विपक्षी दलों की बैठक बुलाई थी, जिसमें 17 दलों के नेता शामिल हुए। हालांकि, आम आदमी पार्टी, टीआरएस, बीजेडी और वाईएसआर कांग्रेस ने खुद को इस बैठक से अलग रखा। यह जानने के लिए हमने देश की राजनीति पर अच्छी पकड़ रखने वाले प्रो. अजय कुमार सिंह से संपर्क किया। उन्होंने कहा, '2014 के बाद से भाजपा वही कर रही है, जो किसी ने सोचा नहीं होगा। जैसे 2017 में रामनाथ कोविंद को अचानक राष्ट्रपति और वैंकैया नायडू को उपराष्ट्रपति चुना गया। उस वक्त तक इन दोनों नाम पर कोई चर्चा नहीं थी। इस बार भी कुछ ऐसा ही हो सकता है। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद उत्तर प्रदेश के दलित और उपराष्ट्रपति वैंकैया नायडू आंध्र प्रदेश के कम्मा परिवार से आते हैं। जिस वक्त रामनाथ कोविंद राष्ट्रपति बनाए गए, उस वक्त वह बिहार के राज्यपाल थे। ऐसे में भाजपा तीन वर्ग से राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार उतार सकती है।महादलित, आदिवासी या फिर दलितः भाजपा महादलित या किसी आदिवासी को देश के राष्ट्रपति या फिर उपराष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार के रूप में उतार सकती है। खासतौर पर दक्षिण के महादलित या आदिवासी चेहरे को यह मौका मिल सकता है। इसमें छत्तीसगढ़ की राज्यपाल अनुसुइया उइके, झारखंड की पूर्व राज्यपाल द्रौपदी मुर्म का नाम चर्चा में है।उइके और द्रौपदी की चर्चा इसलिए भी है, क्योंकि 2023 में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान समेत नौ राज्यों में विधानसभा चुनाव हैं। उइके मध्यप्रदेश से आती हैं, जबकि इस समय छत्तीसगढ़ में राज्यपाल हैं। वहीं, द्रौपदी ओडिशा की रहने वाली हैं। वह झाखंड की राज्यपाल रह चुकी हैं। इन राज्यों में आदिवासी समाज के काफी लोग रहते हैं। आज तक आदिवासी समाज से कोई राष्ट्रपति नहीं बना। चर्चा यह भी है कि भाजपा एक बार फिर किसी दलित चेहरे पर दांव लगा सकती है। ऐसे में कर्नाटक के राज्यपाल थावरचंद गहलोत के नाम की सबसे ज्यादा चर्चा है। 2. सिखः इस वक्त भाजपा का सिखों पर काफी फोकस है। किसान आंदोलन के बाद सिख समुदाय में भाजपा के प्रति नाराजगी बढ़ गई थी। अगले साल हरियाणा और फिर 2024 में लोकसभा चुनाव भी है। हरियाणा में हिंदू और मुस्लिम मतदाताओं के बाद सबसे ज्यादा संख्या सिख वोटर्स की है। ऐसे में संभव है कि सिख चेहरे को राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति का उम्मीदवार बनाया जा सकता है। ऐसे में पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह, उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट गुरमीत सिंह का नाम सबसे ज्यादा चर्चा में है।3. मुस्लिमः किसी मुस्लिम चेहरे को भी राष्ट्रपति या उपराष्ट्रपति का उम्मीदवार बनाए जाने के कयास लगाए जा रहे हैं। इनमें केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान और केंद्रीय मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी शामिल हैं। कयास हैं कि भाजपा को दुनियाभर में एंटी मुस्लिम के तौर पर जाना जाता है। ऐसे में किसी मुस्लिम चेहरे को राष्ट्रपति बनाकर भाजपा यह दाग साफ करना चाहेगी। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार के दौरान भी ऐसा ही हुआ था। तब भाजपा की तरफ से डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम को उम्मीदवार बनाया गया था। 4. इन नामों की भी चर्चाः इनके अलावा कई नामों पर मंथन चल रहा है। इनमें आंध्र प्रदेश के राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन, बिहार के राज्यपाल फागू चौहान, हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय, तेलंगाना की राज्यपाल तामिलिसाई सुंदरराजन को लेकर भी चर्चा हो रही है।

### एनडीए की राष्ट्रपति उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू 24 जून को करेंगी नामांक

**बिहार।** नएनडीए उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू 24 जून 2022 को अपना नामांकन दाखिल करेंगी। वहीं, एनसीपी चीफ शरद पवार के मुताबिक, विपक्ष के उम्मीदवार यशवंत सिन्हा 27 जून को अपना नामांकन दाखिल करेंगे। राष्ट्रपति पद का चुनाव 18 जुलाई को होगा। देश के सर्वोच्च पद यानी राष्ट्रपति के लिए 18 जुलाई को वोटिंग है। विपक्ष की तरफ से यशवंत सिन्हा को उम्मीदवार बनाया गया है, जबकि भाजपा ने उड़ीसा की आदिवासी महिला नेता और झारखंड की पूर्व गवर्नर द्रौपदी मुर्मू पर दांव खेला है।

## दिल्ली में आज इन रास्तों पर बंद रहेगी आवाजाही शाम चार बजे तक लागू रहेगी विशेष व्यवस्था

**नई दिल्ली ।**पुलिस ने बताया कि सुबह 10 से शाम चार बजे तक दिल्ली के मोतीलाल नेहरू मार्ग, अकबर रोड, जनपथ और मानसिंह रोड पर वाहनों की आवाजाही की अनुमति नहीं मिलेगी। लोगों से इन रास्तों पर न जाने का आग्रह किया गया है। दिल्ली की यातायात व्यवस्था में बुधवार को फिर से बदलाव किए गए हैं। ट्रैफिक पुलिस ने इस संबंध में जानकारी दी है। पुलिस ने बताया कि सुबह 10 से शाम चार बजे तक दिल्ली के मोतीलाल नेहरू मार्ग, अकबर रोड, जनपथ और मानसिंह रोड पर वाहनों की आवाजाही की अनुमति नहीं मिलेगी। लोगों से इन रास्तों पर न जाने का आग्रह किया गया है। विशेष यातायात व्यवस्था के कारण ये बदलाव किए गए हैं।

## जेएनयू के प्रोफेसर को अगवा करने के मामले में गायक समेत दो गिरफ्तार, कार टच होने से गुस्साए युवकों ने दिया था वारदात को अंजाम

**नई दिल्ली ।** जेएनयू प्रोफेसर शरद बाविस्कर 17 जून की रात अपनी पतने और बेटी को बुराड़ी स्थित अपने ससुराल छोड़कर कार से लौट रहे थे। रात करीब 12.30 बजे नारायणा फ्लाई ओवर पर उनकी कार की बाई ओर से एक कार से टक्कर हो गई, जिसपर सवार युवकों ने गुस्से में आकर उन्हें अगवा कर लिया था नारायणा इलाके में कार टच होने से गुस्साए युवकों ने जेएनयू के प्रोफेसर को अगवा कर लूटपाट की थी। पुलिस ने इस मामले में एक गायक समेत दो आरोपी को गिरफ्तार किया है। गायक समारोहों में गाना गाने के बाद उसे यूट्यूब पर अपलोड करता है। पुलिस ने इनके कब्जे से 20 हजार रुपये, ऑडी और रेंज रोवर कार बरामद की हैं। पुलिस फरार अन्य आरोपियों की तलाश में दबिश दे रही है। पश्चिम जिला पुलिस उपायुक्त घनश्याम बंसल ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों की पहचान टैगोर गार्डन निवासी रजत पाल सिंह और पालम विहार, गुरुग्राम, हरियाणा निवासी आशीष शौकीन के रूप में हुई है। रजत पाल सिंह पेशे से गायक है और गाना गाने के बाद उसे युट्यूब पर अपलोड करता है। वहीं आशीष लग्जरी कारों की बिक्री का काम करता है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में प्रोफेसर शरद बाविस्कर 17 जून की रात अपनी पत्नी और बेटी को बुराड़ी स्थित अपने ससुराल छोड़कर कार से जेएनयू परिसर जा रहे थे। रात करीब 12.30 बजे नारायणा फ्लाई ओवर पर उनकी कार की बाई ओर से एक कार से टक्कर हो गई। उसके बाद कार पर सवार युवक उनका पीछा करने लगे।

## सुबह बारिश की फुहारों से राहत तो दिनभर धूप से आफत, 24 घंटे में सामान्य से चार डिग्री कम रहा अधिकतम तापमान

**नई दिल्ली ।**मौसम विभाग ने मंगलवार के लिए यलो अलर्ट जारी किया है। इसके तहत सुबह से ही आसमान में बादल छाए रहे और दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में तेज बारिश रिकॉर्ड की गई। हालांकि, तेज बारिश की अवधि कम समय के लिए रही। राजधानी में मंगलवार की सुबह लोगों के लिए राहत भरी रही। बारिश की फुहारों ने गर्मी का सितम कम किया। हालांकि, दोपहर बाद मौसम का मिजाज बदला और दिनभर तेज धूप निकली रही। सुबह नौ बजे से लेकर शाम साढ़े पांच बजे तक दिल्ली के आधिकारिक मानक केंद्र सफदरजंग पर 0.7 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई है। अगले 24 घंटे में आंशिक रूप से बादल छाए रहने की संभावना है। मौसम विभाग ने मंगलवार के लिए यलो अलर्ट जारी किया है। इसके तहत सुबह से ही आसमान में बादल छाए रहे और दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में तेज बारिश रिकॉर्ड की गई। हालांकि, तेज बारिश की अवधि कम समय के लिए रही। अधिकतम तापमान सामान्य से चार कम 34.5 व न्यूनतम तापमान सामान्य से तीन कम 24.9 डिग्री सेल्सियस रहा। हवा में नमी का स्तर 54 से 84 फीसदी दर्ज किया गया। मौसम विभाग के मुताबिक, अगले 24 घंटे में आंशिक रूप से बादल छाए रहने के साथ अधिकतम तापमान 36 व न्यूनतम तापमान 25 डिग्री सेल्सियस तक दर्ज किया जा सकता है। इसके अगले दिन 20 से 30 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से हवाएं चलने के साथ आंशिक रूप से बादल छाए रहने की संभावना है। मौसम विशेषज्ञों का पूर्वानुमान है कि मानसून अपनी सामान्य गति से बढ़ रहा है, ऐसे में आगामी 27 जून तक मानसून की दस्तक हो सकती है।

# इलाहाबाद हाईकोर्टः ज्ञानवापी मस्जिद के अंदर सर्वे का आदेश देने वाले जज समेत 619 न्यायिक अधिकारियों का ट्रांसफर

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

**प्रयागराज ।** इलाहाबाद हाईकोर्ट ने राज्य के विभिन्न जिलों में तैनात कुल 619 न्यायिक अधिकारियों का

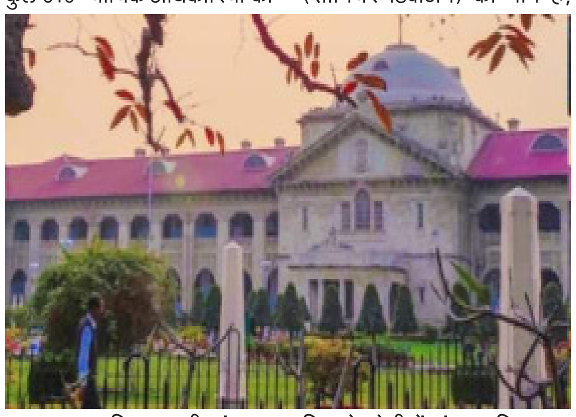

तबादला कर दिया। सभी ट्रांसफर न्यायिक अधिकारियों को 4 जुलाई को उनके वर्तमान पदस्थापन स्थान पर कार्यभार सौंपने के लिए कहा गया है। 213 सिविल जज (जूनियर डिवीजन) कैडर, 285 अतिरिक्त जिला और सत्र न्यायाधीश कैडर, और 121 सिविल जज (सीनियर डिवीजन) कैडर सहित कुल 619 न्यायिक अधिकारियों को ट्रांसफर किया गया है। ट्रांसफर जजों की सूची में वाराणसी के जज रवि कुमार दिवाकर सिविल जज (सीनियर डिवीजन) का नाम है, जिनको बरेली में ट्रांसफर दिया गया है। जज दिवाकर ने अप्रैल में, पांच महिलाओं द्वारा वाराणसी में ज्ञानवापी मस्जिद परिसर की पश्चिमी दीवार के पीछे हिंदू मंदिर में पूजा करने की मांग करते हुए दायर याचिकाओं पर ज्ञानवापी मस्जिद परिसर के सर्वे का आदेश दिया था। गौरतलब है कि 16 मई को जब जज दिवाकर की अध्यक्षता वाली अदालत को बताया गया कि अदालत द्वारा नियुक्त एडवोकेट कमिशन्र ने सर्व के दौरान ज्ञानवापी मस्जिद परिसर के अंदर शिव लिंग पाया है, तो उन्होंने संबंधित स्थान/क्षेत्र को सील करने का आदेश दिया था। गौरतलब है कि ज्ञानवापी मस्जिद परिसर का सर्वे जारी रखने के आदेश देते हुए उन्होंने अपने आदेश में सुरक्षा को लेकर चिंता जाहिर की थी। वाराणसी कोर्ट के सिविल जज (सीनियर डिवीजन) रवि कुमार दिवाकर ने कहा था, इस साधारण से दीवानी मामले को असाधारण मामला बनाकर भय का माहौल बना दिया गया है। डर इतना है कि मेरा परिवार हमेशा मेरी सुरक्षा के बारे में चिंतित है और मुझे उनकी सुरक्षा की चिंता है। सुरक्षा के बारे में चिंता मेरी पतनी द्वारा बार-बार व्यक्त की जाती है, जब मैं घर से बाहर हूं।एक पंजीकृत डाक से धमकी भरा पत्र मिलने के बाद इस महीने की शुरुआत में उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार को भी पत्र लिखा था।

# नम आँखों से अपने साथी को रेलवे कर्मचारियों ने दी विदाई

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

**प्रतापगढ़।** कुवंर नीरज सोमवंशी के विदाई समारोह में अमेठी रेलवे स्टेशन पर साथियों ने नम आँखों से विदाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उनकी शालीनता, विनम्रता साथियों संबोधन में चर्चा का विषय बनी रही।जहाँ साथियों ने कुंवर नीरज सिंह को फूल मालाओं से लाद दिया वहीं साथियों से अलग हो रहे रिटायर्ड कुंवर नीरज सिंह भावुक हो गए। उन्होंने कहा सबके साथ में नौकरी में बिताए हर एक पल हमेशा मेरे दिल में सभी साथियों की यादें तरोताजा करते रहेंगे और सभी साथी सदैव मेरे दिल में बने रहेंगे। समारोह में मुख्य रूप से स्टेशन अधीक्षक मो0शहबाज मुज्जफर, सीसीएस एस बी सिंह, प्रभारी निरीक्षक रेलवे सुरक्षा बल सीएस मिश्र जी, सिगन्ल इंस्पेक्टर कुणाल ,सहायक स्टेशन मास्टर श्री सतीश सिंह ,सहायक स्टेशन मास्टर श्रीवास्तव जी, कुंवर साहब का स्थान ग्रहण करने वाले राजेन्द्र कुमार पाण्डेय सब इंस्पेक्टर शिवसागर सिंह, टीटी श्री राजेन्द्र सिंह यादव , पूर्व स्टेशन अधीक्षक स्वामी नाथ पाल पूर्व स्टेशन अधीक्षक प्रताप गढ़ कैलाश शर्मा तिथियों के इंचार्ज केके सिंह , आरपीएफ सिपाही विकास जाट पवन यादव, मुकेश समस्त स्टाफ मानव जन सेवा संस्थान के संयोजक मोहम्मद अहमद, बिजली विभाग के इंचार्ज यादव जी मानव जन सेवा संस्थान के विशेष कर्ता-धर्ता राम लखन सिहं आदि तमाम लोग उपस्थित रहे।

# अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर उत्तर प्रदेश राज्य अद्योगिक संघ ने उद्यमियों के लिए विशेष शिविर

(आधुनिक समाचार सेवा)
श्रीकान्त् शाह

**प्रयागराज ।** योग मनुष्य आत्माओं के लिए ईश्वरी उपहार है जब आप योग करके व्यक्तिगत जीवन को बेहतर बनाने के लिए अपने अंदर सकात्मक चिंतन की वृत्तियों का निर्माण करते हैं, जो आपका यह पुरुषार्थ समाज के लिए बहुत बड़ा सहयोग होता है। धन ,भौतिक वस्तुओं एवं साधनों से समाज के

निर्बल लोगों का सहयोग करना सहज होता है। स्थूल साधनों से समाज के लोगों को सहयोग भी करना चाहिए। परंतु मानसिक रूप से निर्बल लोगों का धन और स्थूल साधनों से सहयोग की आवश्यकता नही होती है ।प्राय देखा जा रहा है कि भौतिक साधनों और सुविधाओं से संपन्न लोग मानसिक रूप से निर्बल हो रहे हैं। सैकड़ों बुझे हुए दीपक मिलकर भी एक दीपक को प्रज्वलित नहीं कर सकते हैं। एक प्रज्ज्वलित दीपक ही सैकड़ों बुझे हुए दीपक को प्रज्वलित कर सकता है। इसी प्रकार नकारात्मक एवं निर्बल मानसिकता वाले लोग एक बेहतर समाज और सशक्त भारत के नव निर्माण में अपना योगदान नहीं दे सकते हैं ।सकारात्मक चिंतन वाला मनुष्य अपने आसपास मौजूद सैकड़ों हजारों नकारात्मक सोच और जीवन से निराश लोगों के जीवन में अपने सकारात्मक चिंतन से नई ऊर्जा का संचार करते हुए समाज की दशा और दिशा को बदल सकता है ।वर्तमान समय में जीवन में सकारात्मक सोच को विकसित करना एक चुनौती है क्योंकि हमारे आसपास का वातावरण नकारात्मक वायुमंडल से घिर गया है ।परंतु यह सहज और संभवहै।प्रायः हर एक व्यक्ति के मन में या तो स्वयं से या दूसरों से शिकायत है । इससे मनुष्य का जीवन नकारात्मक वातावरण से घिरने लगता है ।जीवन में सकारात्मक चिंतन का विकास केवल ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग के अभ्यास द्वारा ही किया जा सकता है। शारीरिक क्रियाओं पर आधारित योगाभ्यास से केवल हमारा शरीर तो स्वस्थ हो सकता है परंतु मन में केवल ज्ञान और विवेक के आधार पर ही सकारात्मक और स्वस्थ बनाना संभव है ।क्योंकि यह शरीर का कोई स्थूल अंग नहीं होता है। मन अति सूक्ष्म और चेतना का क्रियात्मक स्वरूप होता है ।अतः समाज का परोपकार करने के लिए योग से सबका सहयोग करे। नीरज श्रीवास्तव संगठन् मंत्री उपसा ने योग के विषय मे बताया की करे योग रहे निरोग वर्तमान के युवा होते बच्चों और युवा पीढ़ी को अपने सपनों से किसी भी प्रकार से समझौता स्वीकार नहीं है ।इसके लिए वे सभी प्रकार की कीमत को चुकाने के लिए तैयार रहते हैं ।स्वास्थ्य की देखभाल और मानवीय संवेदनाओं का जीवन में विकास युवा पीढ़ी के युवा पीढ़ी के चिंतन के केंद्र से बाहर होता जा रहा है । इसका दुष्परिणाम हमारी युवा पीढ़ी को भुगतना पड़ रहा है ।विगत कुछ वर्षों में युवा में हार्ट-अटैक, मानसिक तनाव, अवसाद के कारण मृत्यु की घटनाएं अधिक देखने को मिल रही हैं। कई अभिनेताओं की हुई असामयिक मृत्यु ने जनमानस को झकझोर कर रख दिया है। आखिर यह जीवन का लक्ष्य भी किस काम का है जिसमें जीवन की अंतिम यात्रा में शांति ना हो।जीवन काल में लंबे समय तक सक्रिय रहने के लिए बाल्यकाल से ही तन और मन को स्वस्थ बनाने के लिए योग को अपनी दिनचर्या में सम्मिलित करना बहुत ही आवश्यक है । नियमित रूप से योग करने तथा सात्विक भोजन से विशेषकर मानसिक तनाव और उत्पन्न होने वाली असाध्य बीमारियों के कारण और असामयिक मृत्यु दर पर नियंत्रण पाना संभव है।विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपनी एक रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा कि 80ज्ञ् स्वास्थ्य संबंधी समस्या का कारण मनोदैहिक बीमारियां हैं। उदाहरण के लिए ,मानसिक तनाव के कारण ब्लड प्रेशर की बीमारी प्रारंभ में होती है। बाद में इसके कारण शुगर तथा लीवर और किडनी के फेल होने की बीमारी मृत्यु का कारण बन जाती है। निरोग रहने के लिए अपनी दिनचर्या में योग को सम्मिलित करना समय की मांग है। यह सत्य है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। भावनात्मक रूप जीवन में उतार- चढ़ाव आने पर शरीर में अनेक प्रकार के हानिकारक हार्मोन उत्पन्न होते हैं। -आचार्य कुमकुम शास्त्री ने बताया की शोध से यह ज्ञात हुआ है कि असाध्य बीमारी कैंसर की उत्पत्ति का एक कारण मानसिक आघात भी है।योगः कर्मसु कौशलम् भौतिक समृद्धि और उपलब्धियों के लिए जीवन में सक्रियता और कुशलता आवश्यक है। घोर स्पर्धा के वर्तमान युग में थोड़ा भी आलस्य जीवन में आगे बढ़ने के अवसरों को छीन लेता है ।जीवन में उननति के अवसरों के लिए कर्म में कुशलता और व्यवहार में सहजता अति आवश्यक है। आहार और दिनचर्या को व्यवस्थित करके ही वर्तमान स्पर्धा युग में टिकना संभव है। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही जीवन में भारी तबाही का कारण बन सकती हैं इसलिए कर्म में कुशलता आवश्यक है ।गीता में स्पष्ट कहा गया है -'योग से कर्म में कुशलता आती हैं ।वर्तमान समय में मनुष्यो को कौशल विकास केंद्रों में प्रशिक्षण देकर कार्यकुशल बनाने का प्रयास किया जा रहा है ।परंतु ट्रेनिंग से एक सीमित सीमा तक ही कर्म में कुशलता लाना संभव हो पाता है। इसलिए कर्म में और असीमित कुशलता के लिए योग ही एकमात्र विकल्प है ।राजयोग के अभ्यास से मन में अंतर्निहित शक्तियों और चेतना के नए आयामों के विकास की नई संभावनाएं सदा बनी रहती हैं। इसलिए हाल ही के वर्षों में कारपोरेट सेक्टर व्यापारिक संस्थानों और कारखानों में काम करने वाले लोगों में योग के प्रति आकर्षण देखा जा रहा है। योग को दिनचर्या में नियमित रूप से सम्मिलित करने पर तनाव मुक्त होकर कर्म कुशलतापूर्वक अपने दायित्व का करना संभव है। अरविन्द राय अध्यक्ष उपसा ने बताया की मानवता के लिए योग योग में समस्त मानवता का कल्याण निहित है। योग किसी एक धर्म विशेष से संबंधित नहीं है। योग एक ऐसी क्रिया है जो प्रत्येक मनुष्य के तन और मन पर सार्वभौमिक रूप से प्रभाव डालती है ।योग हमारी आंतरिक सुरक्षा प्रणाली और रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाती हैं ।गीता में स्पष्ट कहा गया है - काम ,क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार नर्क का द्वार है' अर्थात इन तीव्र नकारात्मक आवेगो के कारण हमारे तन और मन में रोग और शोक उत्पन्न होते हैं। नकारात्मक मनोदशा की अवस्था में धर्म के अनुकूल आचरण करना असंभव होता है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर उत्तरा प्रदेश राज्य अद्योगिक संघ द्वारा जीवन में सकारात्मक मन की अनुभूति के लिए आयोजित विशेष योग कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए ईश्वरीय निमंत्रण है। राजयोग का अभ्यास और स्वयं परमात्मा द्वारा दिया गया ईश्वरी ज्ञान का नियमित अनुश्रवण आपके जीवन का कायाकल्प करने में समर्थ है ।योग के प्रयोग और सात्विक आहार का तन और मन पर चमत्कारी प्रभाव पड़ता है। राजयोग के जीवन में घटित हो रही तथा होने वाली घटनाओं का रहस्य स्पष्ट होने से जीवन सहज और व्यर्थ चिंतन और दुखों से मुक्त हो जाता है । हमारे जीवन का नियंता कोई बाह्य शक्ति नहीं बल्कि हमारा मन ही है ।राजयोग मन को सहज साधने का विज्ञान है । अनंत चंद्र ,प्रबंध निदेशक वेंटूरा ट्रांसफार्मर ने आह्वान किय की आइये,स्वयं के और मानवता के सुख में भविष्य के लिए राजयोग को अपने जीवनशैली में अपनाकर एक सशक्त और स्वर्णिम भारत के नवनिर्माण में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करें । सर्व मनुष्यात्माओं को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर परमात्मा की ओर से ईश्वरी संदेश है ।

# अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर पूरे जनपद में लाखों लोगों ने किया योगाभ्यास

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

**प्रतापगढ़।** आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत मानवता के लिये योग की थीम के तहत आंठवे अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आज पुलिस लाइन के परेड ग्राउण्ड प्रतापगढ़ में जनपद स्तरीय योग शिविर का भव्य आयोजन किया गया है जिसमें हजारो युवक/युवतियॉ, स्कूली बच्चे, अधिकारी/कर्मचारी, नगर के प्रबुद्ध नागरिको, स्वयं सेवी संगठनों के स्वयंसेवक बड़ी संख्या में प्रातः 6 बजे से प्रातः 7 बजे तक उपस्थित रहकर योग शिविर में प्रतिभाग किये और विभिन्न प्रकार के योगासनों को किया। इस योग शिविर में विधायक सदर राजेन्द्र कुमार मौर्य, विधायक विश्वनाथगंज जीत लाल पटेल, जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल, पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल, प्रशासनिक सदस्य राजस्व परिषद उ0प्र0 रजनीश गुप्ता, मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया, भाजपा जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र, अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) मुकेश चन्द्र, मुख्य राजस्व अधिकारी राकेश सिंह, पूर्व विधायक हरि प्रताप सिंह, जिला विकास अधिकारी ओम प्रकाश मिश्र, जिला आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारी डा0 सरोज शंकर राम, जिला सूचना अधिकारी विजय कुमार, जिला पंचायत राज अधिकारी रविशंकर द्विवेदी, जिला विद्यालय निरीक्षक सर्वदानन्द, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी भूपेन्द्र सिंह एवं जनपद स्तरीय अधिकारियों सहित व्यापार मण्डल, लायन्स क्लब, ब्रहमकुमारी, भारत विकास परिषद के पदाधिकारियों व एन0सी0सी0 के बच्चों ने योगाभ्यास किया। पतंजलि योग पीठ के योग प्रशिक्षकों ने शिविर में सभी प्रतिभागियों को योग विधा से परिचित कराते हुये विभिन्न योगासनों को सम्पन्न कराया जिसके अन्तर्गत स्कन्ध संचालन, स्कन्ध चक्र, घुटना संचालन, ताड़ासन, वृक्षासन, भद्रासन, वज्रासन/वीरासन, उष्ट्रासन, शशांकासन, मकरासन, भुजंगासन, सेतुबंध आसन, त्रिकोणासन आदि प्रकार के योगाभ्यास कराये गये तथा इनके लाभ के विषय में भी जानकारी दी गयी। योग प्रशिक्षकों द्वारा बताया गया कि जीवन जीने की श्रेष्ठतम विधा योग है और योग से ही व्यक्ति की काया निरोग रह सकती है। योग भारत की प्राचीन परम्परा का एक अमूल्य उपहार है यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है, मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है, विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला है तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिये एक समग्र दृष्टिकोण को भी प्रदान करने वाला है। योगाभ्यास से लोगों को जुड़ना चाहिये क्योकि इससे विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचा जा सकता है। कार्यक्रम का संचालन पतंजलि योग पीठ के संयोजक गोविन्द प्रसाद खण्डेलवाल ने किया। सुरमयी संगीत महाविद्यालय की प्रबन्धिका लक्ष्मी मिश्रा एवं अन्य महिलाओं द्वारा राष्ट्रगान के साथ इस विशेष योग शिविर का समापन हुआ। कार्यक्रम के अन्त में विधायक एवं जिलाधिकारी द्वारा पतंजलि योग पीठ के योग प्रशिक्षकों को अंगवस्त्रम् एवं पुष्प देकर सम्मानित किया गया। जनपद में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर समस्त विकास खण्डों, विद्यालयों, आंगनबाड़ी केन्द्रों, मदरसों, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, जिला कारागार, वृद्धाआश्रम, समस्त बीज गोदामों पर, ग्राम पंचायतों के पंचायत भवन सहित अन्य स्थानों पर योग शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें योग प्रशिक्षकों द्वारा विभिन्न प्रकार के योगाभ्यास कराये गये एवं उसके लाभ के सम्बन्ध में जानकारी दी गयी। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर पूरे जनपद में लगभग 5 लाख लोगों ने योगाभ्यास किया।

# योग कला हमारे प्राचीन संस्कृति की देन है-दिनेश कुमार गुप्त

(आधुनिक समाचार सेवा)
शीतल निर्भीक

**लखनऊ।** उत्तर प्रदेश के बलिया जिले मे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर बिल्थरारोड के रामलीला मैदान मे शिविर लगाकर योगाभ्यास कराया गया। इस दौरान एसडीएम के साथ नगर पंचायत अध्यक्ष दिनेश कुमार गुप्त व अधिशासी अधिकारी ने दीप प्रज्वलित कर योगाभ्यास का शुभारंभ किया। इस अवसर पर नगर पंचायत बिल्थरारोड के सैकड़ो लोग योगाभ्यास मे सम्मिलित रहे।इस दौरान बिल्थरारोड के नगर पंचायत के चेयरमैन दिनेश कुमार गुप्त ने योग कला हमारे प्राचीन संस्कृति की देन है, हमारे पूर्वज योगा किया करते थे। यही कारण है कि वे स्वस्थ रहा करते थे। देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री ने योगा के महत्व को समझा और पूरे विश्व को इसका लाभ लेने का सुझाव दिया। उन्ही के प्रयासों से हर साल 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योगा दिवस के रूप में मनाना शुरू किया गया।

उन्होंने कहा कि जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने के लिए भोजन अति आवश्यक होता है।उसी प्रकार स्वस्थ्य रहने के लिए व्यायाम की भी आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा कि केवल संतुलित भोजन लेने से ही शरीर में स्फूर्ति और ताज़गी रहती है। व्यायाम करने से शरीर चुस्त रहता है।योग प्रशिक्षक गायत्री शर्मा व मार्कण्डेय शर्मा ने लोगों को कपाल भाति,सूर्य नमस्कार और अनुलोम विलोम कराया। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी बिल्थरारोड राजेश कुमार गुप्ता, नगर पंचायत अध्यक्ष अध्यक्ष दिनेश कुमार गुप्ता, ईओ ब्रजेश कुमार गुप्ता ,भाजपा के वरिष्ठ नेता व रेलवे सलाह समिति के सदस्य देवेन्द्र कुमार गुप्त ,अरुण कुमार गुप्ता , अमरनाथ सिंह , विनोद जायसवाल ,धनन्जय गुप्ता, अजय जायसवाल , सतीश कुमार गुप्ता , विक्की गुप्ता , आनन्द गुप्ता , देवी लाल और मृत्युंजय गुप्ता आदि उपस्थित रहे। योग प्रशिक्षक रामजी तिवारी, गायत्री शर्मा व मार्कण्डेय शर्मा ने योगाभ्यास कराया।पतंजलि योग समिति के संतोष शर्मा ने आभार व्यक्त किया।


## प्रवेश सूचना

### नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

(आई0 एस0 ओ0 प्रमाणित औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र)

भारत सरकार की कौशल विकास योजना मे समस्त, 2022 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते है। ट्रेड प्रवेश योग्यता तथ प्रस्तुत विविण पाठ्यक्रर्मो की अवधि के विवरण नीचे दिए गए है।

| क्र0सं0 | ट्रेड का नाम | ट्रेड की अवधि | योग्यता |
|---|---|---|---|
| 1. | कोपा (कम्प्यूटर ऑपरेटर) | 1 वर्ष | 12वी पास |
| 2. | फिटर | 2 वर्ष | 10वी पास |
| 3. | डाटा इंट्री ऑपरेटर | 6 माह | 10वी पास |
| 4. | फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी | 6 माह | 8वी पास |
| 5. | सेक्योरिटी सर्विस | 6 माह | 8वी पास |
| 6. | कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली | 1 वर्ष | 10वी पास |
| 7. | सर्टिफिकेट इनक म्प्यूटर एप्लीकेशन | 1 वर्ष | 10वी पास |
| 8. | इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स | 1 वर्ष | 8वी पास |
| 09. | रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग | 1 वर्ष | 8वी पास |
| 10. | योगा असिस्टेन्ट | 1 वर्ष | 10वी पास |
| 11. | वेल्डिंग टेक्नोलॉजी | 1 वर्ष | 8वी पास |
| 12. | कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स | 1 वर्ष | 10वी पास |

प्रस्तुत विभिन्न पाठ्क्रमों में रिक्त सीटों की उपलब्धता तथा दाखिला शुल्क का विवरण संस्थान की वेबसाइट पर देखे।

1. **प्रमाण पत्रः** सफल प्रशिक्षणर्थियों को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय ट्रेड प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो सेवा में भर्ती के लिए मान्य योग्यता है।
2. **चयन की प्रक्रियाः** इस वर्ष कोविड–19 महामारी के चलते यभी सीटें पर दाखिले पहले आओ पहले पाओं के आधार पर किये जायेंगे।
3. **आयुः** उम्मीदवार की आयु 1 अगस्त, 2022 को न्यूनतम 14 वर्ष या उससे अधिक होनी चाहिए।
4. **आवेदन कैसे करेः** ओवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है।
   **नोटः** आवेदन फार्म भरते हुए रू 2665 का पंजीकरण शुल्क भी (अप्रतिदेय) होगा।
5. **बस पासः** सरकार द्वारा विधार्थियों के लिए प्रति माह में रियायती एसी बस पास सुविधा उपलब्ध है, जो कि सभी बसों में मान्य है।
6. **छात्रवृत्तिः** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिसके पास आय प्रमाण पत्र हो, वो भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है।
7. अधिक जानकारी तथा ऑनलाइन आवेदन के लिए संस्थान की वेबसाइट www,nainiiti.com देखें।
8. दाखिले की अंतिम तिथिः 30 जून 2022 है।
9. सफल अभ्यार्थियों को भारत सरकार द्वारा रू 7700 प्रति माह की अप्रेंटिसशिप सुविधा उपलबध है।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज
सम्पर्क सूत्रः– 0532–2695959, 9415608710, 6386474074, 9415608790

# वाराणसी में योग दिवस की तैयारियों पर खर्च होने वाले 1.52 करोड़ की निविदा में पकड़ी गई गड़बड़ी, प्रशासन में हड़कंप

**वाराणसी ।** में योग दिवस के सफल आयोजन के लिए एक करोड़ 52 लाख रुपये जारी किया गया। आवश्यक सामग्री की खरीद के लिए अपने चहेते ठेकेदारों को लाभ पहुंचाने के लिए ई-टेंडर से पहले

ही रेट सार्वजनिक कर दिया गया। विश्व भर में डंका बजा रहे भारतीय प्राच्य विद्या योग के अंतरराष्ट्रीय समारोह के आयोजन में वाराणसी में बड़ी गड़बड़ी सामने आई है। योग दिवस के सफल आयोजन के लिए आवश्यक सामग्री की खरीद के लिए अपने चहेते ठेकेदारों को लाभ पहुंचाने के लिए ई-टेंडर से पहले ही रेट सार्वजनिक कर दिया गया।इतना ही नहीं सबसे कम रेट लोएस्ट वन (एल-1) की निविदा की बजाय हाई एस्ट वन (एच-1) रेट पर टेंडर जारी कर दिया गया। हालांकि इसकी जानकारी होने पर आननफानन में निविदा निरस्त कर खरीद कमेटी की संस्तुति पर बाजार भाव से खरीद कराई गई। फिलहाल योग दिवस के आयोजन के नोडल बने क्षेत्रीय आयुर्वेदिक और यूनानी विभाग की करतूत पर प्रशासनिक महकमे में हड़कंप मचा हुआ है।आयुष मंत्री के गृह जिले वाराणसी में 21 जून (योग दिवस) के सफल आयोजन के लिए एक करोड़ 52 लाख रुपये जारी किया गया। इसके लिए क्षेत्रीय आयुर्वेदिक और यूनानी विभाग को नोडल बनाकर टी शर्ट, मैट, नाव सहित योग दिवस के आयोजन को सफल करने के लिए अन्य व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी दी गई।आननफानन टेंडर को रद्द किया गया विभाग ने ई टेंडर के जरिए इसकी निविदा जारी की, मगर टेंडर से पहले ही सामानों की खरीद का रेट खोल दिया। इतना ही नहीं, निविदा में शामिल सबसे कम कीमत वाले ठेकेदारों को नजरअंदाज करते हुए सबसे ऊंची बोली लगाने वाली कंपनी को टेंडर में चयनित करते हुए प्रक्रिया शुरू करा दी गई। हालांकि इसकी जानकारी प्रशासनिक महकमे में होने पर हड़कंप मच गया और आननफानन टेंडर को रद्द कर दिया गया। इसके बाद जिलाधिकारी कौशल राज शर्मा ने कमेटी गठित कर योग दिवस के लिए आवश्यक सामानों व व्यवस्थाओं को बाजार भाव पर उपलब्ध कराया।दो दिन में बनानी पड़ी पूरी व्यवस्था निविदा में गड़बड़ी के बाद कमेटी के जरिए खरीद कराने में प्रशासन को कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। कारण, 15 जून को जारी निविदा को 16 जून को निरस्त किया गया और टीम के पास खरीद के लिए महज 18 और 19 जून का समय बचा था। जबकि वर्क आर्डर जारी करने के बाद तीन दिन का समय दिया जाना जरूरी होता है। यही कारण है कि प्रशासन ने योग दिवस के सफल आयोजन के लिए बाजार रेट पर खरीद कराई। इसके लिए अपर जिलाधिकारी नगर, कोषागार अधिकारी सहित चार अन्य विभागों के अधिकारियों की संयुक्त टीम की निगरानी में सामानों की खरीद कराई गई। शासन को भेजी जाएगी रिपोर्ट क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी (वाराणसी) भावना द्विवेदी ने कहा कि तकनीकी गड़बड़ी के चलते निविदा में लो एस्ट वन की बजाय हाई एस्ट वन को टेंडर हो गया था। इसके बाद जिलाधिकारी की विशेष अनुमति पर टीम की निगरानी में मार्केट रेट पर सामानों की खरीद कराई। जिलाधिकारी कौशल राज शर्मा ने कहा कि योग दिवस के आयोजन में सामानों की खरीद व अन्य व्यवस्थाओं के लिए निविदा में गड़बड़ी की शिकायत मिली थी।

# प्रदर्शनकारियों की गिरफ्तारी को दबिश दे रही पुलिस की अलग अलग टीमें, अबतक 27 जेल में

**वाराणसी ।** बीते 17 जून को अग्निपथ योजना के खिलाफ सेना की तैयारी करने वाले युवाओं ने वाराणसी में जमकर उपद्रव किया था। जैतपुरा, कैंट और सिगरा थाने की पुलिस ने कुल 27 उपद्रवियों को गिरफ्तार किया है। अग्निपथ योजना के विरोध में वाराणसी कैंट

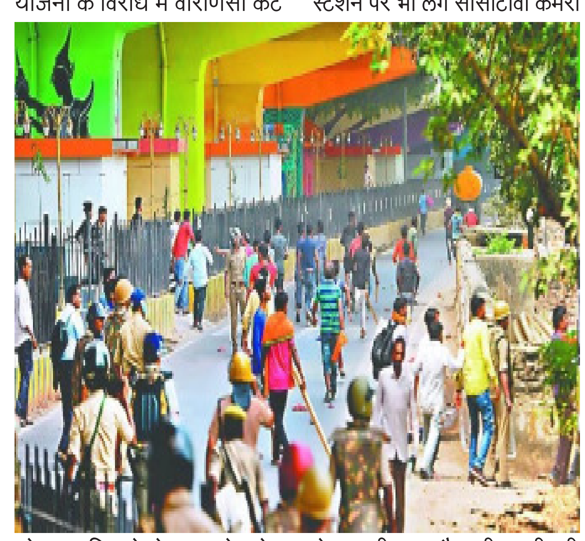

स्टेशन सहित रोडवेज पर तोड़फोड़ आगजनी के मामले में प्रदर्शनकारियों को पुलिस चिह्नित कर रही है। कैंट, सिगरा, जैतपुरा में दर्ज मुकदमों में पुलिस की अलग-अलग टीमें प्रदर्शनकारियों के घरों और संबंधित जिलों के पुलिस से संपर्क कर रही हैं।वहीं, प्रदर्शन को हवा देने के आरोप में काशी विद्यापीठ के पूर्व छात्रसंघ उपाध्यक्ष राहुल राज की गिरफ्तारी को लेकर कैंट पुलिस की दबिश लगातार जारी है। घौसाबाद और लक्षीपुरा स्थित पूर्व छात्र नेता के ठिकानों पर पुलिस ने मंगलवार को भी दबिश दी। उसके परिजनों और करीबियों से भी पुलिस पूछताछ कर रही है उधर, कैंट स्टेशन पर भी लगे सीसीटीवी कैमरों से आरपीएफ और जीआरपी भी प्रदर्शनकारियों के बारे में जानकारियां जुटा रही है। वीडियो और सीसीटीवी फुटेज को आरपीएफ व जीआरपी खंगाल रही है। जैतपुरा, कैंट और सिगरा थाने की पुलिस ने कुल 27 उपद्रवियों को गिरफ्तार किया। सभी जिला जेल में बंद है। आरोपियों से पूछताछ में कई नाम और उजागर हुए, जो बवाल में शामिल थे। एडीसीपी वरुणा जोन प्रबल प्रताप सिंह के अनुसार उपद्रव मामले में वांछित राहुल राज की गिरफ्तारी को लेकर टीमें दबिश दे रही हैं। अलीगढ़ मामले में बीएचयू छात्र को क्लीन चिट बीएचयू के ब्रोचा हॉस्टल में रहने वाले विपिन को अलीगढ़ की टप्पल थाने की पुलिस ने क्लीन चिट दे दी है। अलीगढ़ के घांघौली निवासी विपिन के इस प्रकरण में एसएसपी कलानिधि नैथानी के निर्देश पर विवेचना टीम ने जांच पड़ताल के बाद क्लीन चिट दी टप्पल पुलिस की तफ्तीश में सामने आया कि विपिन नाम के दो युवक गांव से नामजद हैं। चूंकि यह नाम ग्रामीणों से बातचीत के आधार पर निकाले गए थे। कुछ ग्रामीणों ने आपसी रंजिश में ये नाम लिखवा दिया था। अग्निपथ के विरोध को लेकर टप्पल में हुए बवाल के बाद पुलिस ने कइयों को नामजद किया है।उसमें ही विपिन को नामजद कर दिया गया, जबकि विपिन मई से ही बीएचयू के ब्रोचा हॉस्टल में है। घर पर पुलिस की दबिश के बाद छात्र विपिन को इसकी जानकारी हुई और तब चीफ प्रॉक्टर प्रो. अभिमन्यु सिंह ने इस प्रकरण से एसीपी भेलूपुर प्रवीण कुमार सिंह को अवगत कराते हुए अलीगढ़ पुलिस से भी वार्ता की। इसके बाद पुलिस ने सत्यता जानने के बाद विपिन का नाम मुकदमे से हटाया।

# वाराणसी में फिर से तीखी धूप में तपने लगे लोग, तीन-चार दिन बाद बारिश के आसार

**वाराणसी ।** में बारिश के बाद मौसम में तेजी से बदलाव हुआ है। मंगलवार से सूरज की तल्खी बढ़ गई है। उमस और गर्मी का प्रकोप बढ़ने लगा है। इस सप्ताह दो दिन से रुक-रुक कर हुई बारिश के बाद मौसम में तेजी से बदलाव हुआ। नम हवाओं के चलने की वजह से दिन में धूप का असर भी कम हो सेल्सियस रहा। सोमवार की तुलना में मंगलवार को दिन में हवा की रफ्तार तो कम रही लेकिन धूप अधिक होने से लोग इससे बचाव करते दिखे। यहीं कारण रहा कि अधिकतम और न्यूनतम तापमान दोनों में बढ़ोत्तरी दर्ज की गई। मंगलवार को सुबह तो मौसम साफ रहा लेकिन 10 बजे के बाद

गया था। इस बीच मंगलवार को सूरज की तपिश अधिक रही। बुधवार सुबह से सूरज के तेवर में तल्खी है। वहीं हवा बेहद हल्की-हल्की बह रही है। जो गर्मी से राहत देने के लिए नाकाफी है। तापमान की अगर बात करें तो सोमवार को अधिकतम तापमान 38.6 डिग्री सेल्सियस की तुलना में मंगलवार को 36.2 डिग्री से ही धूप बहुत तेज होने लगी। दोपहर में तो ऐसी धूप थी कि अधिकांश लोग छाता लगाकर और सिर को ढककर चलते रहे। अब हर कोई मानसून के आने का इंतजार कर रहा है। बीएचयू के मौसम वैज्ञानिक एसएन पांडेय ने बताया कि इसी सप्ताह शनिवार से पहले तक मानसून के जिले में दस्तक की संभावना है।

# योग से शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है-रामाश्रय पाण्डेय मंडल रेल प्रबंधक.......

(आधुनिक समाचार सेवा)
शीतल निर्भीक

**बलिया (वाराणसी)।** 21 जून।आठवें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 21जून (मंगलवार) को कार्मिक विभाग के तत्वधान में वाराणसी मंडल एवं मंडल के प्रमुख स्टेशनों, प्रशिक्षण केन्द्रों तथा डीजल लॉबी में योगा फॉर ह्यूमेन्टी थीम के साथ योग के कार्यक्रम

आयोजित किये गये। वाराणसी मंडल के लहरतारा स्थित अधिकारी क्लब के बैडमिन्टन कोर्ट में मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय के नेतृत्व में शाखाधिकारियों , वरिष्ठ रेल अधिकारियों एवं उनके परिजनों ने योगाभ्यास किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। बैडमिन्टन हाल में आयोजित योगा फॉर ह्यूमेन्टी थीमङ्ग के साथ राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित योग कार्यक्रम का आभासीय माध्यम से चेनन्ई,कोलकत्ता,मुंबई तथा न्यू दिल्ली के वेबेक्स लिंक से लाइव प्रसारित किया जा रहा था। योगाभ्यास के इस कार्यक्रम में मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर कार्यरत अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवार जनों ने बड़े पैमाने पर भाग लेकर कुशल योग प्रशिक्षकों की देख रेख में योगाभ्यास किया।इस अवसर पर पतंजलि के योगपीठ की प्रशिक्षक डॉ0 प्राची एवं उनकी प्रशिक्षित टीम ने स्वस्थ जीवन के लिए उपयोगी विभिन्न योग विधाओं का डिमांस्ट्रेशन किया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को योग अपनाने की सलाह देते हुए कहा कि योग से शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है और व्यक्ति तनावमुक्त होकर अपने कार्यों को सम्पादित करता है। वर्तमान परिवेश में योग को आवश्यक बताते हुये उन्होंने कहा कि रेलकर्मी योग को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाकर अपने को शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रखते हुये निर्बाध रेल संचलन में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें। इसके अतिरिक्त न्यू लोको कालोनी में स्थित इन्द्रप्रस्थ सामुदायिक हाल में भी योगाभ्यास शिविर लगाकर रेलवे अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने शरीर के विभिनन्न अंगों को सुचारू रूप कार्यशील रखने हेतु प्राणायाम एवं योग के अन्य विधाओं का अभ्यास कराया गया। इस दौरान अशोक कुमार जन सम्पर्क अधिकारी, वाराणसी ने बताया कि इस अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के समारोह का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन मंडल कार्मिक अधिकारी श्री विवेक कुमार मिश्रा ने किया ।वाराणसी मंडल पर स्थित अधिकारी क्लब के अतिरिक्त जोनल ट्रेनिंग सेन्टर गाजीपुर, कोचिंग डिपो बनारस एवं छपरा,डीजल लॉबी मऊ, वाराणसी,गोरखपुर, छपरा तथा रेलवे हास्पिटल वाराणसी, डेमू शेड औड़ीहार, आर.पी.एफ. बैरेक बनारस समेत सभी आर.पी.एफ. पोस्टों, तथा प्रमुख स्टेशनों पर आठवें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का कार्यक्रम बड़े पैमाने पर सम्पनन्न हुआ । योगाभ्यास के दौरान कोविड-19 से बचाव के नियमों का पूरी तरह पालन किया गया ।

# ज्ञानवापी परिसर में सर्वे का आदेश देने वाले जज का बरेली तबादला, कुछ दिन पहले ही मिला था धमकी भरा पत्र

**वाराणसी ।** प्रदेश के विभिन्न जिलों में तैनात कुल 619 न्यायिक अधिकारियों का तबादला किया गया है। इनमें ज्ञानवापी परिसर में सर्वे का आदेश देने वाले वाराणसी के सिविल जज सीनियर डिवीजन रवि कुमार दिवाकर का नाम भी शामिल जज सीनियर डिवीजन रैंक के 121 न्यायिक अधिकारी तथा सिविल जज जूनियर डिवीजन रैंक के 213 न्यायिक अधिकारियों के तबादले में वाराणसी के सिविल जज सीनियर डिवीजन रवि कुमार दिवाकर का नाम भी शामिल है।

है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सोमवार को प्रदेश के विभिनन्न जिलों में तैनात कुल 619 न्यायिक अधिकारियों का तबादला कर दिया है। इस सूची में वाराणसी के कई न्यायिक अधिकारी भी शामिल हैं। ज्ञानवापी परिसर में सर्वे का आदेश देने वाले सिविल जज सीनियर डिवीजन रवि कुमार दिवाकर का तबादला बरेली किया गया है। प्रदेश भर के अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश रैंक के 285 न्यायिक अधिकारी, सिविल कुछ दिन पहले ही उन्हें धमकी भरा पत्र मिला था। पुलिस इस मामले की जांच कर रही है। इलाहाबाद हाईकोर्ट की ओर से जारी तबादला आदेश में स्थानांतरित किए गए सभी न्यायिक अधिकारियों से कहा गया है कि उन्हें हर हाल में चार जुलाई 2022 तक अपना प्रभार सौंपना होगा। इस आशय की अधिसूचना इलाहाबाद हाईकोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल आशीष गर्ग की ओर से सोमवार को जारी की गई है।

# वाराणसी में क्षतिग्रस्त रोडवेज बसों को मरम्मत का इंतजार, चार दिनों में 52 लाख रुपये का नुकसान

**वाराणसी ।** में अग्निपथ योजना के खिलाफ हुए उग्र प्रदर्शन के कारण रोजवेज बसों का संचालन खासा प्रभावित हुआ था। इससे चार दिनों में 52 लाख रुपये का नुकसान हुआ। मंगलवार से रोडवेज बस सेवाएं पटरी लौट गईं।चार दिनों में 52 लाख रुपयों के नुकसान के बाद वाराणसी में रोडवेज बस सेवाएं पटरी लौट गईं हैं। हालांकि क्षतिग्रस्त बसों का मरम्मत न होने पाने की वजह से 22 सिटी बस और 12 परिवहन निगम की बसें परिचालन में शामिल नहीं सकी। बीते 17 जून को अग्निपथ योजना के खिलाफ सेना की तैयारी करने

वाले युवाओं ने जमकर उपद्रव किया था रोडवेज की कई बसों में तोड़फोड़ और आगजनी की घटनाएं हुई थीं। क्षेत्रीय प्रबंधक केके तिवारी ने बताया कि बीते चार दिनों तक बसों के संचालन के प्रभावित होने से चार दिनों में 52 लाख रुपये से अधिक का नुकसान हुआ। इसमें क्षतिग्रस्त और जलाई गई बसें भी शामिल हैं। कांच न मिलने से बसों की मरम्मत में लंबा समय लग सकता है। रोडवेज चेयरमैन ने किया निरीक्षण बसों में तोड़फोड़ और आगजनी की घटना के बाद मंगलवार को परिवहन निगम के चेयरमैन आरके तिवारी बनारस पहुंचे। क्षेत्रीय अधिकारियों के साथ बैठक कर घटना की समीक्षा की। इसके अलावा जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ बैठक कर पीपीपी (पब्लिक प्राइवेट प्रोजेक्ट) के तहत विकसित होने वाले कैंट बस डिपो को लेकर चर्चा की गई।एक नजर में वाराणसी परिक्षेत्र के आठ डिपो का होता है संचालनकुल 12 मार्गों पर 503 बसों का होता है संचालन प्रतिदिन 50 हजार से अधिक यात्री करते हैं सफर रोजाना 10 लाख रुपये के टिकट की होती है बिक्री निगम की 12 और सिटी की 22 बसों में हुई थी तोड़फोड़ और आगजनी अग्निपथ के विरोध के चलते बेपटरी हुई रेल सेवा पटरी पर लौट आई है। इससे यात्रियों ने राहत की सांस ली है। हालांकि सुरक्षा बलों की ओर से चौकसी बढ़ा दी गई है। ट्रेन निरस्त होने के कारण करीब 30 लाख रुपये के टिकट रिफंड किए गए हैं। पूर्वोत्तर रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी के मुताबिक ज्यादातर ट्रेनों का संचालन शुरू हो गया है। हालांकि अभी एहतियातन सुरक्षा बंदोबस्त तगड़े किए गए हैं। ट्रेन संख्या 12562 दिल्ली जयनगर एक्सप्रेस 21 जून को निरस्त है। पांचवें दिन कैंट स्टेशन पर टिकट के लिए लोगों की लंबी कतार देखने को मिली। सुसवाही से दिल्ली के लिए टिकट लेने आए दिपेंद्र ने बताया कि दो घंटे लाइन में खड़ा रहा लेकिन उन्हें वेटिंग टिकट ही मिला है। कैंट स्टेशन के निदेशक आनंद मोहन ने बताया कि करीब 30 लाख रुपये के टिकट रिफंड किए गए हैं। स्टेशन पर सुरक्षा के तगड़े बंदोबस्त हैं। 17 जून को अग्निपथ विरोध के चलते पहले सवारी गाड़ी, स्पेशल ट्रेने निरस्त करने के बाद एक्सप्रेस ट्रेनों को निरस्त करने का फैसला रेलवे प्रशासन ने लिया था। अग्निपथ के विरोध में कैंट स्टेशन सहित रोडवेज पर तोड़फोड़ आगजनी के मामले में प्रदर्शनकारियों को पुलिस चिह्नित कर रही है। कैंट, सिगरा, जैतपुरा में दर्ज मुकदमों में पुलिस की अलग-अलग टीमें प्रदर्शनकारियों के घरों और संबंधित जिलों के पुलिस से संपर्क कर रही हैं। वहीं, प्रदर्शन को हवा देने के आरोप में काशी विद्यापीठ के पूर्व छात्रसंघ उपाध्यक्ष राहुल राज की गिरफ्तारी को लेकर कैंट पुलिस की दबिश लगातार जारी है। घौसाबाद और लक्षीपुरा स्थित पूर्व छात्र नेता के ठिकानों पर पुलिस ने मंगलवार को भी दबिश दी। उसके परिजनों और करीबियों से भी पुलिस पूछताछ कर रही है। उधर, कैंट स्टेशन पर भी लगे सीसीटीवी कैमरों से आरपीएफ और जीआरपी भी प्रदर्शनकारियों के बारे में जानकारियां जुटा रही है। वीडियो और सीसीटीवी फुटेज को आरपीएफ व जीआरपी खंगाल रही है। जैतपुरा, कैंट और सिगरा थाने की पुलिस ने कुल 27 उपद्रवियों को गिरफ्तार किया। सभी जिला जेल में बंद है। आरोपियों से पूछताछ में कई नाम और उजागर हुए, जो बवाल में शामिल थे। एडीसीपी वरुणा जोन प्रबल प्रताप सिंह के अनुसार उपद्रव मामले में वांछित राहुल राज की गिरफ्तारी को लेकर टीमें दबिश दे रही हैं।

# पिता और भाई की हत्या कर थाने पहुंचा, बोला मैंने ही दोनों को मारा, परिवार में मचा कोहराम.............

**आजमगढ़।** इस घटना से परिवार में कोहराम मचा है। पुलिस जांच में जुटी है। एसओ संजय कुमार का कहना है कि आरोपी हिरासत में है, पूछताछ जारी है। कप्तानगंज थाना क्षेत्र के धनधारी गांव में मंगलवार रात 8:30 बजे एक युवक ने अपने पिता व छोटे भाई को गोली मार दी। परिवार की एक महिला भी गोली लगने से घायल हो गई। तीनों को इलाज के लिए जिला अस्पताल लाया गया। जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद पिता-पुत्र को मृत घोषित कर दिया। घटना को अंजाम देने के बाद आरोपी कप्तानगंज थाने पहुंच गया और खुद को पुलिस के हवाले कर दिया। घटना के पीछे पारिवारिक विवाद बताया जा रहा है। धनधारी गांव निवासी मनोज कुमार सिंह की मंगलवार रात 8:30 बजे पिता शिव नारायण सिंह व छोटे भाई मनीष कुमार सिंह से किसी बात को लेकर कहासुनी

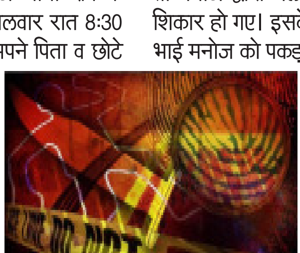

हो गई। इस दौरान मनोज ने छोटे भाई मनीष को गोली मार देने की धमकी दी और असलहा निकाल लिया। बीच-बचाव में पिता शिवनारायण आगे आए तो मनोज द्वारा चलाई गई गोली का शिकार हो गए। इसके बाद मनीष बड़े भाई मनोज को पकड़ने के लिए झपटा तो मनोज ने मनीष पर गोली चला दी। मनीष के साथ परिवार की महिला अवधराजी को भी गोली लग गई। घटना को अंजाम देने के बाद मनोज सीधे कप्तानगंज थाने पर पहुंचा और पुलिस को घटना की जानकारी देने के साथ ही खुद को उनके हवाले कर दिया। इधर, ग्रामीण तीनों घायलों को लेकर सीएससी रानीपुर पहुंचे। जहां डॉक्टरों ने हालत गंभीर देखते हुए पिता-पुत्र व महिला को जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

# 15 दिनों तक आजमगढ़ को मथने के बाद विदा हुए दिग्गज, चुनाव कल

**आजमगढ़।** में लोकसभा उपचुनाव के लिए मंगलवार की शाम पांच बजे जैसे ही चुनाव प्रचार बंद हुआ सारे दिग्गज प्रचारक अपने क्षेत्रों को रवाना हो गए। आजमगढ़ लोकसभा उप चुनाव का नामांकन छह जून को संपनन्न होने के बाद जिले में पार्टी के दिग्गज प्रचारकों की फौज उमड़ पड़ी। इनके द्वारा 15 दिनों तक जिले में रहकर पार्टी प्रत्याशी के पक्ष में जमकर प्रचार किया गया। लेकिन मंगलवार की शाम पांच बजे जैसे ही चुनाव प्रचार बंद हुआ सारे दिग्गज प्रचारक अपने क्षेत्रों को रवाना हो गए। सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव के इस्तीफे के बाद रिक्त हुई आजमगढ़ लोकसभा सीट के उपचुनाव के लिए छह जून को नामांकन का कार्य संपनन्न हुआ। इसके बाद सपा और भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में हवा बनाने के लिए दिग्गज नेताओं का जमावड़ा हो गया। इन दिग्गजों द्वारा 15 दिन तक जनपद में रह कर अपने प्रत्याशी के पक्ष में हवा बनाई गई। चुनाव प्रचार के लिए नहीं पहुंचे अखिलेश यादव सीएम योगी आदित्यनाथ और डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य भी दिनेश लाल यादव निरहुआ के पक्ष में लोगों से जन समर्थन मांगने के लिए जनपद आए। सपा प्रत्याशी के पक्ष में हवा बनाने के लिए दिग्गज नेता आजम खां और स्वामी प्रसाद मौर्य भी जनपद आए। हालांकि इस दौरान सपा सुप्रीमो के चुनाव प्रचार के लिए जनपद न आने को लेकर सवाल उठते रहे। विपक्षियों द्वारा इसे लेकर पोलिंग पाटियां सपा मुखिया अखिलेश यादव के आजमगढ़ सदर संसदीय सीट से इस्तीफा देने के बाद खाली हुई सीट पर उप चुनाव 23 जून को होना है। इसे लेकर प्रशासन ने तैयारियां पूरी कर ली है। मतदान कराने के लिए सोमवार यानी आज जिले पांच विधानसभाओं

व्यंग भी कसा गया। लेकिन मंगलवार की शाम पांच बजे चुनाव प्रचार की समाप्ति के बाद अपने गंतव्य को रवाना हो गए। अब सबको 23 जून को मतदान और 26 जून को होने वाली मतगणना का इंतजार है। मतगणना के बाद ही पता चलेगा कि आजमगढ़ की जनता ने किसको अपना नया सांसद चुना है। आज रवाना होंगी की पोलिंग पाटियां तीन डिस्पैच स्थलों से रवाना होंगी। इसके साथ में पुलिस बल भी रवाना होंगे तथा उनके लिए जो भी व्यवस्थाएं अपेक्षित हैं, सारी व्यवस्थाएं पूर्ण हो गई हैं। मतदान के बाद 26 जून को प्रत्याशियों का परिणाम आएगा। चुनाव की तैयारियों को लेकर जिला प्रशासन रवानगी स्थल पर पहुंचकर तैयारियों का जायजा भी ले रहा है।

# वुशू खिलाड़ियों ने जीता जिले के लिए पदक

(आधुनिक समाचार सेवा)
शुभम मोदनवाल

**दिलदारनगर (गाजीपुर)।** छेत्र के भक्सी गाँव स्थित स्पोर्ट्स एकेडमी के तीन वुशू खिलाड़ियों ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में पदक जीत कर जिले का नाम रौशन किया है । विगत 16 से 18 जून तक मेरठ जिले के खेलों इंडिया वुशू केंद्र में आयोजित 22वीं प्रदेश स्तरीय सब जूनियर वुशू प्रतियोगिता में सरैला गाँव के सादिक खांन ने 36किग्रा में फाइनल तक का सफर पूरा किया व रजत पदक जीतने मव सफल रहे । भक्सी निवासी दरक्सा खातून ने 42किग्रा बालिका भार वर्ग में और इसी गाँव के इरफान खांन ने 30किग्रा भार वर्ग में काश्य पदक जीतकर वुशू खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बन गए हैं । जिले में धीरे धीरे मजबूत होते वुशू खिलाड़ियों की टीम के लिए यह जीत संजीविनी का कार्य करेगी । गाजीपुर वुशू एसोसिएशन के अध्यक्ष अमित कुमार सिंह ने इस उपलब्धि आगामी जूनियर, यूथ और सीनियर प्रतियोगिताओं के लिए तैयारी कर रहे खिलाड़ियों का आत्म विश्वाश बढ़ाने का कार्य किया है । जल्द ही जिला संघ

का पूरा श्रेय वुशू टीम कोच मुहम्मद अजहर खांन और टीम मैनेजर सरताज खांन बताया कि गाजीपुर के इन नंन्हे वुशू खिलाड़ियों ने की वार्षिक साधारण सभा की बैठक आहूत होने वाली है, जिसमे उक्त पदक विजेता खिलाड़ियों को संम्मानित किया जाएगा ।

# सोनभद्र में शादी समारोह में हर्ष फायरिंग गोली लगने से सेना के जवान की मौत लाइसेंसी पिस्टल भी गायब...............

**सोनभद्र ।** बीती देर रात शादी समारोह में हुई हर्ष फायरिंग में सेना के जवान की मौत हो गई। रॉबर्ट्सगंज थाना क्षेत्र के महुआरी-तेंदू निवासी सेना का जवान बाबूलाल यादव (35) हाल ही में छुट्टी पर घर आया था। राबर्ट्सगंज (सोनभद्र) में दिल को दहला देने वाली घटना सामने आई है। यहां शादी समारोह के दौरान हर्ष फायरिंग में चली गोली सेना के जवान को लग गई। जिससे उसकी मौत हो गई। घटना की जानकारी होने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर मोर्चरी में रखवा दिया। एएसपी विनोद कुमार विनोद कुमार, सीओ राजकुमार तिवारी, कोतवाल दिनेश प्रकाश पांडेय ने मौके पर पहुंचकर घटना के बारे में लोगों से जानकारी ली। मृतक सेना में कार्यरत था। उसकी लाइसेंसी पिस्टल भी गायब है । पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

राबर्ट्सगंज ब्रह्मनगर स्थित एक मैरेज हॉल में मंगलवार की रात बरात आई थी। इसमें शामिल होने के लिए रॉबर्ट्सगंज थाना क्षेत्र के महुआरी-तेंदू निवासी बाबूलाल यादव (35) पुत्र दयाराम यादव भी आया था। आरोप है कि समारोह के दौरान कुछ लोग हर्ष फायरिंग कर रहे थे। इस दौरान बाबूलाल फायरिंग की जद में आ गया। जिसके बाद वहां अफरा-तफरी मच गई। सेना का जवान बाबू लाल कुछ दिनों पूर्व छुट्टी पर अपने घर आया था। गंभीर रूप से घायल बाबूलाल को जिला अस्पताल लाया गया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। इसके बाद साथ आए लोग वहां से फरार हो गए। डॉक्टर के मुताबिक मृतक के चेहरे पर गन शॉट के निशान हैं। तलाशी के दौरान आर्मी के जवान का लाइसेंसी पिस्टल भी गायब था। उधर, एएसपी विनोद कुमार, सीओ सिटी राजकुमार तिवारी, कोतवाल दिनेश पांडेय, कस्बा चौकी प्रभारी संजय सिंह ब्रह्मनगर शादी मंडप पहुंचकर जांच पड़ताल की। पुलिस बुधवार सुबह अस्पताल में लगे सीसीटीवी कैमरे से शव अस्पताल लाने वालों की पहचान करने में जुटी है। पुलिस कई एंगल से जांच कर रही है।कोतवाल का कहना है कि मृतक के परिवार के लोग अस्पताल पहुंच गए हैं। घटना की हर बिंदु पर जांच की जा रही है। जल्द ही गोली कैसे चली इसका खुलासा हो जाएगा। इस खौफनाक घटना से पलभर में शादी की खुशियां मातम में बदल गई। बाबूलाल की मौत से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।

# सिंचाई विभाग की मनमानी से हर साल बारिश में डूब जाते हैं खेत

**सोनभद्र ।**शाहगंज राजवाहा के किमी 16.8 पर निकाले गए साइफन को पूर्व की तरह स्थापित करने की मांग को लेकर किसानों का प्रतिनिधिमंडल मंगलवार को डीएम से मिला। किसानों ने सिंचाई विभाग पर मनमानी का आरोप लगाया। फसल बचाने के लिए बारिश से पहले तत्काल पूर्व की तरह साइफन लगवाने की मांग की। प्रतिनिधिमंडल में शामिल किसानों ने बताया कि शाहगंज राजवाहा के निर्माण के समय ही किमी 16.8 पर साइफन लगाया गया था। इसके जरिए परासी दुबे, अधवार, ऊंचडीह गांवों का पानी नहर होते हुए आगे निकल जाता था। वर्ष 2017 में नहर की सफाई के दौरान मनमाने ढंग से साइफन निकाल दिया गया। इसके बाद से खेतों का स्वरूप बदल गया। बारिश होने पर तीनों गांवों में करीब 40 बीघा भूमि हर सीजन में जलमगन हो जाती है। 17 परिवारों के दो सौ से अधिक लोग लंबे समय से इस संकट से जूझ रहे हैं। इस बारे में कई बार शिकायत की गई। पूर्व में एडीएम योगेंद्र बहादुर सिंह ने मौके पर जांच कर विवाद सुलझाते हुए साइफन लगवाने का निर्देश देते हुए टीम भी गठित की, लेकिन दूसरी तरफ के प्रभावशाली लोगों के चलते सिंचाई विभाग के अफसर मामले को टालते जा रहे हैं। इस बार खरीफ की खेती का दौर शुरू हो गया है। मानसून आने वाला है। ऐसे में समय रहत साइफन नहीं लगवाया जाता तो फिर से उनकी खेती चौपट हो जाएगी। उन्होंने सिंचाई विभाग के जिम्मेदार अफसरों के कार्यप्रणाली की जांच की भी मांग की। डीएम चंद्र विजय सिंह ने किसानों को समस्या के शीघ्र समाधान का आश्वासन दिया। ज्ञापन सौंपने वालों में अरुण कुमार शुक्ला, श्यामजी द्विवेदी, नित्यानंद द्विवेदी, श्याम सुंदर, दिनेश, विनय, सुभाष, रामगोपाल, शशिकांत पांडेय, शिवनाथ यादव आदि शामिल रहे।

# ड्रेस न खरीदने पर शिक्षकों के बजाय अभिभावकों की तय हो जिम्मेदारी...............

**सोनभद्र ।** उत्तर प्रदेश प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ जिला इकाई का प्रतिनिधिमंडल मंगलवार को बीएसए से मिला। पांच सूत्री ज्ञापन सौंपते हुए शिक्षकों से जुड़ी सभी समस्याओं का शीघ्र समाधान कराने की मांग की। प्रतिनिधिमंडल ने निदेशालय की ओर से जारी नए निर्देशों पर कड़ी आपत्ति जताई। उनका कहना था कि काफी संख्या में अभिभावकों ने भुगतान होने के बावजूद बच्चों का ड्रेस नहीं खरीदा है। ऐसे में विभाग की ओर से शिक्षकों की जिम्मेदारी तय करने की बात कही जा रही है। इससे शिक्षक मानसिक रूप से दबाव में जी रहे हैं। ड्रेस मामले में शिक्षकों के बजाय अभिभावकों की जिम्मेदारी तय की जानी चाहिए। जिले में ब्लॉक स्थानांतरण व गैर जनपद स्थानांतरण करने का भी मुद्दा उठाया। परिषदीय विद्यालयों में सहायक अध्यापक के रूप में पांच वर्ष सेवा दे चुके अध्यापकों को प्राथमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में सहायक अध्यापक के पद पर पदोनन्त करने की मांग की। इस मौके पर इन्दु सिंह, वृजबाला, साधना सारंग, ददन सिंह, कृष्णकांत, राज मौर्या, यसपाल, रमेश, अमित, धमेंद्र सिंह, राज बहादुर, राजप्रताप सहित अन्य मौजूद रहे।

# बहकावे में न आएं, सभी पात्रों को मिलेगा मालिकाना हक : विधायक

**सोनभद्र ।**कोन ब्लाक सभागार में वनाधिकार कानून के तहत आदिवासियों को हक दिलाने के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन मंगलवार को किया गया। मुख्य अतिथि सदर विधायक भूपेश चौबे ने कहा कि भाजपा सरकार में सभी जाति धर्म के लोगों को सम्मान व अधिकार मिल रहा है। उन्होंने कहा कि वनाधिकार कानून की लड़ाई के लिए जनजाति व वन क्षेत्र रहने वाले लोग अपनी पूरी जिंदगी बीता दी लेकिन किसी सरकार ने आजतक मालिकाना हक नहीं दिया। कहा कि भाजपा सरकार में जैसे ही यह जानकारी उन्हें हुई वह और आनंद जी ने मुख्यमंत्री योगी व राज्यपाल से हक दिलाने के लिए कई बार बैठक की। इसका सारा श्रेय आनंद जी को जाता है। उन्होंने क्षेत्र में कार्य कर आदिवासियों की दर्द नजदीक से महसूस किया है और निस्वार्थ भाव से वन क्षेत्र के लोगों को अधिकार दिलाने के लिए मेहनत किया जिसका परिणाम यह है कि आज आपके द्वारा सरकार आयी है और उसके समाधान के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया है। कार्यशाला में एसडीएम ओबरा रमेश कुमार ने लोगों को जंगल की जमीन के बारे में जानकारी दी। सीडीओ सौरभ गंगवार ने भी उपस्थित लोगों को विस्तृत जानकारी दी। इस कार्यशाला में वन विभाग व राजस्व विभाग के मौजूद लोगों ने वन समिति के लोगों को वनाधिकार कानून की जानकारी दी। ब्लाक प्रमुख रूबी मिश्रा, बीडीओ मो. तारिक, डीसी मनरेगा, कमलेश कुंअर, राकेश, अलख शुक्ला, प्रधान संतोष कुमार, विनोद कुमार, शोभनाथ, शारदा पासवान आदि उपस्थित रहे।

# राहुल गांधी के समर्थन में गरजे कांग्रेसी, सदर तहसील और ब्लॉक पर प्रदर्शन किया

**सोनभद्र ।** प्रवर्तन निदेशालय की ओर से पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी को अनावश्यक रूप से परेशान करने का आरोप लगाते हुए मंगलवार को कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सदर ब्लॉक पर धरना दिया। आरोप लगाया कि मोदी सरकार गांधी परिवार को बदनाम करने के लिए ईडी का इस्तेमाल कर रही है। कांग्रेस नेता निगम मिश्रा ने कहा कि मोदी सरकार ने गांधी परिवार को बदनाम करने की नियत से ईडी को दबाव देकर समन भेजवाया। राहुल गांधी से जिस तरीके से 13-13 घंटे पूछताछ करना सरासर गलत और संविधान विरोधी है। ब्लॉक अध्यक्ष सदर अमरेश देव पांडे ने कहा कि राहुल गांधी को शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताडि.त कर उनकी छवि को जनमानस के बीच में धूमिल करने का वर्तमान सरकार द्वारा कुत्सित प्रयास किया जा रहा। ब्लॉक अध्यक्ष करमा बंशीधर देव पांडे ने कहा कि मोदी सरकार सेना में अग्निपथ योजना लाकर देश के नौजवानों और भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही है। मोदी सरकार ज्वलंत मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपना रही है जिससे देशवासियों का ध्यान कहीं और चला जाए। ब्लॉक अध्यक्ष नगवां रामविलास पनिका ने कहा कि मोदी सरकार अपनी असफलताओं को छुपाने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपना रही है। शहर अध्यक्ष राजीव त्रिपाठी ने कहा कि भाजपा सरकार के इशारे पर दिल्ली में कांग्रेसी कार्यकर्ताओं पर दिल्ली पुलिस ने बर्बरतापूर्वक व्यवहार किया जो गैरकानूनी और घोर निंदनीय है। मोदी सरकार कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को रोकने के लिए कोई भी उपाय कर लें, लेकिन कांग्रेसी कार्यकर्ता रुकेंगे नहीं। इस दौरान विजय शंकर पांडे, धीरेंद्र पांडे, दशरथ देव, मनोज सिंह, दरोगा यादव, संजय बिंद, विमलेश कुमार, श्रीकांत देव, ओम प्रकाश, बृजभूषण, विजय पटेल, शीतला सिंह पटेल, कमलेश पटेल, अंबुज कुमार, आशीष शुक्ला, शिव प्रसाद यादव शिव मुनि आदि उपस्थित रहे ।

# स्थाई जगह मिले तो फुटपाथ पर क्यों लगाएं दुकान......

**सोनभद्र ।** पुलिस लाइन चुर्क में मंगलवार को व्यापारिक सुरक्षा प्रकोष्ठ की बैठक डीआईजी/एसपी अमरेंद्र प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में हुई। इस दौरान व्यापारियों ने फुटपाथ और ठेला व्यवसायियों को स्थायी स्थान मुहैया कराने और जिन दुकानदारों के सामने नालियों पर बनी सीढि.यों के नीचे आसानी से साफ-सफाई हो जाती है उन्हें न तोड़ने की भी मांग की। अपर पुलिस अधीक्षक विनोद कुमार ने बताया इस पर व्यापारियों ने कहा कि सरकार ने सड़कों की पटरियों से अतिक्रमण हटाने के लिए निर्देशित किया है। उन्होंने व्यापारियों से अतिक्रमण न करने की अपील की। व्यापारियों ने कहा कि फुटपाथ पर दुकान लगाने वालों को गलियों में भेज कर मान लिया गया कि उन्हें जगह दे दिया गया है। व्यापार मंडल ने मांग किया कि नगरपालिका के साथ मिलकर फुटपाथ पर रहने वाले व्यवसायियों को एक स्थायी जगह दिया जाए जिससे वह अपने भरण-पोषण की व्यवस्था कर सकें। नगर में बढ़ रही चोरियों पर भी रोक लगाने की मांग की। साइबर क्राइम के इंचार्ज सरोजना सिंह ने व्यापारियों को साइबर अपराध के बारे में जानकारी देते हुए उससे बचने के बारे में जानकारी दी। बैठक में उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के जिला अध्यक्ष रतनलाल गर्ग, जिला महामंत्री विमल अग्रवाल, जिला कोषाध्यक्ष चंदन अग्रवाल, नगर अध्यक्ष कौशल शर्मा, नगर महामंत्री चंदन केसरी, जिला उपाध्यक्ष मिठाई लाल सोनी, मोहनलाल केसरी, राधेश्याम बंका, रामेश्वर दास समेत अन्य व्यापारी मौजूद रहे।

# डीएवी पब्लिक स्कूल खडिया में आज आठवां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया

(आधुनिक समाचार सेवा)
अश्विनी कुमार ठाकुर

**सोनभद्र ।** डीएवी पब्लिक स्कूल खड.िया में आज आठवां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती संध्या एल पांडे जी ने अपने संबोधन के दौरान योग की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि योग एक कला के साथ विज्ञान भी है जो शरीर, मन आत्मा और ब्रहमांड को एक जुट बनाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साथ ही साथ उन्होंने इस बात पर विशेष जोर देते हुए कहा कि योग भारत की विरासत भी है जो आज पूरी दुनिया में लोकप्रिय हो चुका है अंत में योग की महत्ता को निष्कर्ष रूप में स्वीकारते हुए बताया कि (जो करें योग उनके भागे रोग) तदुपरांत कक्षा तीसरी से लेकर 12वीं तक के सभी छात्रों तथा प्राचार्या सहित सभी अध्यापक अध्यापिकाओ ने पी ई टी आरडी प्रसाद एवं अल्पना शर्मा के निर्देशन में ताड़ासन, वृक्षासन, त्रिकोणासन, भुजंगासन, शलभासन, पद्मासन, वज्रासन, पर्वतासन, पवनमुक्तासन, नौकासन, चक्रासन एवं हलासन कर इसके लाभ से भी अवगत हुए त्अंत में अनुलोम विलोम एवं ध्यान मुद्रा के साथ कार्यक्रम संपनन हुआ साथ ही साथ स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत कक्षा छठी से लेकर 12वीं तक के छात्रों ने स्वच्छता प्रतिज्ञा लेकर अपने आसपास एवं वातावरण को स्वच्छ बनाए रखने की प्रतिज्ञा ली कार्यक्रम सफल कथा सराहनीय रहा ।

# मारकुंडी के प्रधान ने पुलिस लगाई मदद की गुहार........

**सोनभद्र ।** चोपन थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत मारकुंडी के ओबरी टोले में मंगलवार की सुबह किसी कागजात पर हस्ताक्षर को लेकर उपजे विवाद में कुछ लोगों ने ग्राम प्रधान के साथ मारपीट की। घटना से नाराज ग्राम प्रधान ने ग्रामीणों के साथ चोपन थाने पहुंच कर पुलिस को ग्राम रोजगार सेवक समेत कई लोगों के खिलाफ तहरीर दी। ओबरी टोले में मंगलवार की सुबह करीब नौ बजे ग्राम प्रधान और ग्राम रोजगार सेवक समेत अन्य लोगों से कहासुनी शुरू हो गई। देखते ही देखते मामला मारपीट में तब्दील हो गया। ग्राम प्रधान उधम सिंह यादव ने बताया कि टोला ओबरी में रोजगार सेवक द्वारा सादे कागजात पर प्रधान के नाम पर ग्रामीणों से जबरिया हस्ताक्षर करा रहा था। इसकी जानकारी होने पर वह मौके पर पहुंचा। हस्ताक्षर के बाबत पूछने पर रोजगार सेवक, उसके भाइयों व सहयोगी गाली-गलौज करते हुए मारपीट करने लगे। शोर सुनकर आसपास के लोग एकत्र हुए तो विपक्षीगण जान से मारने की धमकी देते हुए फरार हो गए। घटना से नाराज ग्राम प्रधान कुछ समर्थकों के साथ थाने पर पहुंच कर घटना की लिखित तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की। उधर रोजगार सेवक ने भी ग्राम प्रधान पर मारपीट कर घायल करने और रुपये छीनने का भी आरोप लगाया है। इस संबंध में चोपन थानाध्यक्ष का कहना है कि मामले की जांच करने के साथ ही मारपीट में शामिल लोगों की तलाश की जा रही है।

# घेराबंदी कर पुलिस ने सात मवेशियों को कराया मुक्त एक तस्कर गिरफ्तार...

**सोनभद्र ।**पन्नुगंज थाना क्षेत्र के पकरहट गांव के समीप मंगलवार को घेराबंदी कर पुलिस ने एक पशु तस्कर को गिरफ्तार करते हुए उसके कब्जे से सात मवेशियों को मुक्त कराया। आरोपी के खिलाफ गौवध अधिनियम समेत अन्य धाराओं में केस दर्ज कर चालान कर दिया गया मंगलवार की सुबह लगभग छह बजे मुखबिर के जरिए पुलिस को सूचना मिली कि एक पशु तस्कर कुछ मवेशियों को वध के लिए बिहार की तरफ लेकर जा रहा है। सूचना को गंभीरता से लेते हुए फोर्स के साथ उप निरीक्षक आशीष सिंह ने पकरहट गांव के समीप कर्मनाशा नदी के पास घेराबंदी कर मवेशियों को लेकर जा रही पिकअप को पकड़ लिया। पिकअप की तलाशी लेने पर उसमें सात गोवंश मिले। इसी बीच मौके का फायदा उठाकर एक तस्कर फरार हो गया जबकि एक आरोपी पकड़ा गया। थाना प्रभारी राजेश कुमार सिंह ने बताया कि पकड़े गए ओमप्रकाश खरवार पुत्र विश्वनाथ खरवार निवासी जमुनीनार थाना अधौरा बिहार के खिलाफ पशु क्रूरता सहित अन्य धाराओं में केस दर्ज कर चालान कर दिया गया। कहा कि फरार तस्कर की तलाश की जा रही है।

# सड़क हादसे में अधेड़ घायल

**जिगना।** नरोइया गांव निवासी छोटेलाल सोनकर (55) और उसकी पतनी मुघुना देवी (52) नरोइयां बाजार में सब्जी की दुकान लगाते हैं। सोमवार की देर रात छोटेलाल दुकान बंद कर दोनों घर के लिए चल दिए, जिगना से नरोइया की ओर जा रही बोलेरो ने छोटेलाल को धक्का मार दिया। बाजार वासियों ने एंबुलेंस से उसे अस्पताल भेजा। जहां चिकित्सक ने उपचार के बाद उसे मंडलीय अस्पताल रेफर कर दिया, लेकिन परिजन घायल को लेकर प्रयागराज चले गए। हादसे के बाद चालक बोलेरो लेकर भाग गया।

# तहसील व ब्लाक मुख्यालयों पर मनाया गया योग दिवस

**मिर्जापुर।** अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर तहसील, ब्लाक मुख्यालय सहित स्कूल और कालेजों में अधिकारियों, कर्मचारियों, छात्र-छात्राओं सहित गुरुजनों ने भी मंगलवार को योग कर निरोग रहने का मंत्र लिया। सूर्योदय के साथ ही ऐसे स्थानों पर योग करने वाले उमड़ रहे। सिटी ब्लाक मुख्यालय पर खंड विकास अधिकारी रामदरस चौधरी की अध्यक्षता में योग शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान एडीओ पंचायत रतन कुमार, जेई एमआई उपेंद्र नाथ तिवारी, बीसी विभा बिंद सहित अन्य मौजूद रहे। प्रबोधिनी शक्ति धाम विंध्याचल में महिला प्रबोधिनी फाउंडेशन एवं ब्रह्मशक्ति, इकाई के संयुक्त तत्वावधान में योग दिवस मनाया गया। विश्व प्रसिद्ध हठयोगी पंडित महावली मिश्र के पौत्र एवं प्रसिद्ध योगाचार्य निभय मिश्र के पुत्र विशाल मिश्र ने योगाभ्यास कराया। अखिल भारत रचनात्मक समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष विभूति कुमार मिश्र ने योग की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इस दौरान ब्रह्म शक्ति जिला इकाई अध्यक्ष ऋषि शुक्ला, संतोष तिवारी, महिला प्रबोधिनी फाउंडेशन की अध्यक्ष नंदिनी मिश्रा मौजूद रहीं। जिगनाः गैपुरा पुलिस चौकी, जिगना थाना सहित ब्लाक मुख्यालय पर योग दिवस मनाया गया। इस दौरान बीडीओ छानबे शरद कुमार सिंह, ग्राम प्रधान संघ अध्यक्ष संतोष कुमार तिवारी, गुलाम रसूल, विनोद कुमार यादव आदि शिविर में शामिल हुए। लालगंज स्थानीय तहसील में योग शिविर में उपजिलाधिकारी विजय नारायण सिंह सहित समस्त अधिकारियों और कर्मचारियों ने योग किया। इस दौरान तहसीलदार शशांक शेखर राय, योग शिक्षक सुरेश अग्रहरि रहे। श्रीमती इंदिरा गांधी राजकीय पीजी कॉलेज में क्रीड़ा प्रभारी डॉ. शिवमंगल यादव ने छात्र-छात्राओं को योग कराया। बापू उपरौध इंटरमीडिएट कॉलेज में डॉ. धर्मजीत सिंह, भारती उच्चतर माध्यमिक विद्यालय लालगंज प्रधानाचार्य राजेश दुबे, विजयपुर मान माधव इंटरमीडिएट कॉलेज के सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य रामराज त्रिपाठी, ब्लॉक मुख्यालय परिसर में खंड विकास अधिकारी रामाकांत, विमल कुमार मिश्रा, सौरेह प्राथमिक विद्यालय में सुरेश कुमार दुबे, भाजपा रामशिरोमणि मौर्य आदि ने योग किया। हलियाः ब्लाक, थाना परिसर, स्वास्थ्य केन्द्र, वनरेंज कार्यालय तथा विद्यालयों पर लोगों ने योग शिविर में हिस्सा लिया। ब्लॉक परिसर में बीडीओ विजय कुमार, एडीओ पंचायत अरुण मिश्र सहित थाना परिसर में थानाध्यक्ष अनिल कुमार सिंह, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर डाक्टर अभिषेक जायसवाल, वनरेंज पर वन क्षेत्राधिकारी रामनरायन जैसल सहित सभी ग्राम पंचायतों में ग्राम प्रधानों व विद्यालय पर अध्यापकों व गुरुजनों ने योगाभ्यास किया। राजगढ़ः ब्लाक मुख्यालय, रविंद्रम वाटिका भावा पर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इस अवसर पर ब्लाक प्रमुख गजेंद्र प्रताप सिंह, खंड विकास अधिकारी शैनलेंद्र सिंह, बीईओ रविन्द्र शुक्लु, रजनीकांत, प्रवेश, अजय सोनी, विकास केसरी, पवन सिंह, आशीष कुमार सिंह, अनिल आदि ने भाग लिया। चुनारः अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर किला परेड ग्राउंड पर योग शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उपजिलाधिकारी चुनार नीरज प्रसाद पटेल व विशिष्ट अतिथि के रूप में मेजर कृपा शंकर सिंह व राजदीप महिला महाविद्यालय कैलहट के प्रबंधक ई. राजबहादुर सिंह मौजूद रहे। कार्यक्रम को सफल बनाने में नगर पालिका, भारत विकास परिषद व प्रजापिता ब्रह्माकुमारी आश्रम के सदस्यों ने सहयोग किया। योग शिविर में पालिकाध्यक्ष मंसूर अहमद, तहसीलदार नूपुर सिंह, नायब तहसीलदार अरुण कुमार यादव, अधिशासी अधिकारी राजपति बैस, भारत विकास परिषद के अध्यक्ष अनिल कुमार गुप्ता आदि ने योगाभ्यास किया। सक्तेशगढ़ः मटिहानी एवं नदिहार ग्राम पंचायत में मनरेगा मजदूरों ने योगाभ्यास किया। ग्राम प्रधान नदिहार रविशंकर सिंह, एवं मटिहानी प्रधान संतोष कुमार ने कार्य स्थल पर पहुंच कर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर सभी मजदूरों को योग करने का आह्वान करते हुए कहा कि योग करने की सलाह दी। इस अवसर पर शुभम पटेल, राजू पांडेय, नरेगा महिला मेठ सुलेखा सिंह, रोजगार सेवक मोनिका श्रीवास्तव, विनोद यादव, राम जी, विनोद कुमार, धर्मशीला, संजय कुमार आदि सैकड़ों लोग मौजूद रहे। कलवारीः विश्व योग दिवस भाजपा जिला उपाध्यक्ष जगदीश सिंह पटेल ने अपने आवास पर ही योगा किया। वही रविंद्रम वाटिका भावा बाजार में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गयाञ मुख्य अतिथि गजेंद्र प्रताप सिंह ब्लाक प्रमुख राजगढ़ रहे। राधेश्याम आगवेंद्र इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य इंद्रपाल सिंह ने अपने विद्यालय पर योग किया। इस अवसर पर योगा प्रशिक्षक के रूप में संतोष मौर्य, भोला नाथ, रजनीकांत प्रवेश, इंद्रदेव सिंह, अजय सोनी, ओम शंकर सिंह आदि मौजूद रहे। ड्रमंडगंजः स्थानीय बाजार सहित ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शिक्षण संस्थानों में विश्व योग दिवस पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। दशहरा मैदान में आयोजित योग शिविर में ग्राम प्रधान कौशलेंद्र गुप्ता सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने योग किया। प्राथमिक विद्यालय लहुरियादह, ड्रमंडग़ज तथा कटरा में भी बच्चों को योगाभ्यास कराया गया। प्राथमिक विद्यालय भटपुरवा में ग्राम प्रधान शिवगोबिंद चौरसिया, प्रधानाध्यापक शारदा प्रसाद द्विवेदी संग बच्चों ने योगासन किया। इसी तरह प्राथमिक विद्यालय नैड़ी कठारी में ग्राम प्रधान देवकुमार कुशवाहा के साथ योग किया गया। बेलन बरौंधा में डॉ. महानारायण भारती के साथ गांव के युवकों ने योगाभ्यास किया।

# 'क्यों गेल तुझे भी भागना है' माल्या के साथ वायरल तस्वीर पर लोगों ने 'यूनिवर्स बॉस' को किया ट्रोल, देखें

**नई दिल्ली ।** गेल की बात करें तो उन्हें 2011 में आरसीबी ने खरीदा था। उस साल गेल की तूफानी बल्लेबाजी की वजह से आरसीबी फाइनल में पहुंची थी। गेल 2017 तक आरसीबी की टीम में रहे। उन्होंने इस फ्रेंचाइजी के लिए 91 मैचों में 43.29 की औसत और 154.40 के स्ट्राइक रेट से 3420 रन बनाए।वेस्टइंडीज के दिग्गज क्रिकेटर और 'यूनिवर्स बॉस' के नाम से मशहूर क्रिस गेल सोशल मीडिया पर ट्रेंड कर रहे हैं। दरअसल, आईपीएल की फ्रेंचाइजी रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) के पूर्व मालिक और भगोड़े व्यवसायी विजय माल्या ने गेल के साथ सोशल मीडिया हैंडल ट्विटर पर एक तस्वीर शेयर की है। इसके बाद माल्या और गेल दोनों ट्रोल हो गए। गेल ने इस पोस्ट में गेल को अपना एक अच्छा दोस्त भी बताया है।गेल कई सालों तक आरसीबी का हिस्सा रहे थे। माल्या ने अपने ट्वीट में लिखा- मेरे अच्छे दोस्त क्रिस्टोफर हेनरी गेल, यूनिवर्स बॉस के साथ

मुलाकात शानदार रही। जब मैंने उन्हें आरसीबी टीम के लिए खरीदा था तब से हमारी अच्छी बहुत अच्छी है, 'सुपर फ्रेंडशिप'। किसी खिलाड़ी की अब तक की सबसे अच्छी खरीद।इस ट्वीट पर 32 हजार से ज्यादा लाइक्स और कई कमेंट्स आ चुके हैं। लोग माल्या के साथ-साथ गेल को भी ट्रोल कर रहे हैं। इसके अलावा ये ट्वीट 1300 से ज्यादा री-ट्वीट भी हो चुका है। सैम नाम के एक यूजर ने लिखा- क्यों भाई गेल तुझे भी लूटके भागना है? वहीं, कमलेंदु भुषण नाम के यूजर ने लिखा- आज तो बैंक हॉलीडे भी नहीं है।एक और यूजर ने लिखा- सर कभी अपने दूसरे दोस्त एसबीआई (एँद्य) को भी याद कर लो। आपकी याद में परेशान है। वहीं, दूसरे यूजर ने लिखा- भागना ही है तो ओलंपिक में भागो। इससे भारत का नाम होगा। इस तरह भागने का क्या मतलब है। कृष्ण गोपाल नाम के यूजर ने लिखा- घर आ जाओ और पैसे वापस कर दो। तुम्हें शर्म भी नहीं आती पैसा लेकर बैठे हो।वहीं, विजय नाम के यूजर ने लिखा- सर, आप कहां गए? वापस भारत आइए। आपसे कोई कुछ नहीं कहेगा। गुस्सा थूक दीजिए। आपकी ईडी को बहुत याद आ रही है। दरअसल, साल 2019 में ब्रिटिश न्यायपालिका ने भगोड़े विजय माल्या को प्रत्यर्पित करने का आदेश दिया था। हालांकि, अब तक ऐसा नहीं हो सका है।गेल की बात करें तो उन्हें 2011 में आरसीबी ने खरीदा था। उस साल गेल की तूफानी बल्लेबाजी की वजह से आरसीबी फाइनल में पहुंची थी। गेल 2017 तक आरसीबी की टीम में रहे। उन्होंने इस फ्रेंचाइजी के लिए 91 मैचों में 43.29 की औसत और 154.40 के स्ट्राइक रेट से 3420 रन बनाए। इसमें 21 अर्द्धशतक और पांच शतक शामिल है।

# फिका की पहली महिला अध्यक्ष बनीं यह पूर्व दिग्गज महिला क्रिकेटर, वनडे में उनके नाम है रिकॉर्ड..........

**नई दिल्ली ।**अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर्स महासंघ (फिका) को नया अध्यक्ष मिल गया है। ऑस्ट्रेलिया की पूर्व महिला दिग्गज क्रिकेटर लिसा स्थालेकर फिका की पहली महिला अध्यक्ष बन गई हैं। स्विट्जरलैंड के नियोन में आयोजित फिका कार्यकारी समिति की बैठक में 42 साल की स्थालेकर के नाम पर मुहर लगी। स्थालेकर ऑस्ट्रेलिया की पूर्व कप्तान भी रह चुकी हैं। लिसा से पहले दक्षिण अफ्रीका के पूर्व बल्लेबाज बैरी स्थालेकर ने खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा- हम खेल के नये दौर में प्रवेश कर रहे हैं। अब चाहे पुरुष हो या महिला, दोनों ही काफी क्रिकेट खेल रहे हैं। क्रिकेट अब एक वैश्विक खेल बन रहा है। इसे पूरी दुनिया में पसंद किया जा रहा है। स्थालेकर का जन्म भारत के पुणे में ही हुआ था। स्थालेकर ने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर में ऑस्ट्रेलिया के लिए 187 मैच खेले हैं। स्थालेकर ने 125 वनडे मैचों में दो शतक और 16 अर्धशतक

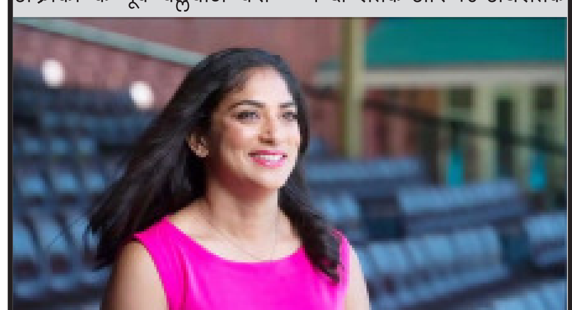

रिचर्ड्स, वेस्टइंडीज के पूर्व ऑलराउंडर जिमी एडम्स और हाल ही में इंग्लैंड के पूर्व बल्लेबाज विक्रम सोलंकी यह पद संभाल चुके हैं। कोरोना महामारी के बाद फिका की यह पहली बैठक थी। फिका के कार्यकारी अध्यक्ष हीथ मिल्स ने कहा- हमें लिसा को अध्यक्ष बनाते हुए बेहद खुशी हो रही है। अध्यक्ष बनने के बाद की मदद से 2728 रन बनाए हैं। इसके अलावा उन्होंने 146 विकेट भी लिए हैं। वह वनडे क्रिकेट में हजार रन बनाने और 100 विकेट लेने वाली पहली महिला क्रिकेटर थीं। इसके अलावा स्थालेकर ने आठ टेस्ट और 54 टी-20 अंतरराष्ट्रीय भी खेले हैं। उन्हें 2021 में ऑस्ट्रेलिया ने हॉल ऑफ फेम में शामिल किया था।

# श्रीलंका 30 साल बाद घरेलू मैदान पर ऑस्ट्रेलिया से वनडे सीरीज जीता, चौथे मैच में कंगारू टीम को चार रन से हराया

**नई दिल्ली ।** 1992 से श्रीलंका को अपने घरेलू मैदान पर तीन बार ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे सीरीज में हार मिली थी। कंगारू टीम 2004, 2011 और 2016 में लंकाई धरती पर जीतने में सफल रही थी।श्रीलंका ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच वनडे मैचों की सीरीज को अपने नाम कर लिया है। उसने चौथे मुकाबले में मंगलवार (21 जून)

को कंगारू टीम को चार रन से हरा दिया। इस जीत के साथ ही लंकाई टीम ने सीरीज में 3-1 की अजेय बढ़त हासिल कर ली। 30 साल में पहली बार श्रीलंका ने ऑस्ट्रेलिया को अपने घरेलू मैदान वनडे सीरीज में हराया है। पिछली बार उसे अगस्त 1992 में तीन वनडे मैचों की सीरीज में 2-1 से जीत मिली थी1992 से श्रीलंका को अपने घरेलू मैदान पर तीन बार ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे सीरीज में हार मिली थी। कंगारू टीम 2004, 2011 और 2016 में लंकाई धरती पर जीतने में सफल रही थी। मौजूदा सीरीज का पांचवां और अंतिम मुकाबला 24 जून को खेला जाएगा। श्रीलंका के लिए मैच में चरिथ असलंका जीत के हीरो रहे। उन्होंने सबसे ज्यादा 110 रन बनाए।मैच में ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला किया। श्रीलंका की टीम 49 ओवर में 258 रनों पर सिमट गई। असलंका ने अपने करियर का पहला शतक लगाया। उन्होंने 106 की पारी में 10 चौके और एक छक्का लगाया। उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच अवॉर्ड मिला। उनके अलावा धनंजय डी सिल्वा ने 60 और वानिंदु हसरंगा ने 21 रन बनाए। ऑस्ट्रेलिया के लिए मिचेल मार्श, पैट कमिंस, मैथ्यू कूहनेमैन ने दो-दो विकेट लिए। ग्लेन मैक्सवेल को एक सफलता हासिल हुई।मैच में ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला किया। श्रीलंका की टीम 49 ओवर में 258 रनों पर सिमट गई। असलंका ने अपने करियर का पहला शतक लगाया। उन्होंने 106 की पारी में 10 चौके और एक छक्का लगाया। उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच अवॉर्ड मिला। उनके अलावा धनंजय डी सिल्वा ने 60 और वानिंदु हसरंगा ने 21 रन बनाए। ऑस्ट्रेलिया के लिए मिचेल मार्श, पैट कमिंस, मैथ्यू कूहनेमैन ने दो-दो विकेट लिए। ग्लेन मैक्सवेल को एक सफलता हासिल हुई।ऑस्ट्रेलियाई पारी की बात करें कंगारू टीम 50 ओवर में 254 रनों पर सिमट गई। अंतिम ओवर में ऑस्ट्रेलिया को जीत के लिए 19 रन बनाने थे। कूहनेमैन ने तीन चौके लगाकर मुकाबले को रोमांचक तो बनाया लेकिन आखिरी गेंद पर पांच रन नहीं बना सके। अंतिम गेंद पर श्रीलंकाई कप्तान दसुन शनाका ने उन्हें आउट कर मैच अपने नाम कर लिया।ऑस्ट्रेलिया के लिए डेविड वॉर्नर ने 99 रन बनाए। 112 गेंद की पारी में वॉर्नर ने 12 चौके लगाए। ऑस्ट्रेलिया के लिए उनके अलावा पैट कमिंस ने 35, ट्रेविस हेड ने 27 और मिचेल मार्श ने 26 रन बनाए। श्रीलंका के लिए धनंजय डी सिल्वा, चमिका करुणारत्ने और जेफ्री वांडरसे ने दो-दो विकेट लिए।

# स्मृति मंधाना टॉप-10 में भारत की एकमात्र बल्लेबाज, झूलन गोस्वामी की रैंकिंग में आई गिरावट

**नई दिल्ली ।** 25 साल की मंधाना ने इस साल नौ मैचों में 411 रन बनाए हैं। इसमें वेस्टइंडीज के खिलाफ इस साल वर्ल्ड कप में लगाया गया एक शतक भी शामिल है। वह टॉप-10 में शामिल भारत की एकमात्र बल्लेबाज हैं। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल

(आईसीसी) ने मंगलवार को ताजा महिला वनडे रैंकिंग जारी की। ताजा रैंकिंग में बल्लेबाजों में स्मृति मंधाना ने अपना आठवां स्थान बरकरार रखा है। वहीं, दिग्गज तेज गेंदबाज झूलन गोस्वामी को गेंदबाजों की लिस्ट में एक स्थान का नुकसान उठाना पड़ा। 25 साल की मंधाना ने इस साल नौ मैचों में 411 रन बनाए हैं। इसमें वेस्टइंडीज के खिलाफ इस साल वर्ल्ड कप में लगाया गया एक शतक भी शामिल है। वह टॉप-10 में शामिल भारत की एकमात्र बल्लेबाज हैं। इस लिस्ट में टॉप पर ऑस्ट्रेलिया की एलिसा हीली हैं। दूसरे नंबर पर इंग्लैंड की नताली स्कीवर हैं। वहीं, गेंदबाजों की रैंकिंग की बात करें तो झूलन पांचवें से छठे स्थान पर लुढ़क गईं। 39 साल की झूलन ने इस साल नौ वनडे खेले हैं। इसमें उन्होंने 12 विकेट लिए हैं। झूलन को अपना स्थान दक्षिण अफ्रीका की अयाबोंगा खाका के हाथों गंवाना पड़ा। आयरलैंड के खिलाफ वनडे में अयाबोंगा ने शानदार प्रदर्शन किया था।इंग्लैंड की सोफी एक्लेस्टोन गेंदबाजों की लिस्ट में टॉप पर हैं। वहीं, दूसरे स्थान पर दक्षिण अफ्रीका की जेन जोनासेन हैं। ऑलराउंडर की लिस्ट में भारत की दीप्ति शर्मा सातवें स्थान पर बरकरार हैं।

# रोहित के सबसे ज्यादा रन और बुमराह के विकेट, पुजारी कोहली हुए थे फेल, जानें सीरीज में क्या-क्या हुआ

**नई दिल्ली ।** भारत और इंग्लैंड के बीच पांच टेस्ट मैचों की सीरीज का पांचवां मुकाबला एजबेस्टन में एक से पांच जुलाई तक खेला जाएगा। टीम इंडिया पिछले साल अगस्त-सितंबर में इंग्लैंड के दौरे पर गई थी। तब पांच टेस्ट की सीरीज का आखिरी मुकाबला नहीं खेला जा सका था। कोरोनावायरस के कारण मैच को टाल दिया गया था। वही मुकाबला अब एजबेस्टन में आयोजित होगा। सीरीज में अब तक क्या-क्या हुआ, किसने सबसे ज्यादा विकेट लिए और किसने सबसे ज्यादा रन बनाए, इस बारे में हम आपको यहां बता रहे हैं पहला टेस्टः सीरीज की शुरुआत नॉटिंघम में हुई। इंग्लैंड ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया। जो रूट के 64 रनों की बदौलत मेजबान टीम ने पहली पारी में 183 रन बनाए। भारत के लिए जसप्रीत बुमराह ने चार, मोहम्मद शमी ने तीन, शार्दुल ठाकुर ने दो और मोहम्मद सिराज ने एक विकेट लिए। टीम इंडिया पहली पारी में 278 रनों पर सिमट गई। उसके लिए केएल राहुल ने 84 और रवींद्र जडेजा ने 56 रन बनाए। इंग्लैंड के लिए ओली रॉबिंसन ने पांच और जेम्स एंडरसन ने चार विकेट लिए। भारत को 95 रनों की बढ़त मिली। दूसरी पारी में इंग्लिश ने 303 रन बनाए। जो रूट ने 109 रन की

पारी खेली। भारत के लिए बुमराह ने पांच, सिराज-शार्दुल ने दो-दो और शमी ने एक विकेट लिए। उसने भारत को जीत के लिए 209 रनों का लक्ष्य दिया। टीम ने दूसरी पारी में एक विकेट पर 52 रन बनाए। राहुल ने 26, रोहित ने नाबाद 12 और पुजारा ने नाबाद 12 रन बनाए। ब्रॉड को एक सफलता मिली। मैच ड्रॉ हो गया। जो रूट को प्लेयर ऑफ द मैच अवॉर्ड मिला। दूसरा टेस्टः सीरीज का दूसरा मुकाबला लॉर्ड्स, लंदन में आयोजित हुआ। इंग्लैंड ने टॉस जीतकर गेंदबाजी चुनी। भारत ने 364 रन बनाए। केएल राहुल ने 129, रोहित शर्मा ने 83, विराट कोहली ने 42 और रवींद्र जडेजा ने 40 रन बनाए। इंग्लैंड के लिए एंडरसन ने पांच, रॉबिंसन ने दो, मार्क वुड ने दो और मोईन अली ने एक विकेट लिए। वहीं, इंग्लैंड की टीम ने पहली पारी में 391 रन बनाए। जो रूट ने 180 रन ठोके। जॉनी बेयरस्टो ने 57 और रोरी बर्न्स ने 49 रन बनाए। भारत के लिए सिराज ने चार, इशांत ने तीन और शमी ने दो विकेट लिए। इंग्लैंड को पहली पारी में 27 रनों की बढ़त मिली। भारत ने अपनी दूसरी पारी आठ विकेट पर 298 रन बनाकर घोषित की। उसके लिए अजिंक्य रहाणे ने 61, मोहम्मद शमी ने नाबाद 56, चेतेश्वर पुजारा ने 45 और बुमराह ने नाबाद 34 रन बनाए। इंग्लैंड के लिए मार्क वुड ने तीन, रॉबिंसन और मोईन ने दो-दो और सैम करन ने एक विकेट लिए। इंग्लैंड को 272 रनों का लक्ष्य मिला, लेकिन वह 120 रनों पर ही ढेर हो गई। जो रूट ने 33 और जोस बटलर ने 25 रन बनाए। भारत के लिए सिराज ने चार, बुमराह ने तीन, इशांत ने दो और शमी ने एक विकेट लिए। भारतीय टीम लॉर्ड्स टेस्ट 151 रन से जीतकर सीरीज में 1-0 से आगे हो गई। विराट कोहली लॉर्ड्स में टेस्ट जीतने वाले कपिल देव और महेंद्र सिंह धोनी के बाद भारत के तीसरे कप्तान बने। केएल राहुल को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।तीसरा टेस्टः नॉटिंघम के बाद तीसरा टेस्ट हेडिंग्ले, लीड्स में खेला गया। भारत ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी का फैसला किया। टीम इंडिया पहली पारी में 78 रनों पर ढेर हो गई। रोहित ने 19 और रहाणे ने 18 रन बनाए। बाकी कोई बल्लेबाज दहाई के आंकड़े को नहीं छू सका। एंडरसन और क्रेग ओवर्टन ने तीन-तीन विकेट लिए। रॉबिंसन और करन को दो-दो सफलता मिली। इंग्लैंड ने पहली पारी में 432 रन बनाए। जो रूट ने 121, डेविड मलान ने 70, हसीब हमीद ने 68 और रोरी बर्न्स ने 61 रन बनाए। भारत के लिए शमी ने चार, बुमराह-सिराज और जडेजा ने दो-दो विकेट लिए। इंग्लिश टीम को 354 रनों की बढ़त हासिल हुई। भारतीय टीम दूसरी पारी में 278 रन पर ऑलआउट हो गई। पुजारा ने 91, रोहित ने 59, कोहली ने 55 और जडेजा ने 3 रन बनाए। इंग्लैंड के लिए रॉबिंसन ने पांच, ओवर्टन ने तीन, एंडरसन और मोईन ने एक-एक विकेट लिए। टीम इंडिया मैच में पारी और 76 रन से हार गई। इंग्लैंड ने सीरीज को 1-1 की बराबरी पर खड़ा कर दिया। रॉबिंसन को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। चौथा टेस्टः सीरीज का चौथा मुकाबला लंदन के केनिंगटन ओवल में खेला गया। इंग्लैंड ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। भारतीय टीम 191 रन पर सिमट गई। शार्दुल ठाकुर ने 57 और कोहली ने 50 रन बनाए। इंग्लैंड के लिए क्रिस वोक्स ने चार, रॉबिंसन ने तीन, एंडरसन और ओवर्टन ने एक-एक विकेट लिए। इंग्लैंड की टीम ने पहली पारी में 290 रन बनाए। ओली पोप ने 81 और क्रिस वोक्स ने 50 रन बनाए।

# पहला फोटो पोस्ट करने तक, क्लासमेट को हमसफर बनाने में संजू सैमसन को लग गए थे पांच साल

**नई दिल्ली ।** आयरलैंड के खिलाफ दो टी20 मैचों की सीरीज के लिए संजू सैमसन का चयन 15 जून को हुआ था। संजू इस साल फरवरी में श्रीलंका के खिलाफ सीरीज में टीम के सदस्य थे, लेकिन उन्हें दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ हाल ही में समाप्त हुई सीरीज के लिए नहीं चुना गया था। सैमसन को एक बार फिर से खुद को साबित करने का मौका मिला है। क्रिकेट की तरह ही संजू की लव स्टोरी भी काफी रोचक है। एक मैसेज ने उनकी जिंदगी को बदल दिया।संजू ने अपनी क्लासमेट चारुलता को हमसफर बनाया। दोनों की शादी 22 दिसंबर 2018 को हुई थी। सैमसन और चारुलता एमार इवानिओस कॉलसे से एक-दूसरे को जानते हैं। दोनों की लव स्टोरी वहीं शुरू हुई थी।सैमसन ने एक बार अपनी लव स्टोरी का खुलासा किया था। उन्होंने कहा था, ठ22 अगस्त 2013 को पहली बार मैंने चारुलता को मैसेज किया था। रात के 11:11 बजे मैंने उन्हें हाई (प) लिखकर भेजा था।''सैमसन ने आगे बताया था, ''उस दिन से लेकर पांच साल तक मैं उनके साथ एक फोटो पोस्ट करने का इंतजार कर रहा था। मैं दुनिया को बताना चाहता था कि मैं चारुलता से कितनी मोहब्बत करता हूं और वह मेरे लिए कितनी खास हैं।'कॉलेज समाप्त होने के बाद सैमसन और चारुलता काफी समय तक एक-दूसरे से दूर रहे। इस दौरान दोनों अपने करियर पर ध्यान दे रहे थे। चारुलता ने की। पांच साल तक डेट करने के बाद दोनों ने शादी कर ली।संजू के करियर की बात करें तो फर्स्ट क्लास क्रिकेट में केरल की ओर से खेलते और 12 अर्धशतक हैं। वहीं, लिस्ट-ए क्रिकेट में संजू ने 102 मुकाबले खेले हैं। इस दौरान 30 की औसत से 2610 रन बनाए। उन्होंने एक

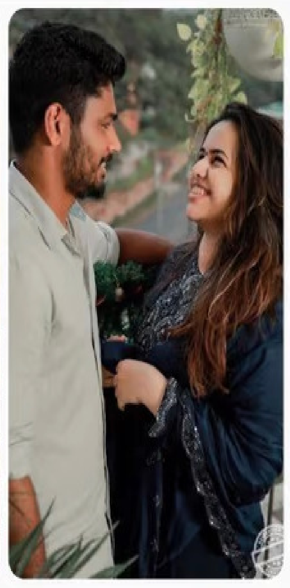

बीएससी और ह्यूमन रिसोर्स में पीजी किया। उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ गाने सुनने का शौक था। संजू ने लंबे समय बाद चारुलता को मैसेज किया था। सामने से कोई जवाब नहीं आया। इससे संजू परेशान हुए। चारुलता से मिलने के लिए सीधे उनके कॉलेज पहुंच गए। इसके बाद दोनों ने डेटिंग शुरू हैं। टीम इंडिया के लिए अब तक 13 टी20 मैच खेल चुके हैं। इस दौरान उनके बल्ले से 174 रन निकले हैं। इस दौरान उनका औसत 14.50 और स्ट्राइक रेट 121.67 का रहा।फर्स्ट क्लास क्रिकेट की बात करें तो सैमसन ने 37.64 की औसत से 55 मैचों में 3162 रन बना चुके हैं। उनके नाम 10 शतक शतक और 14 अर्धशतक लगाया है।आईपीएल को देखें तो संजू राजस्थान रॉयल्स के कप्तान हैं। उन्होंने 138 मैचों में 29.14 की औसत से 3526 रन बनाए। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 135.72 का रहा है। सैमसन ने तीन शतक और 17 अर्धशतक लगाए हैं।

# राशिफल

**मेष-:**अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए निजी संबंधों का इस्तेमाल करना आपवेः जीवनसाथी को नाराज कर सकता है. ख़र्चीं पर नियंत्रण रखने की कोशिश करें और ज़रूरी चीज़ें ही ख़रीदें।

**वृष-:**आज कोई अच्छी जानकारी मिलने वाली है. आज आपको मिलने वाले अवसरों के लिए खुद को तैयार करें। आपकी महत्वाकांक्षाएं आज चरम पर होंगी।

**मिथुन-:**अपने खान-पान पर नियंत्रण रखें और फिट रहने के लिए नियमित व्यायाम करें. खर्चों में वृद्धि होगी, लेकिन साथ ही आय में वृद्धि से संतुलन बनेगा।

**कर्क-:**आज का दिन व्यस्त रहेगा। बेहतर होगा कि अपने प्रोजेक्ट का काम समय पर पूरा कर लें। जीवनसाथी के साथ आज आपका समय शांतिपूर्ण रहने वाला है। रुका हुआ पैसा वापस मिलेगा।

**सिंह-:**मित्र के साथ गलतफहमी अप्रिय स्थिति पैदा कर सकती है, किसी भी निणन्य पर पहुंचने से पहले दोनों पक्षों को संतुलित दृष्टिकोण से जांच लें. अधिक खर्च और चतुर वित्तीय योजनाओं से बचें।

**कन्या-:**आज का दिन फायदेमंद रहने वाला है. आज आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा जिससे आप सफलता की ओर तेजी से बढ़ेंगे। ऐसी सभी चीजों से दूर रहें जो आपकी प्रगति में बाधक हैं।

**तुला-:**आर्थिक मामलों में अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है. आप जिन लोगों के साथ रहते हैं, वे आपसे बहुत खुश नहीं होंगे, चाहे आपने इसके लिए कुछ भी किया हो। आपके काम में रुकावट आ सकती है।

**वृश्चिक-:**आज का दिन ऊर्जा से भरपूर रहने वाला है. आज मन को व्यर्थ के विचारों में न भटकने दें। इस राशि के जो लोग अविवाहित हैं, उनके घर से शादी की बात शुरू हो सकती है।

**धनु-:**उदास और उदास न हों. आपके लिए आकर्षक निवेश योजनाओं के बारे में गहराई से जानने की कोशिश करें, कोई भी कदम उठाने से पहले विशेषज्ञ की सलाह लें। दोस्त और परिवार आपको प्यार और सहयोग देंगे।

**मकर-:**आज आपका ईर्ष्यालु स्वभाव आपको दुखी और दुखी कर सकता है. दूसरों के सुख-दुःख बांटने की आदत विकसित करें। पिता के साथ तनाव दूर करने के लिए दिन अच्छा है।

**कुंभ-:**धैर्य रखें, क्योंकि आपकी समझ और प्रयास आपको अवश्य ही सफलता दिलाएंगे. यात्रा और धन खर्च करने के मूड में रहेंगे लेकिन अगर आप ऐसा करते हैं तो आपको बाद में पछताना पड़ सकता है।

**मीन-:**आज का दिन यादगार रहने वाला है. एक समूह गतिविधि का नेतृत्व करेंगे। परिवार से जुड़ी परेशानियां आज खत्म होंगी। आप भी दूसरों की मदद के लिए हर संभव प्रयास करेंगे।

## सम्पादकीय

# क्या है वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग, सही शैक्षणिक संस्थान चुनने में कैसे करती है मदद.............

साल 1990 में अपना पहला इंडस्ट्री लीडिंग रिसर्च करने के बाद से,“ए एक उच्च शिक्षण संस्थान की ताकत को रेखांकित करने के लिए सिस्टमेटिकल विश्लेषण और तुलनात्मक डेटा संग्रह के तरीकों को विकसित करने काम कर रहा है। साल 1990 में अपना पहला इंडस्ट्री लीडिंग रिसर्च करने के बाद से,“ए एक उच्च शिक्षण संस्थान की ताकत को रेखांकित करने के लिए सिस्टमेटिकल विश्लेषण और तुलनात्मक डेटा संग्रह के तरीकों को विकसित करने काम कर रहा है। साल 2004 में शुरू हुई“ए वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग, दुनिया भर में उच्च शिक्षण संस्थानों की संपूर्ण विषयों और यूनिवर्सिटी एक्टिविटीज रैंकिंग का एक वार्षिक प्रकाशन है।कंपनी की ये जानी-मानी शोध योजना, क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग मुख्य रूप से दुनिया भर के विश्वविद्यालयों का मूल्यांकन करती है और टॉप की कुछ ऐसे विश्वविद्यालयों का नाम आगे करती है, जो 51 विभिन्न कोर्सेज की शिक्षा के साथ-साथ 5 फैकल्टी एरिया में काफी अच्छे होते हैं।दुनिया में सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली विश्वविद्यालयों की रैंकिंग प्रकाशन,“ए वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग एशिया, लैटिन अमेरिका, उभरते यूरोप, मध्य एशिया और अरब क्षेत्र सहित दुनिया भर के विश्वविद्यालयों का मूल्यांकन करके उनको रैंक देने का काम करती है।क्यूएस (ए) वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग क्यों अब बात आती है कि आखिर क्यूएस (ए)वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग सिस्टम को ही क्यों चुना जाए. तो इसके कई कारण है, जो ये साबित करते हैं कि क्यूएस (ए) वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग बेस्ट है। क्यूएस रेटिंग सिस्टम का वैश्विक प्रभाव एक शैक्षणिक संस्थान को उनकी उपलब्धियों और काम करने के लिए वैश्विक मान्यता प्राप्त करने में मदद करने के साथ-साथ, क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग अंतरराष्ट्रीय मानकों और सवीत्तम शिक्षण तरीकों का इस्तेमाल करने में एचईआई (पुपुर्िमदह ग्हेूलूदह) की भी सहायता करती है। लगातार विकसित हो रही शिक्षा प्रणाली को ध्यान में रखते हुए, ऐसे कई कारण है, जो क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग के महत्व को बताते हैं। उनमें से कुछ कारणों के बारे में यहां पर बताया गया है।क्वालिटी की गारंटीहर कोई ये चाहता है कि वो जो भी वस्तु ले रहा है, वो अच्छी क्वालिटी का हो और खासकर उच्च शिक्षा प्राप्त करते समय वो इस बात पर ज्यादा ध्यान देता है. क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग बेहतर भविष्य के लिए ऐसे ही शिक्षण संस्थान का मूल्यांकन करती है, जो बेहतर क्वालिटी की शिक्षा प्रदान करते हो. एक शैक्षणिक संस्थान और उसके शिक्षण की गुणवत्ता का पता लगाने के लिए, रेटिंग प्रणाली छात्रों की प्रतिक्रिया, छात्र अनुपात के लिए फैकल्टी, डिग्री पूर्ण होने की दर जैसे विभिन्न तरीकों को अपनाती है। इसके अलावा, यह टीचरों के एक विभिन्न समूह के साथ एक्टिव एजुकेशन और सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करता है, जिसमें छात्रों के ज्ञान को बढ़ाने के लिए एक कम्पलीट विजन शामिल होता है। रोजगार योग्यता और अवसर एक ग्रेजुएट की रोजगार योग्यता संस्थान के प्रदर्शन, क्वालिटी कार्यक्रमों और प्लेसमेंट से संबंधित गतिविधियों की दिशा में प्रयास को प्रदर्शित करती है। क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग इस क्षेत्र में सामान्य इंडीकेटर्स के साथ एक शैक्षणिक संस्थान की सहायता करती है, जैसे कि परिसर में प्लेसमेंट कंपनियों की उपस्थिति, रोजगार दर और कैरियर सेवाओं का समर्थन आदि। इसके अलावा, यह मंचों/क्लबों में छात्रों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करता है, साथ ही एक्स्ट्रा कैरिकुलम एक्टिविटी को प्रेरित करने से संस्थान में रोजगार क्षमता को भी बढ़ावा मिलता है। विश्वसनीयता एक उच्च शिक्षण संस्थान के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय दोनों प्रकार की मान्यताओं के साथ और भी कई मान्यताएं महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार से विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को दी गई रेटिंग या ग्रेड उनकी विश्वसनीयता में इजाफा करते हैं, जिसका सीधा फायदा छात्र को भी होता है। इसके अतिरिक्त, यह बेहतर प्लेसमेंट के लिए अधिक अवसर सुनिश्चित करता है क्योंकि कंपनियां उच्च श्रेणी के शैक्षणिक संस्थानों से छात्रों की भर्ती को प्राथमिकता देती हैं।

# शरीर को सुदृढ़ बनाए योग साधना

आधुनिक वातावरण में व्यक्ति अनेक रोगों के चंगुल में फंसा हुआ है। उसके पीछे अनेक कारण हो सकते हैं, किन्तु सबसे बड़ा कारण यही माना जाता है कि मानव कहीं न कहीं, किसी न किसी रुप में प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन-उपेक्षा कर रहा है। इसी उल्लंघन-उपेक्षा के अभ्यास से माँसपेशियों में साधारण खिंचाव, आंतरिक अंगों की मालिश एवं सम्पूर्ण सनयुओंमें सुव्यवस्था स्थापित होती है। अनेक असाध्य रोगों में लाभ एवं उनका पूर्णरुपेंण निराकरण भी आसनों के अभ्यास के माध्यम से किया जा सकता है।आसनों के नित्य प्रकार आसनों के अभ्यास से शरीर स्वस्थ होकर सक्रिय एवं रचनात्मक कार्य करने को तैयार होता है।'प्राणायाम' का अर्थ होता है प्राण को विकसित करना। मानव का अस्तित्व इसी प्राण के कारण होता है। इस क्रिया से न सिर्फ प्राणवायु की

की भावना ने व्यक्ति को अनेक बीमारियों ने धीरे-धीरे अपने शिकंजे में कसना प्रारम्भ कर दिया है।चिकित्सा के क्षेत्र में अनेक पैथियों का योगदान है, जो मानव के रोगों का निराकरण करने में लगी हैं। सभी पैथियों का अपने-अपने क्षेत्र में महत्त्व है। सभी पैथियों में बीमारियों का उपचार है, कारणों का निवारण नहीं। जब तक कारणों का निवारण नहीं होगा, तब तक बीमारी समाप्त नहीं हो सकती, वह सिर्फ अपना रुप परिवर्तित कर लेती है। परन्तु चिकित्सा के क्षेत्र में एक ऐसा भी विज्ञान है, जो रोगों पर तो नियंत्रण करता ही है, साथ ही साथ मानव मन को शांत करके उसे प्रकृति से भी जोड़ता है, जिस कारण खुद-बखुद रोग पर काबू हो जाता है। उस विज्ञान का नाम है-'योग।''योग' में आसन शरीर को, प्राणायम-मन एवं शरीर को तथा ध्यान; मन एवं आत्मा को प्रभावित करता है। आसनों का अभ्यास स्वास्थ्य लाभ एवं उपचार के लिए भी किया जाता है। आसनों अभ्यास से शरीर की अन्तः स्त्रावी ग्रन्थि प्रणाली नियंत्रित एवं सुव्यवस्थित होती है, जिससे सभी ग्रंथियों से उचित मात्रा में रस का स्त्राव होने लगता है। इसका लाभ स्वास्थ के साथ-साथ जीवन के प्रति हमारे मानसिक दृष्टिकोण पर भी पड़ता है। यदि कोई भी ग्रंथि कार्य ठीक से नहीं कर पाती है, तो उसका कुप्रभाव शरीर पर स्पष्ट रुप से दिखाई देता है, इसलिए यह नितान्त आवश्यक है कि इस प्रणाली को सुचारु रुप से संचालित रखा जाए ताकि रोग पीड़ित अंगों को पुनर्जीवित कर सामान्य कार्य के योग्य बनाया जाए।आसनों के अभ्यास से माँसपेशियाँ, हड्डियाँ, सनयुमंडल, ग्रंथि प्रणाली, श्वसन प्रणाली, उत्सर्जन प्रणाली, रक्त प्रणाली आदि एक-दूसरे से संबंधित होती हैं एवं सहयोग देती हैं। इससे शरीर लोचदार तथा परिवर्तित वातावरण के अनुकूल ढ़ालने योग्य बनता है। यह पाचन क्रिया को तीव्र करता है तथा उचित मात्रा में पाचन-रस तैयार करता है। इस अधिकतम आपूर्ति ही हमारे अंगों को होती है, बल्कि अंतरंगों का भलीभाँति व्यायाम भी हो जाता है। शारीरिक दृष्टि से प्राणायाम द्वारा शरीर की मांसपेशियाँ और फेफड़ों का संस्कार होता है और कार्बन-डाई ऑक्साइड गैस का भली प्रकार निष्कासन भी हो जाता है।आहार का परिपाक करने वाले और रस बनाने वाले अंगों पर भी प्राणायाम का अनुकूल असर पड़ता है। अनन्न के परिपाक में अमाशय, उसके पृष्ठ भाग में स्थित पैंक्रियाज और यकृत मुख्य कार्य करते हैं। प्राणायाम के समय डायफ्राम और पेट की माँसपेशियाँ बारी-बारी से खूब सिकुड़ती और फैलती है, जिससे पाकोपयोगी अंगों का अच्छी तरह से व्यायाम हो जाता है। इस प्रकार प्राणायाम द्वारा देह के विभिनन्न हिस्सों और अवयवों का उपचार स्वतः ही हो जाता है।इस लिए योग अवश्य करे ।। आप सभी को योगा दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।।

# आमजन और वित्तीय समावेशन : आम आदमी की आजीविका से अर्थव्यवस्था तक डिजिटल माध्यम से पहुंच बनाने की कोशिश

देश में डिजिटल बुनियादी ढांचा कमजोर है। डिजिटल लेन-देन की बुनियादी जरूरत-कंप्यूटर और इंटरनेट बड़ी संख्या में लोगों की पहुंच से दूर हैं। वित्तीय लेन-देन के लिए बड़ी संख्या में लोग डिजिटल भुगतान तकनीकों से अपरिचित हैं। छोटे गांवों में बिजली की पर्याप्त पहुंच नहीं है। साथ ही मोबाइल ब्रॉडबैंड स्पीड के मामले में भी देश अभी बहुत पीछे है।हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने युवाओं, किसानों और उद्यमियों को कर्ज की सरल उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए 13 सरकारी योजनाओं से जुड़े क्रेडिट लिंक्ड पोर्टल जन समर्थ की शुरुआत की है। उन्होंने इस मौके पर कहा कि यह पोर्टल आम आदमी के जीवन को आसान बनाने में अहम भूमिका निभाएगा, वहीं युवाओं के लिए मनचाही कंपनी व उद्यम खोलने और चला पाने के काम को आसान बनाएगा। उल्लेखनीय है कि कोविड-19 के बाद कल्याणाकरी अर्थशासत्री पूरी दुनिया में वैश्विक मंदी के चुनौतिपूर्ण दौर में गरीबी दूर करने और गरीबों के कल्याण के लिए वित्तीय समावेशन की प्रभावी आवश्यकता बता रहे हैं। इस परिप्रेक्ष्य में भारत में हाल के वर्षों में वित्तीय समावेशन की डगर पर तेजी से बढ़ाए जा रहे कदमों की सराहना दुनिया के विभिनन्न आर्थिक और वित्तीय संगठनों ने की है। यह कहा जा रहा है कि भारत में करोड़ों गरीब, पिछड़े एवं कम आय वाले लोगों को अर्थव्यवस्था के औपचारिक माध्यम में शामिल करके उन्हें डिजिटल माध्यम के जरिये पारदर्शी ढंग से वित्तीय और बैंकिंग सेवाओं की सरल उपलब्धता सुनिश्चित किए जाने से आम आदमी तक सब्सिडी, वित्तीय सेवा, राशन, प्रशासनिक तथा स्वास्थ्य सेवाओं सहित कई बहुआयामी सुविधाएं बिना मध्यस्थों के पहुंच रही हैं। दुनिया भर में यह भी रेखांकित हो रहा है कि भारत में आम आदमी और छोटे कारोबारियों को छोटी रकम के सरल कर्ज देकर उनके जीवन को आसान और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में सूक्ष्म वित्त क्षेत्र का सकल ऋण पोर्टफोलियो (जीएलपी) तेजी से बढ़ रहा है। 16 जून को प्रकाशित माइक्रोफाइनेंस इंस्टीट्यूशंस नेटवर्क (एमएफआईएन) के नए

आंकड़ों के मुताबिक, जीएलपी 31 मार्च, 2022 तक 10 प्रतिशत बढ़कर 2,85,441 करोड़ रुपये हो गया, जो 31 मार्च, 2021 तक 2,59,377 करोड़ रुपये था। खास बात यह भी है कि सूक्ष्म वित्त उद्योग से बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हो रहे हैं। इसके तहत मार्च, 2022 में ऋण खाते बढ़कर 11.31 करोड़ हो गए, जो मार्च, 2021 में 10.83 करोड़ थे। इसमें कोई दो मत नहीं है कि जनधन योजना (पीएमजेडीवाई) ने देश में वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। देश में लागू की गई विभिनन्न वित्तीय समावेशन योजनाओं से देश का आम आदमी कितना लाभान्वित हो रहा है, इसका आभास भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) इकोरैप के द्वारा प्रकाशित भारत में वित्तीय समावेशन शोध रिपोर्ट, 2021 से लगाया जा सकता है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, भारत अब वित्तीय समावेशन के मामले में जर्मनी, चीन और दक्षिण अफ्रीका से आगे है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि जनधन योजना ने ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग की तस्वीर बदल दी है। जिन राज्यों में प्रधानमंत्री जनधन योजना खातों की संख्या ज्यादा है, वहां अपराध में गिरावट देखने को मिली है। यह भी देखा गया है कि अधिक बैंक खाते वाले राज्यों में शराब और तंबाकू उत्पादों जैसे नशीले पदार्थों की खपत में महत्वपूर्ण एवं सार्थक गिरावट आई है। निस्संदेह देश के गरीब एवं कमजोर वर्ग के अधिकांश लोग वित्तीय समावेशन का लाभ लेने के लिए आगे बढ़ते दिखाई दे रहे हैं। लेकिन वित्तीय समावेशन की डगर पर कई बाधा और चुनौतियां भी दिखाई दे रही हैं। अब भी बड़ी संख्या में जनधन खाते निष्क्रिय पड़े हुए हैं। देश में डिजिटल बुनियादी ढांचा कमजोर है। डिजिटल लेन-देन की बुनियादी जरूरत-कंप्यूटर और इंटरनेट बड़ी संख्या में लोगों की पहुंच से दूर हैं। वित्तीय लेन-देन के लिए बड़ी संख्या में लोग डिजिटल भुगतान तकनीकों से अपरिचित हैं। छोटे गांवों में बिजली की पर्याप्त पहुंच नहीं है। साथ ही मोबाइल ब्रॉडबैंड स्पीड के मामले में भी देश अभी बहुत पीछे है। उम्मीद की जा सकती है कि पोर्टल जन समर्थ के तहत शामिल नौ मंत्रालयों की 13 विभिनन्न योजनाओं के साथ-साथ देश में लागू विभिनन्न वित्तीय समावेशी विकास योजनाओं के कारगर क्रियान्वयन से देश के गरीब व कमजोर वर्ग के करोड़ों लोगों को वित्तीय राहत, सुविधा और सुरक्षा मिल सकेगी। इससे देश में आर्थिक-सामाजिक कल्याण और आर्थिक विकास का नया अध्याय शुरू हो सकता है।

# स्विस बैंक : विदेशों में क्यों धन जमा करते हैं भारतीय, इसकी वजहें और शेल कंपनियों का सच

देश में जितना काला धन पैदा होता है, उसका दस प्रतिशत बाहर जाता है, बाकी 90 प्रतिशत काला धन देश में ही रहता है। इसलिए अगर हमें काले धन पर अंकुश लगाना है, तो देश में ही उस पर लगाम लगानी चाहिए। अगर बाहर भेजे गए काले धन को पकड़ना चाहेंगे, तो उसमें विफलता ही मिलेगी, क्योंकि सरकार को भी ठीक-ठीक पता नहीं कि कितना काला धन बाहर गया है और उसे कहां रखा गया है। हाल में खबर आई है कि स्विस बैंकों में भारतीयों के जमा धन में भारी इजाफा हुआ है। वर्ष 2021 में भारत के लोगों और संस्थाओं की स्विस बैंकों में कुल जमा राशि 30,500 करोड़ रुपये थी। यह 14 साल के उच्च स्तर पर है। स्विस बैंकों ने यह जो जानकारी दी है, वह वैध धन है, काला धन नहीं। विदेशों में या स्विस बैंक में भारतीयों का कितना काला धन जमा है, इसका पता लगाना टेढ़ी खीर है। अपने देश से जिस माध्यम से काला धन विदेशों में जाता है, उसे हम लेयरिंग कहते हैं। लेयरिंग में लोग देश से काला धन हवाला, आयात या निर्यात में अंडर इनवॉयसिंग तथा ओवर इनवॉयसिंग के जरिये किसी टैक्स हेवन देश में किसी शेल कंपनी में डाल देते हैं। फिर वहां उस शेल कंपनी को बंद करके किसी दूसरे टैक्स हेवन देश में नई शेल कंपनी बनाकर उसमें पैसा लगा देते हैं।इस तरह से छह चरणों में पैसे निकालते, डालते हुए अंत में स्विट्जरलैंड भेजते हैं। ऐसे में छह स्तर होने पर छह शेल कंपनियां बनती और बंद होती हैं, जिसका पता लगाना बहुत मुश्किल होता है। सरकार अगर चाहे भी तो एकाध स्तर तक ही पता लगा पाती है, उससे आगे पता नहीं लग पाता है। लेयरिंग की इस प्रक्रिया में जहां से आखिरी बार स्विट्जरलैंड में पैसा जाता है, स्विट्जरलैंड सरकार उसे उस देश का पैसा मान लेती है। जैसे कि जर्सी आइलैंड से पैसा स्विट्जरलैंड गया है, तो वह मान लेगी कि यह पैसा ब्रिटिश है, भारतीय नहीं है, क्योंकि जर्सी आइलैंड ब्रिटेन का है। इसलिए उसे भारतीय धन में नहीं गिना जाता है। स्विट्जरलैंड के बैंकों में जो पैसा है, वह सबसे ज्यादा (30 लाख 62 हजार करोड़ रुपये) ब्रिटिश पैसा है, क्योंकि ब्रिटेन के पास सबसे ज्यादा टैक्स हेवन हैं। इसलिए स्विट्जलैंड की सरकार कहती है कि हमारे यहां सबसे ज्यादा पैसा ब्रिटेन से आया है।जबकि सबसे ज्यादा काला धन रूस, यूक्रेन, भारत आदि देशों में पैदा होता है। वास्तव में जो वैध धन होता है, स्विस बैंक उसकी ही गिनती बताते हैं। सरकार अगर चाहे भी, तो वह पैसा वापस नहीं ला सकती, क्योंकि आयातकों और निर्यातकों पर सरकार का उतना दबाव नहीं होता कि वैध धन को विदेशों से देश में लाया जाए। अगर यह काला धन नहीं है, तो फिर भारत के लोग स्विस बैंकों में पैसा क्यों जमा करते हैं? इसकी कई वजहें हैं। जब भी अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता की स्थिति पैदा होती है, तो लोग अपने धन को डायवर्सिफाइ (अलग-अलग जगहों पर जमा करना) करते हैं, इससे उनका जोखिम कम हो जाता है। जैसे कि मान लीजिए कि इस बात का खतरा है कि रुपया गिरेगा, तो वे अपना धन फॉरेन एक्सचेंज के माध्यम से स्विस बैंकों में जमा कर देंगे। जो निर्यातक हैं, वे अपना पैसा देर से लाएंगे, जब अर्थव्यवस्था में स्थिरता आएगी और रुपये के गिरने का खतरा कम हो जाएगा। और जो आयात करने वाले हैं, वे अपना पैसा इसलिए विदेशी बैंकों में जमा रखते हैं, क्योंकि उन्हें आयात बिल भरना होता है। अन्यथा रुपये का मूल्य गिरने पर उन्हें भारी घाटा होगा। इस तरह से आयातक और निर्यातक यह अनुमान लगाकर कि रुपया कमजोर होने पर हमें घाटा हो सकता है, अपना वैध पैसा विदेशी बैंकों में जमा करते हैं। इसके अलावा रिजर्व बैंक की लिबरलाइज्ड रेमिटेंस स्कीम (एलआरएस) है, जिसके तहत कोई भी हर साल ढाई लाख डॉलर देश के बाहर ले जा सकता है।उसके चलते भी बहुत से लोग अपना वैध धन स्विस बैंकों में या कहीं और जमा करते हैं। स्विस बैंकों में भारतीयों की जमा राशि बढ़ने का संकेत यह है कि लोगों को लग रहा है कि अर्थव्यवस्था की स्थिति थोड़ी कमजोर हो रही है। इस बीच, एक और बात हुई है, हाई नेटवर्थ इंडिविजुअल्स (एचएनडब्लूयूआई) देश छोड़कर जा रहे हैं। एक रिपोर्ट आई थी कि वर्ष 2014 से 2017 के बीच में देश से 23,000 हाई नेटवर्थ इंडिविजुअल्स देश छोड़कर विदेश चले गएवर्ष 2018 में पांच हजार एचएनडब्लूयूआई देश छोड़कर चले गए। सुनने में यह भी आ रहा है कि बीते एक साल में नौ हजार एचएनडब्लूयूआई देश छोड़कर चले गए हैं। जाहिर है, जब वे बाहर रहेंगे, तो अपनी संपत्ति का एक हिस्सा बाहर ही रखेंगे। अभी देश का जो माहौल है, उसमें कई अति समृद्ध लोगों को यह भय है कि पता नहीं कब सरकार कौन-सा दबाव बनाए या सख्ती करे, इसलिए वे देश छोड़कर विदेशों में बसने जा रहे हैं। अपने सामाजिक माहौल और निवेश माहौल में जो अनिश्चितता का दौर चल रहा है, उसके कारण भी हो सकता है कि लोगों ने अपना और ज्यादा वैध धन स्विस बैंकों में जमा किया हो। दो तरीके से देश से विदेशों में पैसा जाता है। एक तो वैध तरीके से और दूसरा काले धन के रूप में। मेरा अनुमान है कि इस समय देश में काले धन की जो अर्थव्यवस्था है, वह जीडीपी का साठ प्रतिशत है। देश में जितना काला धन पैदा होता है, उसका दस प्रतिशत बाहर जाता है, बाकी 90 प्रतिशत काला धन देश में ही रहता है। इसलिए अगर हमें काले धन पर अंकुश लगाना है, तो देश में ही उस पर लगाम लगानी चाहिए। अगर बाहर भेजे गए काले धन को पकड़ना चाहेंगे, तो उसमें विफलता ही मिलेगी, क्योंकि सरकार को भी ठीक-ठीक पता नहीं कि कितना काला धन बाहर गया है और उसे कहां रखा गया है। इस संबंध में जो आंकड़े मिलते हैं, वे चोरी के आंकड़े होते हैं। जैसे कि बैंकों के डाटा को हैक करके आंकड़ा बाहर निकाला जाता है, लेकिन वास्तविक आंकड़ा पता नहीं चलता है, क्योंकि उसे छिपाकर रखा जाता है। इसके अलावा, जो काला धन बाहर जाता है, उसका तीस से चालीस प्रतिशत राउंड ट्रिपिंग के जरिये वापस चला आता है। राउंड ट्रिपिंग का मतलब यह है कि कोई व्यक्ति या कंपनी विभिनन्न स्रोतों से धन किसी टैक्स हेवन देश में भेजती है और फिर वहां से अन्य स्रोत से अपनी भारतीय कंपनी में निवेश करा लेती है। इससे यह पता नहीं चल पाता कि वास्तव में पैसा किसका है। साथ ही जो लोग काला धन बाहर भेजते हैं, वे वहां अपने बच्चों की पढ़ाई, इलाज आदि पर खर्च करते हैं अथवा घर खरीद लेते हैं। जैसे कि अंबानी या अदार पूनावाला ने महामारी के दौरान लंदन में बड़े घर खरीदे। यह पैसा लिक्विड फॉर्म में ज्यादा नहीं रहता कि उसे वापस ला सकें। इसलिए काले धन को बाहर से लाने की कवायद का बहुत फायदा नहीं है। अगर काले धन को पकड़ना है, तो उसे अपने देश में ही रोकना होगा, विदेशों से हम काला धन वापस नहीं ला पाएंगे। सरकार चाहे, तो अपने देश में ही काले धन को पैदा होने से रोक सकती है, लेकिन सरकारें ऐसा करती नहीं हैं, क्योंकि सत्तारूढ़ दलों को काले धन से फायदा होता है।

संक्षिप्त समाचार

## महिला पार्षद और पति डेढ़ लाख रुपये की रिश्वत ले रहे थे, एसीबी ने किया रंगे हाथ गिरफ्तार

**राजस्थान।** भीलवाड़ा में महिला पार्षद और उसके पति को एसीबी ने डेढ़ लाख रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़ा है। राजस्थान के भीलवाड़ा में ठेकेदार से डेढ़ लाख रुपये की रिश्वत ले रहे महिला पार्षद और उसके पति को रंगे हाथों पकड़ा है। मामला नाले के निर्माण का था, जिसके लिए पार्षद ने पैसे की डिमांड की थी। राजस्थान के भीलवाड़ा नगर परिषद के वार्ड नंबर 29 की महिला पार्षद लक्ष्मीदेवी सेन और उसके पति मुकेश सेन को भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की टीम ने बुधवार को डेढ़ लाख रुपए की रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया है। रिश्वत की यह राशि पार्षद पति ने ठेकेदार से नाला निर्माण कार्य शुरू करने की एवज में ली। एसीबी की इस कार्रवाई के बाद नगर परिषद की निर्माण शाखा में हड़कंप मच गया है। एसीबी इंस्पेक्टर नरसीलाल मीणा के अनुसार गुढ़ा का खेड़ा बरसनी निवासी और महालक्ष्मी कंस्ट्रक्शन कंपनी के प्रोपराइटर ठेकेदार सुवालाल पुत्र मांगीलाल कुमावत ने एसीबी में शिकायत दी कि उसे वार्ड 29 काशीपुरी में विष्णु जलपान गृह के पास नाला निर्माण का ठेका मिला। इस निर्माण कार्य को शुरू करने देने की एवज में वहां की पार्षद लक्ष्मीदेवी सेन व उसके पति मुकेश सेन ने डेढ़ लाख रुपए की मांग की है। एसीबी ने इस शिकायत का सत्यापन करवाया। सत्यापन के बाद बुधवार को ही ठेकेदार सुवालाल कुमावत डेढ़ लाख रुपए (एक लाख 20 हजार का चेक और 30 हजार रुपये नकद) लेकर विष्णु जलपान गृह के पास पहुंचा जहां उससे पति मुकेश सेन ने उक्त रिश्वत की राशि ली। इसी दौरान परिवादी का संकेत पाकर एसीबी की टीम मौके पर पहुंची और पार्षद पति को रिश्वत राशि सहित दबोच लिया। निर्माण विभाग के इंजीनियरों की भूमिका होने का अंदेशा एसीबी नगर परिषद की निर्माण शाखा से इस निर्माण कार्य से संबंधित पत्रावली को प्राप्त करने की कार्रवाई कर रही है जिससे वहां हड़कंप मचा है। इस कार्रवाई से समूचे सिस्टम पर सवालिया निशान लग गया है।

# विश्व योग दिवस पर पॉकेट 7 सेक्टर 82 में योग शिविर आयोजित

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

**नोएडा।** विश्व योग दिवस पर ईडबल्यूएस पॉकेट 7 सेक्टर 82 के पार्क में योग प्रशिक्षक कमल पात्रा के नेतृत्व में पॉकेट वासियों ने योग किया। इस अवसर पर भस्त्रिका, कपाल भाती, अनुलोम विलोम, भ्रामरी, मण्डूक आसान सहित कई प्रकार के आसन और प्राणायाम कराए गए। इस अवसर पर राघवेंद्र दुबे ने बताया कि योग प्रशिक्षक कमल पात्रा लगभग तीन वर्षों से पॉकेट के लोगों को निश्वार्थ भाव से निशुल्क योगा कराते हैं। योगा के बाद सभी पॉकेट वासियों द्वारा उनका शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। लगातार योगा करने से यहां के कई लोगो के असाध्य रोग ठीक हो गए हैं। नियमित योगा करने से शरीर के साथ हमारा मन मस्तिष्क स्वस्थ रहता है साथ ही असाध्य रोग भी खत्म हो जाते हैं। भाग दौड़ भरी जिंदगी से कुछ समय हमें अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए अवश्य निकालना चाहिए। गम्भीर बीमारियों से हमें नियमित योगा ही बचा सकता है इस अवसर पर राघवेंद्र दुबे, रमेशचंद्र शर्मा, एनके सोलंकी, राजेश पाठक, सुभाष शर्मा, छोटे लाल, आरपी सिंह, विष्णु शर्मा, मास्टर किशन उपाध्याय, श्रीराम त्रिपाठी, लक्ष्मण चौहान, उमाकांत त्रिवेदी, मुकेश रावत, वंश बहादुर सिंह, मनोज गुप्ता सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

# सांसद गणेश सिंह और चुनाव प्रभारी देवेंद्र त्रिपाठी ने ली वार्ड पार्षद प्रत्याशी एवं कार्यकर्ताओं की बैठक

(आधुनिक समाचार सेवा)
दिनेश यादव

**मैहर।** नगरीय निकाय चुनाव को लेकर मैहर में आयोजित हुई सभी पार्टी पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं के साथ प्रत्यासियो की बैठक चुनाव प्रभारी देवेंद्र त्रिपाठी पहुचे मैहर बैठक के मुख्य अतिथि सतना सांसद गणेश सिंह रहे मौजूद ये रहे मंचासीन प्रदेश कार्यसमिति सदस्य श्रीकांत चतुर्वेदी कैलाश गौतम मंडल अध्यछ अनुपम सोनी अमित राय मैहर नगरपालिका परिषद के चुनाव में भाजपा ने अपने सभी वार्ड में प्रत्यासी उतारने के बाद आज पहली बैठक हुई ।

# राष्ट्रीय कवि पंचायत में हुयी साहित्य की बरसात

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

**नोएडा।** साहित्य वेलफेयर कल्चरल एन्ड स्पोर्ट्स फेडरेशन और भारतीय एकता सद्भावना मिशन के संयुक्त तत्वाधान में नोएडा के बरौला स्थित साहित्य सदन के काव्य भवन में एक विशाल राष्ट्रीय कवि पंचायत का आयोजन किया गया,जिसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए डेढ़ दर्जन से अधिक कवि,कवियत्री व शायरों ने शिरकत की। एक मंच पर इतने कलमकारों ने देर रात तक अपनी रचनाओं से खूब वाहवाही बटोरी।कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि बाबा कानपुरी ने की। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि जाने माने गीतकार प्रमोद मिश्र निर्मल और विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ राजपाल सिंह यादव व समाजवादी पार्टी लोहियावाहिनी के राष्ट्रीय सचिव चौधरी सुंदर भाटी मंचासीन रहे। कार्यक्रम का आयोजन वरिष्ठ कवि व फेडरेशन के चैयरमेन पंडित साहित्य कुमार चंचल ने समस्त अतिथियों व कवियों का फूल माला से स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन कवि अभिमन्यु पाण्डेय आदित्य ने किया।कार्यक्रम की शुरुआत कवियत्री शालिनी मिश्रा ने सरस्वती वंदना से की। इसके बाद बिसाहड़ा से आये युवा कवि पंकज राणा व पंकज शर्मा पीयूष ने अपने मुक्तक सुना सदन की वाहवाही बटोरी। इसी क्रम में सतीश दीक्षित ने ओज की कविता पढ़ी। शायर ओमपाल सिंह खलिश ने ग़ज़ल सुबह होती है शाम होती है,तो ग़ज़लकार ताबिश खैराबादी ने कभी हंसाते ,कभी रुलाते सुनकर तालियां बटोरीं। इसके बाद शायर हाशिम देहलवी और मनोज मिश्र की ग़ज़ल को काफी सराहा गया। कवियत्रियों में मीनाक्षी ,बबीता राणा व शालिनी मिश्रा के गीतों ने माहौल को प्रेम और श्रृंगार रस से सराबोर कर दिया। गीतकार प्रमोद मिश्रा निर्मल और जे पी रावत के गीत ने सदन को मंत्रमुग्ध कर दिया। वहीं साहित्य चंचल और अभिमन्यु पाण्डेय आदित्य ने अपने काव्यपाठ से देश के मौजूदा हालातों पर व्यंग दिया तो विजय चंचल व अटल मुरादाबादी के ओज भरे काव्यपाठ पर सदन झूम उठा। कार्यक्रम के अंत में अध्यक्षता कर रहे बाबा कानपुरी ने अपने मुक्तक सुनाए और माहौल आनंदमय कर दिया। इस दौरान श्रोताओं में दिल्ली एनसीआर के तमाम सुधि श्रोताओं ने काव्य रस का आनंद लिया।

# नोएडा पुलिस के हाथ लगी बडी कामयाबी

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

**नोएडा।** 200 से अधिक कारों और मोटरसाइकिलों की चोरी में शामिल रहे एक शातिर वाहन चोर गिरोह का पर्दाफाश करते हुए पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनके पास से दो कारें और 12 मोटर साइकिल और अन्य सामग्री बरामद की है। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि ये लोग एनसीआर से वाहन चोरी करने के बाद बुलंदशहर के जहांगीराबाद में वाहनों को काटते और उनके पुर्जों को देश के विभिन्न जगहों पर बेच देते हैं। पुलिस उपायुक्त (जोन प्रथम) राजेश एस ने बताया कि पुलिस ने मंगलवार को एक सूचना के आधार पर वाहन चोरी करने वाले गिरोह के नवमुद्दीन, तनवीर, शाह आलम, रिजवान तथा मोहित कुमार को गिरफ्तार किया है। इनका एक साथी अभी फरार है। डीसीपी ने बताया कि इनकी निशानदेही पर पुलिस ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) के विभिन्न जगहों से चोरी की गई दो कारें, 12 मोटरसाइकिल, 74 टायर (रिम के बगैर), 37 टायर (रिम लगे हुए), 11 सीएनजी गैस सिलेंडर आदि बरामद किए हैं। उन्होंने बताया कि पूछताछ के दौरान पता चला कि बदमाशों ने ईद से अब तक 50 से ज्यादा वाहन चोरी की है और एन सी आर से 200 से ज्यादा वाहन चोरी की वारदात को अंजाम देने की बात स्वीकार की है। पुलिस ने कहा कि आरोपियों के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 379 और 41 और अन्य धाराओं के तहत एफआईआर दर्ज की गई है और आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

# भागवत कथा मे आज गोवर्धन भगवान एवं श्री कृष्ण की बाललीलाओ की कथा

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

**नोएडा।** श्री राधे श्याम भागवत सेवा समिति सलारपुर के द्वारा सैंगर पब्लिक स्कूल राजीव कॉलोनी सलारपुर नोएडा में आयोजित 11वी भागवत कथा का आज पांचवां दिन विश्व गुरु बनेगा इसे बताए और लोगो से योग को अपने जीवन का अंग बनाने का आह्वान किए। इस अवसर पर सब इंस्पेक्टर श्री रविन्द्र कुमार, श्री महेश शर्मा,सुबेराम शर्मा,रविंद्र शर्मा ,नरेंद्र शर्मा,श्री देवचंद्र झा, श्री रमाकांत झा,जितेन्द्र

कथावाचक वृंदावन किंकर पंडित श्री उमेश चंद्र शास्त्री जी के मुखार बिंद से भगवान की बाल लीला,कालिया मर्दन लीला,गोवर्धन पूजा का विस्तार से वर्णन किया गया ,आयोजक समिति के सदस्य श्री जितेन्द्र पाठक ने बताया कि इस अवसर पर कथावाचक जी ने विश्व योग दिवस के अवसर पर लोगो को योग के महत्व को समझाया और किस तरह से भारत विश्व योगगुरु था और आगे भी पाठक,हरिराम दूबे,धर्मेंद्र पाठक,दयानंद शर्मा,विनोद शर्मा,शैलेंद्र सिंह,जयवीर शर्मा, शम्भू झा,सतीश शर्मा,श्रवण त्यागी,जयराज भाटी,घनश्याम झा,मुकेश शर्मा,अंकित शर्मा,रिंकू शर्मा,लखीचंद शर्मा,संदीप चौहान,प्रदीप शर्मा,प्रवीण शर्मा, बंटी शर्मा,राहुल शर्मा,सौरव शर्मा ,चिंटू मिश्रा सहित सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित रहे ।

# कश्मीर में विभिन्न जगहों पर NIA की छापेमारी

**जम्मू ।** एनआईए ने एक आतंकी मामले में केंद्र शासित प्रदेश के कश्मीर संभाग में विभिन्न जगहों पर छापेमारी की है। एनआईए की कार्रवाई जारी है। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने बुधवार को कश्मीर संभाग में अलग-अलग जगहों पर छापेमारी की है। बताया जा रहा है आतंकी मामले में जांच के सिलसिले में यह कार्रवाई की जा रही है। इससे पहले सोमवार को दक्षिण कश्मीर के पुलवामा जिले में सात जगहों पर छापा मारा। इस दौरान चेवाकलां में आतंकियों द्वारा सुरक्षा बलों पर गोलीबारी के मामले में चार ओवर ग्राउंड वर्कर (ओजीडब्ल्यू) गिरफ्तार किए गए। इस दौरान भारी मात्रा में आपत्तिजनक सामग्री बरामद की गई है। इसे लेकर सोमवार को एनआईए प्रवक्ता ने बताया था कि मामला दक्षिण कश्मीर में जैश-ए-मोहम्मद की आतंकी गतिविधियों से संबंधित है। चेवाकलां में 11 मार्च को हुई मुठभेड़ में दो आतंकी मारे गए थे। इनकी पहचान पुलवामा के आकिब मुश्ताक भट और पाकिस्तान के कमाल भाई के रूप में हुई थी।

# भाजपा जिला कार्यालय पर मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

(आधुनिक समाचार सेवा)
आशीष त्रिवेदी

**सीतापुर।** आधुनिक समाचार सीतापुर सीतापुर के भाजपा जिला कार्यालय पर भाजपा जिला अध्यक्ष अचिन मेहरोत्रा ने सैकड़ों लोगों के साथ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया इस अवसर पर भाजपा के जिला पदाधिकारी कार्यकर्ता कार्यकर्ता एवं जनमानस शामिल हुआ प्रातः काल 6:00 बजे जिला कार्यालय पर आयोजित इस अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम में भाजपा जिलाध्यक्ष के साथ जिला उपाध्यक्ष विश्राम सागर राठौर, इंदू सिंह चौहान , विनीत त्रिवेदी ,अनुप विश्वकर्मा ,खैराबाद ब्लाक प्रमुख अजय विश्वकर्मा, दीपक शुक्ला आदि सैकड़ों भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे एवं कार्यक्रम को सफल बनाया।

## भाजपा पर भड़के सीएम गहलोत

**राजस्थान।** प्रधानमंत्री और अमित शाह को अहंकारी नहीं होना चाहिए और संविधान के अनुसार देश चलाना चाहिए। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत बुधवार को दिल्ली में एआईसीसी की प्रेस कॉन्फ्रेंस में संघ और भाजपा पर जमकर बरसे। उन्होंने कहा कि धर्म के नाम पर ये लोगों को भड़का रहे हैं, सोचिए इनकी सोच क्या है। क्या हिंदू धर्म के नाम पर ये हिंदू राष्ट्र बनाकर इस देश को एक और अखंड रख पाएंगे।

# बारिश-बर्फबारी से कई जिलों में स्कूल बंद, नेशनल हाईवे समेत कई सड़कें ठप जम्मू-कश्मीर

**जम्मू ।** बारिश ने गर्मी से राहत देने के बाद जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है। कई जिलों में स्कूलों को बंद करने के निर्देश जारी किए गए हैं। जम्मू-श्रीनगर नेशनल हाईवे समेत कई सड़क मार्ग बारिश और भूस्खलन के चलते जाम हैं। ऐसे में कई लोग बीच रास्तों में ही फंस गए हैं। जम्मू-कश्मीर में मैदानी इलाकों में बारिश और पहाड़ी इलाकों में बर्फबारी का दौर बुधवार को भी जारी है। बदले मौसम के मिजाज ने गर्मी से राहत तो दी, लेकिन अब इससे जनजीवन प्रभावित हो रहा है। जम्मू संभाग के रामबन और कश्मीर संभाग के अनंतनाग व बारामूला में बिगड़े मौसम के चलते आज स्कूल बंद रखने का आदेश जारी किए गए हैं। 270 किलोमीटर लंबा जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग बुधवार को लगातार दूसरे दिन बंद है। यहां रामबन-उधमपुर सेक्टर में 30 से अधिक जगह पर भूस्खलन हुआ है, जिससे सैकड़ों वाहन फंसे हुए हैं। राजोरी की कोटरंका तहसील के ढोक इलाके में बेमौसम की बर्फबारी से चरवाहों के 20 परिवार फंस गए। बिजली गिरने और अत्यधिक ठंड से कई मवेशियों के मरने की भी सूचना है। जम्मू क्षेत्र के पुंछ और राजौरी जिलों को दक्षिण कश्मीर के शोपियां जिले से जोड़ने वाले वैकल्पिक संपर्क मुगल रोड पर भी रास्ते में भूस्खलन के कारण यातायात रोक दिया गया है। जम्मू संभाग के जिला डोडा, किश्तवाड़ और रामबन में भारी बारिश के चलते आज सभी स्कूल बंद रखने के निर्देश जारी किए गए हैं। रामबन जिला उपायुक्त ने इसे लेकर निर्देश जारी किए हैं। तेज बारिश के कारण प्रदेश भर में नदी और नाले में उफान पर हैं। वहीं, पुलिस और प्रशासन ने लोगों को नदी और नालों के करीब न जाने की सलाह दी है। डोडा जिला प्रशासन ने पर्वतीय जिले के कई इलाकों में हाई अलर्ट घोषित कर दिया है। राजोरी में तेज बारिश के चलते सड़कें और गलियां जलमग्न हो गई हैं। वहीं, जवाहर नगर में बारिश का पानी लोगों के घरों में जा घुसा है। इससे घरों में रखा सामान बारिश की भेंट चढ़ गया है। कई जगह राजोरी-जम्मू सड़क मार्ग भी पानी में डूबा हुआ है। इससे लोगों को अपने गंतव्यों को जाने के लिए भारी परेशानी का सामना करना पड़ा रहा है। राजोरी जिला प्रशासन ने लोगों को सजगता बरतने और नदी-नालों के करीब न जाने की सलाह दी है।

# 23 जून को कलेक्ट्रेट सभागार में माननीय सांसद डॉ महेश शर्मा की अध्यक्षता में जिला विकास समन्वय एवं अनुश्रवण समिति ''दिशा'' की बैठक होगी आयोजित

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

**नोएडा।** जिलाधिकारी सुहास एल.वाई. ने जनपद के समस्त विभागीय अधिकारियों का आह्वान करते हुए उन्हें जानकारी दी है कि 23 जून को कलेक्ट्रेट सभागार में प्रातः 11:00 बजे से ग्राम्य विकास एवं शहरी विकास के तहत संचालित विभिन्न कार्यक्रमों की समीक्षा/ अनुश्रवण के उद्देश्य से सांसद डॉ महेश शर्मा की अध्यक्षता में जिला विकास समन्वय एवं अनुश्रवण समिति ''दिशा'' की बैठक का आयोजन होगा। डी एम ने समस्त विभागीय अधिकारीगणों को निर्देश देते हुए कहा है कि बैठक से संबंधित अपनी-अपनी सभी तैयारियां समय रहते पूर्ण करते हुए निर्धारित समय, तिथि एवं स्थान पर उपस्थित होकर बैठक में प्रतिभाग करना सुनिश्चित करेंगे।

## जम्मू में अग्निपथ योजना के खिलाफ पीडीपी ने खोला मोर्चा, स्कीम वापस लिए जाने की मांगपीडीपा...............

**जम्मू ।** नेता ने कहा कि देशभर में युवा अगिन्पथ योजना के खिलाफ सड़क पर उतरे हैं। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत सिर्फ चार नौकरी कर सकते हैं, जो कि सरासर अन्याय है। अगिन्पथ योजना के विरोध में बुधवार को पीडीपी ने जम्मू शहर के गांधीनगर में पार्टी कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया। इस दौरान पीडीपी के सदस्यों ने भाजपा सरकार के खिलाफ जोरदार नारेबाजी की और इस योजना को वापस लेने की मांग की। पीडीपी नेता ने कहा कि देशभर में युवा अगिन्पथ योजना के खिलाफ सड़क पर उतरे हैं। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत सिर्फ चार नौकरी कर सकते हैं, जो कि सरासर अन्याय है। उन्हें न ही पैंशन दी जानी है और न ही कोई अन्य सुविधा। कुछ लाख पैसों से वे अपनी जीवनयापन कैसे करेंगे। चार साल के बाद युवा नौकरी से बाहर आएंगे तो वे कहां जाएंगे। इन चीजों पर सरकार को विचार करना चाहिए।

# प्रदेश सरकार ने सामाजिक कल्याण की योजनाओं से करोड़ों लोगों को किया लाभान्वित......

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

**नोएडा।** प्रदेश में सामाजिक कल्याण के जितने कार्य मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की सरकार में हुए हैं, उतने पूर्व की किसी सरकार ने नहीं किये। वृद्धावस्था पेंशन, निराश्रित महिला पेंशन, दिव्यांगजन पेंशन जो पहले 500 रू0 प्रतिमाह थी उसे बढ़ाकर 1000 रू0 प्रतिमाह की दर से कर दिया है। प्रदेश के 58 लाख वृद्धजनों, 31 लाख निराश्रित महिलाओं, 11 लाख से अधिक दिव्यांगजनों को 1000 रू0 प्रतिमाह की दर से पेंशन दी जा रही है। यह सभी पात्र लाभार्थी समाज के ऐसे पुरूष, महिला, दिव्यांगजन हैं जिन्हें परिवार के लोग बोझ समझते हैं। मुख्यमंत्री जी ने समाज के इन वर्गों को 12000 रूपये वार्षिक पेंशन देते हुए आत्म सम्मान से जीने के लिए समर्थ बनाया है। आज किसान/वृद्धावस्था पेंशन, निराश्रित महिला पेंशन और दिव्यांगजन पेंशन के लाभार्थी समाज में सिर ऊंचा कर जी रहे हैं और प्रदेश सरकार की प्रशंसा कर रहे हैं।प्रदेश में कोविड-19 महामारी के कारण अनाथ हुए बच्चों के भरण पोषण, शिक्षा, चिकित्सा आदि की व्यवस्था हेतु आर्थिक सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने ''उ0प्र0 मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना'' शुरू की है, जिसमें शून्य से 18 वर्ष की उम्र तक के ऐसे बच्चे जिनके माता-पिता दोनों या माता/पिता की कोविड से मृत्यु हुई है ऐसे बच्चों के भरण-पोषण शिक्षा चिकित्सा हेतु 4000 रू0 प्रतिमाह दिया जा रहा है। बालिकाओं के बालिग होने पर शादी के लिए रूपये 1,01,000 (एक लाख एक हजार रूपये) दिया जा रहा है। प्रदेश में अब तक 11049 बच्चों को आर्थिक सहायता दी गई है। उसी तरह जिन बच्चों ने कोरोना काल में कोविड से इतर कारणों से अपने माता-पिता को खोया है उन्हें उ0प्र0 मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (सामान्य) के अंतर्गत 2500 रू0 प्रतिमाह की सहायता दी जा रही है। प्रदेश में अब तक 5284 बच्चों को चिन्हांकित कर लाभान्वित किया गया है। प्रदेश में समान लिंगानुपात, कन्या भ्रूण हत्या रोकने व लोगों में सकारात्मक सोच विकसित करने के लिए दो बालिकाओं तक के जन्म पर संचालित ''मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजनान्तर्गत'' 12.68 लाख से अधिक बालिकाओं को 15 हजार रू0 प्रति बालिका दिया गया है। सभी वर्गों के गरीब परिवारों की कन्याओं के विवाह हेतु संचालित ''मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजनान्तर्गत'' प्रदेश में अब तक 1.75 लाख जोड़ों से अधिक तथा श्रमिकों की कन्याओं के विवाह हेतु संचालित ''कन्या विवाह अनुदान योजनान्तर्गत'' 94 हजार कन्याओं का विवाह सम्पन्न कराया गया है। प्रदेश में समेकित बाल विकास सेवा योजनान्तर्गत 6 माह से 6 वर्ष तक के बच्चो, गर्भवती व धात्री महिलाओं को अनुपूरक पुष्टाहार वितरित किया जा रहा है। प्रदेश के 15 करोड़ अन्त्योदय एवं पात्र गृहस्थी राशन कार्ड धारकों को निःशुल्क गेहूँ, चावल खाद्यान्न के साथ-साथ आयोडाइज्ड नमक, चना, दाल, साबुन, रिफाइन्ड, खाद्य तेल का वितरण किया जा रहा है। इसके अलावा 3 करोड़ मजदूरों को मार्च, 2022 तक 500 रूपये प्रतिमाह भत्ता और 98 लाख नागरिकों को 1000 रूपये प्रतिमाह का भत्ता दिया गया है। प्रदेश में प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के अंतर्गत 1.67 करोड़ महिलाओं को मुफ्त घरेलू कुकिंग गैस कनेक्शन देने वाला उत्तर प्रदेश देश का पहला राज्य बना है। प्रधानमंत्री आवास योजनान्तर्गत प्रदेश के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के 42.50 लाख पात्रों को तथा मुख्यमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत 1.02 लाख परिवारों को छत मुहैया कराई गई है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत 2.61 करोड़ व्यक्तिगत शौचालय/इज्जतघर का निर्माण कराया गया जो देश में प्रथम स्थान पर है। इस योजनान्तर्गत 10 करोड़ लोग लाभान्वित हुए हैं। प्रदेश के गरीबों को सौभाग्य योजनान्तर्गत 1.41 करोड़ घरों में मुफ्त विद्युत कनेक्शन दिये गये हैं। प्रदेश में शुद्ध पीने के पानी की आपूर्ति सरकार घरों में कर रही है। इसके अंतर्गत प्रदेश सरकार 4.67 करोड़ घरों को शुद्ध पाइप पेयजल की सुविधा 'हर घर नल' योजना के अंतर्गत आपूर्ति कर रही है।

# नच पंजाबन ट्रेंड करते दिखे अभिताभ बच्चन फैंस को पसंद आ रहा बिग बी कूल अंदाज

**नई दिल्ली ।** अपने दौर के मशहूर अभिनेता अमिताभ बच्चन आज भी अपने दमदार व्यक्तित्व और शानदार अभिनय के लिए जाने जाते में एक्टर फिल्म जुग जुग जियो के नच पंजाबन सॉन्ग का हुक स्टेप कॉपी करते दिखे। बिग बी का यह अनोखा अंदाज देख फैंस भी उनका हुए अपनी फोटो शेयर की है। हुक स्टेप को पोज करते हुए भी अमिताभ का स्वैग देखने लायक है, जिसे उनके फैंस बेहद पसंद कर रहे हैं।

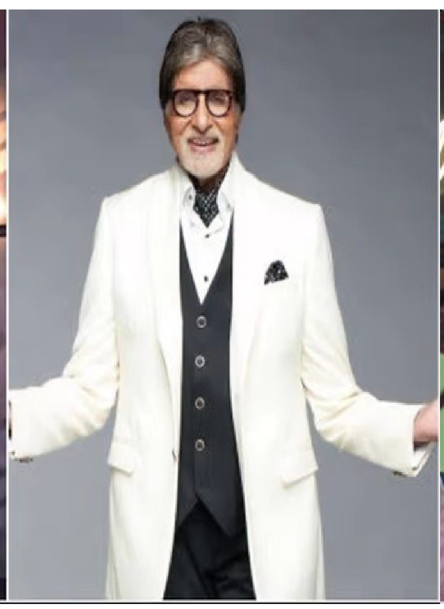

हैं। उम्र के इस पड़ाव में भी अभिनेता अपनी फिटनेस और चार्म से युवाओं को टक्कर देते दिखते हैं। फिल्मों के साथ-साथ बिग बी सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव रहते हैं। वह अक्सर फैंस के साथ अपनी तस्वीरें और सुविचार साझा करते रहते हैं। इसी क्रम में अब हाल ही में अभिनेता सोशल मीडिया पर अपना एक लेटेस्ट फोटो पोस्ट किया है। लगभग हर ट्रेंड को फॉलो करने वाले बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन ने हाल ही में इंस्टाग्राम पर अपनी एक तस्वीर शेयर की है। सामने आई इस फोटो तारीफ करते दिख रहे हैं। दरअसल, इन दिनों सोशल मीडिया पर इस अपकमिंग फिल्म के गाने नच पंजाबन के हुक स्टेप को करने का ट्रेंड छाया हुआ है। अमिताभ से पहले कई बॉलीवुड सेलेब्स भी इस गाने पर अपनी वीडियो बना चुके हैं। ऐसे में अमिताभ बच्चन ने भी इस ट्रेंड को अपने अंदाज में कर इसे और भी खास बना दिया है। उनकी यह तस्वीर इंटरनेट पर सामने आते ही तेजी से वायरल हो रही है। अभिनेता ने इस गाने पर अपना वीडियो बनाने की बजाय नच पंजाबन गाने का हुक स्टेप करते फोटो में अमिताभ बच्चन काफी स्टाइलिश दिख रहे हैं। पर्पल रंग के ट्रैक सूट के साथ हैडबैंड और ग्लासेस उन्हें काफी कूल बना रहा है। इस फोटो को शेयर करते हुए उन्होंने कैप्शन में लिखा- नच पंजाबन, नच पंजाबन, नच पंजाबन। बिग बी की इस तस्वीर पर कमेंट करते हुए एक्टर मनीष पॉल नेलिखा, लव यू सर। वहीं, फैंस भी एक्टर के स्टाइल पर फिदा हो रहे हैं। वर्कफ्रंट की बात करें तो अभिनेता जल्द ही अयान मुखर्जी की फिल्म 'ब्रह्मास्त्र' में नजर आएंगे। इस फिल्म में बिग बी के साथ रणबीर कपूर और आलिया भट्ट भी दिखाई देंगे।

# केरल हाइकोर्ट ने यौन उत्पीड़न के मामले में विजय बाबू को दी अग्रिम जमानत

**नई दिल्ली ।** केरल हाइकोर्ट ने मलयालम अभिनेता-निर्माता विजय बाबू को उनके खिलाफ दर्ज यौन उत्पीड़न मामले में एक बार फिर अग्रिम जमानत दे दी है। बता दें कि 22 अप्रैल को अभिनेता के खिलाफ एक महिला ने शिकायत दर्ज कराई गई थी, जिसमें एक्टर पर आरोप लगाया गया कि अपनी फिल्मों में रोल देने का वादा करके उसका यौन शोषण किया गया और साथ ही ड्रग्स लेने के लिए मजबूर किया गया। इसके बाद में सोशल मीडिया पर शिकायतकर्ता की पहचान और नाम उजागर करने को लेकर पुलिस ने विजय बाबू के खिलाफ एक और मामला दर्ज किया था।

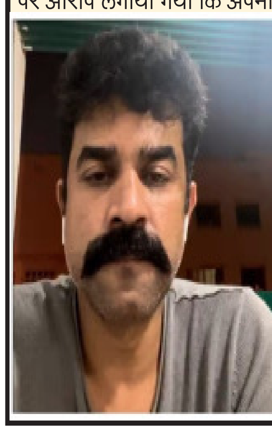

# अक्षय के साथ डेब्यू है सफलता की सीढ़ी ये अभिनेत्रियां कर चुकी हैं अभिनेता के साथ करियर की शुरुआत

**नई दिल्ली ।** बॉलीवुड के सुपरस्टार अक्षय कुमार को इंडस्ट्री में काम करते हुए 30 साल से ज्यादा का समय हो गया है। अभिनेता अपने 30 साल के करियर में लगभग 100 से भी ज्यादा फिल्मों में काम कर चुके हैं और कई पुरस्कार भी जीत चुके हैं। यदि अभिनेता के फिल्मों के कलेक्शन की बात करें तो उनकी लगभग आधी फिल्में व्यावसायिक रूप से सफल रही हैं। यही कारण है कि अभिनय की दुनिया में कदम रखने वाली अभिनेत्रियां अक्सर खिलाड़ी कुमार की फिल्मों से बॉलीवुड में डेब्यू करना पसंद करती हैं और इसके लिए वह एज गैप को भी नजरअंदाज कर देती हैं। हाल ही में अक्षय कुमार से 25 साल छोटी मानुषी छिल्लर ने 'सम्राट पृथ्वीराज' से बॉलीवुड डेब्यू किया था। वहीं 11 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली फिल्म 'रक्षा बंधन' से तीन अभिनेत्रियां - शाहजमीन कौर, दीपिका खनन और स्मृति श्रीकांत फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखने जा रही हैं। अक्षय कुमार से उम्र में 25 साल छोटी मानुषी छिल्लर ने हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'सम्राट पृथ्वीराज' से बतौर हीरोइन बॉलीवुड में डेब्यू किया था। हालांकि अक्षय कुमार-स्टारर 'सम्राट पृथ्वीराज' फ्लॉप साबित हुई। रिपोर्ट्स के मुताबिक, सम्राट पृथ्वीराज ने 19वें दिन 64.95 लाख रुपये का कारोबार किया है, जो कि इसके 300 करोड़ रुपये के कथित बजट से काफी कम है। फिल्म भारत में लगभग 75 करोड़ रुपये और दुनिया भर में लगभग 85-90 करोड़ रुपये का कलेक्शन कर चुकी है। अक्षय कुमार से उम्र में 20 साल छोटी दिव्या ने बॉलीवुड में अपने करियर की शुरुआत 2004 में फिल्म 'अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों' से की थी। लेकिन फिल्म बॉक्स ऑफिस पर पिट गई। इसके बाद वह किसी भी फिल्म में नजर नहीं आईं। दिव्या ने हाल ही में 'यारियां' से बतौर निर्देशक शुरुआत की थी। इसके बाद उन्होंने फिल्म 'सनम रे' और 'रॉय' समेत कई फिल्मों और म्यूजिक वीडियों में बतौर निर्माता और निर्देशक काम किया है। बता दें कि अक्षय कुमार के साथ दिव्या की पहली फिल्म 'अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों' ने बॉक्स ऑफिस पर मात्र 11.56 करोड़ रुपये की कमाई की थी अक्षय कुमार से उम्र में 19 साल छोटी मौनी रॉय ने 2018 में स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म 'गोल्ड' से बॉलीवुड में अपनी पहली उपस्थिति दर्ज कराई थी। उन्होंने फिल्म में इतना बेहतरीन प्रदर्शन किया था कि अक्षय कुमार ने खुद फिल्म के बाद उनकी तारीफ की थी। बता दें कि 55 करोड़ रुपये के बजट में बनी इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 154.43 करोड़ रुपये का कारोबार किया था। अगर हम मौनी रॉय के अपकमिंग प्रोजेक्ट्स की बात करें तो अभिनेत्री जल्द ही फिल्म 'ब्रह्मास्त्र' में नजर आने वाली हैं। पुणे की रहने वाली नरगिस बघेरी ने अक्षय कुमार की फिल्म 'गरम मसाला' से बॉलीवुड में डेब्यू किया था। बता दें कि नरगिस, अक्षय से उम्र में 17 साल छोटी हैं। इसके बाद उन्होंने 2007 में कॉलीवुड फिल्म निनैथले, 2008 में बॉलीवुड फिल्म प्रणालीः द ट्रेडिशन, 2009 में फिल्म मॉर्निंग वॉक और 2010 में फिल्म कुश्ती 2010 में काम किया था। इसके बाद उन्हें अब तक किसी भी फिल्म में नहीं देखा गया है इसके अलावा अक्षय कुमार से 16 साल छोटी नीतू चंद्रा और 15 साल छोटी डेजी बोपनन ने भी फिल्म 'गरम मसाला' (2005) से बॉलीवुड में शुरुआत की थी। नीतू चंद्रा को आखिरी बार 2011 में फिल्म 'कुछ लव जैसा' में देखा गया था। वहीं डेजी बोपनन को अगला प्रोजेक्ट खोजने में दो साल लग गए। उनका अगला प्रोजेक्ट 'यूनाइटेड सिक्स' के रूप में आया जो बॉक्स-ऑफिस पर औसत था। डेजी बॉलीवुड में अपनी पहचान नहीं बना पाईं। उन्होंने कमल हासन, रवि तेजा और गणेश जैसे प्रमुख सितारों के साथ एक तमिल और तेलुगू फिल्म में भी अभिनय किया हैअंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने वाली प्रियंका चोपड़ा ने जब बॉलीवुड में अपने करियर की शुरुआत की थी तब वह सिर्फ 21 साल की थीं। मिस वर्ल्ड 2000 ने अपने से 15 साल बड़े अक्षय कुमार के साथ वर्ष 2003 में फिल्म 'अंदाज' में अभिनय किया था। 8 करोड़ के बजट में बनी इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 15.93 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था।दक्षिण अभिनेत्री तृषा कृष्णन ने अपने से 15 साल बड़े अक्षय कुमार के साथ फिल्म 'खट्टा मीठा' (2010) से बॉलीवुड में शुरुआत की थी। 35 करोड़ रुपये के बजट में बनी इस फिल्म ने 38.67 करोड़ रुपये का कारोबार किया था। इस फिल्म के बाद तृषा किसी बॉलीवुड फिल्म में नजर नहीं आई।बिपाशा बसु ने अक्षय कुमार के साथ 2001 में फिल्म 'अजनबी' से डेब्यू किया था। 17 करोड़ के बजट में बनी इस फिल्म ने 17.05 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था। बिपाशा फिलहाल फिल्मों से दूर हैं। लेकिन, उन्होंने कई हिट फिल्में दीं। उन्हें आखिरी बार 2015 में फिल्म 'अलोन' में देखा गया था। उन्होंने राज, धूम 2, रेस, जिस्म आदि फिल्मों में काम किया है।

# क्या 'पुष्पा 2' में हो जाएगी श्रीवल्ली की मौत जानिए इस वायरल खबर की सच्चाई......

**नई दिल्ली ।**अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना की फिल्म 'पुष्पाः द राइज' ने बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा दिया था। इस फिल्म ने कमाई के मामले में भी कई रिकॉर्ड तोड़े थे। दर्शकों ने इसे इतना पसंद किया कि अब वह बेसब्री से दूसरे पार्ट

का इंतजार कर रहे हैं। इसी बीच ऐसी खबरें आ रही थीं कि 'पुष्पा 2' में रश्मिका मंदाना के किरदार यानी श्रीवल्ली की मौत हो जाएगी और कहानी पुष्पा राज के किरदार के आसपास ही आगे बढ़ेगी। अब फिल्म के प्रोड्यूसर ने श्रीवल्ली की मौत की सच्चाई बताई है। दरअसल, कुछ रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा था कि 'पुष्पा 2' में रश्मिका का किरदार छोटा होगा और पुष्पा राज के दुश्मन के हाथों श्रीवल्ली की मौत हो जाएगी। इस रिपोर्ट के आने के बाद से सोशल मीडिया पर श्रीवल्ली की मौत की खबर वायरल हो गई थी। फैंस कयास लगा रहे थे कि कौन ऐसा कर सकता है। वहीं, बीते दिनों भी रिपोर्ट्स में दावा किया गया था कि 'आरआरआर' और 'केजीएफ 2' को मिली सफलता के बाद 'पुष्पा 2' के मेकर्स पर दबाव बढ़ गया है। ऐसे में फिल्म की कहानी में कुछ बदलाव किया गया है।अब एक इंटरव्यू के दौरान प्रोड्यूसर वाई रविशंकर ने फिल्म में श्रीवल्ली की मौत को लेकर बात की।

# फिल्मों में फेल लेकिन ओटीटी पर हिट साबित हुए ये अभिनेता, वेब सीरीज ने बदल डाली किस्मत

**नई दिल्ली ।**मनोरंजन जगत में ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने अपनी एक खास जगह बना ली हैं। जहां पहले दर्शकों को सिनेमाघरों में फिल्मों के रिलीज होने का इंतजार रहता था उसी तरह आज ओटीटी पर रिलीज होने वाली फिल्मों और वेब सीरीज का इंतजार दर्शक करते हैं। इसी तरह ओटीटी पर रिलीज होने वाली फिल्मों और वेब सीरीज ने उन अभिनेताओं की किस्मत भी बदली है, जो कहीं न कहीं सिनेमा की दुनिया में गुम होते जा रहे थे। आइए आज हम आपको उन्हीं अभिनेताओं के बारे में बताते हैं, जिनकी फिल्में या वेब सीरीज ओटीटी प्लेटफॉर्म पर धमाल मचा रही हैं।बॉबी

देओल सिनेमा के शानदार अभिनेता रह चुके हैं लेकिन आज के समय में अभिनेता को दर्शकों के बीच लोकप्रियता दिलाने का काम वेब सीरीज 'आश्रम' ने किया है। इस सीरीज के तीन पार्ट रिलीज हो गए हैं और दर्शक चौथे का इंतजार कर रहे हैं। बाबा निराला के किरदार में दिखे बॉबी ने हर किसी को अपना दीवाना बना लिया है। हर किसी ने 'आश्रम' में बॉबी देओल के काम को खूब पसंद किया।ओटीटी की दुनिया में जीतेंद्र कुमार 'जीतू भैया' के नाम से जाने जाते हैं, जो कई वेब सीरीज में नजर आए। लेकिन वेब सीरीज 'पंचायत' ने उनकी लोकप्रियता को आसमान तक पहुंचा दिया है।

# 'बीस्ट' से 'घिल्ली' तक, इन फिल्मों में दिखा विजय का एक्शन अवतार, ओटीटी पर करें बिंज वॉच

**नई दिल्ली ।** साउथ सुपरस्टार विजय थलापति किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। 22 जून 1976 को चेनन्ई में जन्मे विजय ने साउथ के साथ ही हिंदी बेल्ट में भी खूब नाम कमाया है। एक बाल कलाकार के रूप में अपने करियर की शुरुआत करने वाले विजय ने कई फिल्मों में काम किया है, लेकिन फैंस उनके एक्शन को देखना काफी पसंद करते हैं। इन दिनों वह अपनी फिल्म 'वरिसु' को लेकर सुखिर्यों में बने हुए हैं, जिसका पोस्टर भी जारी हो चुका है। आज उनके जन्मदिन के अवसर पर हम आपको उनकी बेस्ट एक्शन फिल्मों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिन्हें आप घर बैठे ओटीटी प्लेटफॉर्म पर देख सकते हैं। इस फिल्म को विजय के करियर का टर्निंग प्वाइंट माना जाता है। इस फिल्म से उन्होंने बड़े पर्दे पर अपनी लवर बॉय की छवि को पीछे छोड़ते हुए एक्शन से भरपूर भूमिकाओं की ओर रुख करना शुरू कर दिया। इसे यूट्यूब पर फ्री में और अमेजन प्राइम पर देखा जा

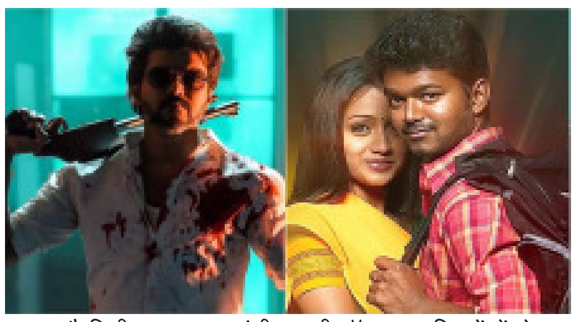

सकता है।घिल्ली एक महत्वाकांक्षी कबड्डी खिलाड़ी वेलू की कहानी है, जो एक क्षेत्रीय मैच में भाग लेने के लिए जाता है। जहां वह एक लड़की धनलक्ष्मी से मिलता है, जिससे एक युवक उसकी इच्छा के विरुद्ध शादी करना चाहता है। ऐसे में वह धनलक्ष्मी को उस युवक से बचाता है। यह फिल्म यूट्यूब और अमेजन प्राइम पर उपलब्ध है।यह विजय के करियर की अब तक की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर फिल्मों में से एक है। इस फिल्म में वह एक पुलिस वाले की भूमिका निभाते हैं, जो अपनी बेटी को सुरक्षित माहौल में पालने के लिए छिप जाते हैं। हालांकि, गैंगस्टरों द्वारा जान का खतरा होने के बाद, वह अपनी बेटी की रक्षा के लिए अपने अतीत का सामना करते हैं। इस फिल्म को यूट्यूब और अमेजन प्राइम पर देखा जा सकता है।इस फिल्म को प्रभु देवा ने डायरेक्ट किया था। इसमें विजय ने एक क्रिमिनल की भूमिका निभाई थी, जिसे श्रुति नाम की लड़की से प्यार हो जाता है जो लड़ाई झगड़ा पसंद नहीं करती। इस फिल्म का बॉलीवुड हिंदी रीमेक 'वांटेड' भी आया था, जिसमें सलमान खान दिखाई दिए थे। यह फिल्म अमेजन प्राइम पर उपलब्ध है। विजय की यह फिल्म इसी साल अप्रैल में रिलीज हुई है। इसमें उन्हें एक अंडरकवर एजेंट की भूमिका निभाते हुए देखा गया है, जो मॉल में बंधकों को बचाने में मदद करता है। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर ज्यादा कमाल नहीं कर पाई लेकिन इसमें उनके एक्शन को काफी पसंद किया गया। इस फिल्म को नेटफ्लिक्स पर देखा जा सकता है।

# बॉक्स ऑफिस पर जारी 'भूल भुलैया 2' का कमाल मंगलवार को अन्य फिल्मों का ऐसा रहा कारोबार

**नई दिल्ली ।** बीते कई हफ्तों से सिनेमाघरों में अलग-अलग फिल्में लगातार दर्शकों का मनोरंजन कर रही हैं। साउथ और बॉलीवुड से लेकर हॉलीवुड तक विभिन्न फिल्में बॉक्स ऑफिस पर एक-दूसरे को टक्कर देती दिख रही है। एक ओर जहां भूल भुलैया 2 का जादू बढ़ता ही जा रहा है, तो वहीं दूसरी तरफ बड़े पर्दे पर शिल्पा शेट्टी की वापसी की कोशिश एक बार फिर नाकाम होती दिख रही है। सभी फिल्मों का प्रदर्शन उनकी कमाई पर निर्भर करता है। आइए जानते हैं मंगलवार को हुए सभी फिल्मों के कारोबार के बारे में- कार्तिक आर्यन और कियारा आडवाणी अभिनीत फिल्म 'भूल भुलैया 2' बॉक्स ऑफिस जबरदस्त प्रदर्शन कर रही है। दर्शकों की तरफ से मिल रही शानदार प्रतिक्रिया के चलते यह फिल्म अब तक की सबसे सफल हॉरर कॉमेडी फिल्म बन गई है। यही वजह है कि अपनी रिलीज के इतने दिन बाद भी फिल्म अभी तक ताबड़तोड़ कमाई कर रही है। 33वें दिन इस फिल्म ने करीब 69 लाख रुपये की कमाई की है। वहीं, इसका कुल कलेक्शन 183.27 करोड़ तक पहुंच चुका है।बॉलीवुड एक्ट्रेस शिल्पा शेट्टी ने हाल ही में रिलीज हुई फिल्म निकम्मा से एक बार फिर बड़े पर्दे पर वापसी की कोशिश की थी। हालांकि, बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म के प्रदर्शन को देख यह कहा जा सकता है कि अभिनेत्री की यह कोशिश

नाकामयाब रही। अभिमन्यु दस्सानी और शर्ली सेतिया स्टारर इस फिल्म ने अपनी रिलीज के पांचवें दिन मात्र दो लाख की कमाई की है।साउथ एक्टर राणा दग्गुबाती और अभिनेत्री साई पल्लवी स्टारर फिल्म 'विराट पर्वम' 17 जून 2022 को दुनिया भर में रिलीज हुई थी। हाल ही में सामने आई रिपोर्ट के मुताबिक, इस फिल्म ने पांच दिनों में कुल 4.34 करोड़ रुपये का कारोबार किया है। वहीं, पांचवें दिन हुई फिल्म की कमाई की बात करें तो फिल्म ने अपने पहले मंगवार को 47 लाख रुपये की कमाई की है।साउथ सुपरस्टार कमल हासन ने अपनी हालिया रिलीज्ड फिल्म चार साल पर्दे पर अपनी वापसी के साथ ही यह साबित कर दिया कि उनका जादू अब भी कम नहीं हुआ है। बीते दिनों रिलीज हुए उनकी फिल्म विक्रम बॉक्स ऑफिस लगातार ताबड़तोड़ कमाई कर रही है। फिल्म को रिलीज हुए दो हफ्ते से ज्यादा बीत चुके है, लेकिन फिर भी इसकी कमाई में कोई कमी नहीं देखने को मिल रही है। इस फिल्म ने 350 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है।बीते दिनों रिलीज हुई फिल्म 777 चार्ली अपनी बेहतरीन कहानी के बाद भी लोगों पर कुछ खास असर नहीं दिखा पाई है। बीते कई दिनों से फिल्म का बॉक्स ऑफिस पर संघर्ष जारी है। इसी बीच फिल्म के 12वें दिन हुई कमाई के शुरुआती आंकड़े सामने आ चुके हैं। फिल्म ने अपने दूसरे मंगलवार को करीब 2 करोड़ का कारोबार किया है। वहीं, इस फिल्म अब कत कुल 61.5 करोड़ का कलेक्शन कर लिया है। 26/11 मुंबई हमले में शहीद हुए मेजर संदीप उननीकृष्णन की वीरता पर आधारित आदिवि शेष की फिल्म मेजर अभी भी बॉक्स ऑफिस पर अपना कमाल दिखा रही है। फिल्म ने बीते मंगलवार को 60 लाख रुपये की कमाई की है, जिसके बाद अब फिल्म का कुल कलेक्शन 37.82 करोड़ हो चुका है।

# देसी हॉरर के जनक रामसे बंधुओं की कहानी में नया मोड़, पढिए बायोपिक प्रोजेक्ट का लेटेस्ट अपडेट

**नई दिल्ली ।**जब भी हॉरर फिल्मों की बात आती है तो जेहन में सबसे पहले रामसे ब्रदर्स का नाम आता है। कम बजट में रामसे ब्रदर्स ने कई ऐसी हॉरर फिल्मों का निर्माण किया है, जिनको देखकर दर्शको के रोंगटे खड़े हो जाते थे। सुनसान हवेलियों के चरमराते दरवाजों, अंधेरे कोनों से भागते चमगादड़ों, कब्रिस्तान से पसरते रहस्मयी धुएं, बिना कोचवान के भागती बघ्घियों वाली फिल्में बनाने वाले रामसे ब्रदर्स का नाम सिनेमा के सारे शौकीन जानते हैं। उनकी फिल्में 'दो गज जमीन के नीचे', 'पुरानी हवेली', 'वीराना' और 'बंद दरवाजा' की गिनती अब कालजयी डरावनी फिल्मों में होती है। तीन साल पहले इन्हीं रामसे ब्रदर्स की कहानी परदे पर उतारने का एलान निर्माता प्रीति सिन्हा ने अभिनेता अजय देवगन की कंपनी के साथ मिलकर किया था। चलिए आपको बताते हैं कि ये कहानी अब तक कहां तक पहुंची है साल 2019 में अजय देवगन ने निर्माता प्रीति सिन्हा के साथ मिलकर 'द रामसे बायोपिक' की घोषणा की थी। फिर कोविड आ गया और फिल्म पर काम शुरू नहीं हो सका। अजय

देवगन के दफ्तर में इस प्रोजेक्ट की फाइल फिर से निकली है और अब तय हुआ है कि इस कहानी को फिल्म की बजाय वेब सीरीज की शक्ल दे दी जाए। इस बात को लेकर पहले अजय देवगन और प्रीति सिन्हा भी पशोपेश में थे। लेकिन, जब इस पर पूरी रिसर्च हुई तो तो पाया गया कि रामसे ब्रदर्स की कहानी को महज ढाई घंटे में नहीं दिखाया जा सकता।जानकारी के मुताबिक अजय देवगन और प्रीति सिन्हा की टीम ने अब ये तय किया है कि इनकी बायोपिक को वेब सीरीज में बनाया जाए। रामसे की यात्रा स्वतंत्रता पूर्व युग में कुलपति फतेहचंद यू रामसे के साथ शुरू होती है और 1996 में उनकी आखिरी फिल्म 'तलाशी' के साथ समाप्त होती है। अजय देवगन और प्रीति सिन्हा ने मिलकर हाल ही में एक धमाकेदार वेब सीरीज 'द ग्रेट इंडियन मर्डर' बनाई है। दोनों को समझ आ रहा है कि रामसे की कहानी एपीसोड दर एपीसोड लोगों को खूब रोमांचित करेगी।रामसे ब्रदर्स दरअसल इन्हीं फतेहचंद यू रामसे के सात बेटे हैं। कुमार रामसे, गंगू रामसे, तुलसी रामसे, अर्जुन रामसे, श्याम रामसे, केशु रामसे और किरण रामसे नामक इन बेटों के अलावा फतेहचंद की दो बेटियां भी हैं। रामसे परिवार विभाजन के बाद कराची से मुंबई आया और यहां ग्रांट रोड पर उनके दफ्तर में दशकों तक रौनक बनी रही। रामसे ब्रदर्स ने समन्वित तरीके से काम किया, फिल्म निर्माण की विभिन्न जिम्मेदारियों को आपस में बांट लिया। इससे फायदा ये हुआ कि रामसे ब्रदर्स की फिल्मों का बजट संतुलित रहता और फिल्में औसतन कामयाब ही रहतीं।रामसे बायोपिक' को एक वेब सीरीज के तौर पर बनाने के बारे में पूछे जाने पर निर्माता प्रीति सिन्हा कहती हैं, 'अभी इस बारे में कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी। मैं बस इतना कह सकती हूं कि रामसे बायोपिक पर विस्तृत शोध अब अंतिम चरण में हैं। हम अपने दर्शकों के लिए रामसे की आकर्षक और जिज्ञासु दुनिया को जल्द ही लाने के लिए उत्साहित हैं।

# तुम बिन' से 'अनेक' तक हर बार नई कहानी लाते हैं अनुभव सिन्हा

**नई दिल्ली ।** हर बार किसी नए मुद्दे पर फिल्म बनाना और दर्शकों का ध्यान उसकी तरफ खींचने में अनुभव सिन्हा को काफी अनुभव है। अनुभव सिन्हा की ज्यादातर फिल्में सामाजिक मुद्दों पर रही हैं। ये फिल्में हिट हों या न हों लेकिन हमेशा फैंस का दिल जरूर जीत लेती हैं। अनुभव सिन्हा हिंदी सिनेमा के वह डायरेक्टर हैं, जिन्होंने इंजीनियरिंग के बाद दो साल तक नौकरी की। जब नौकरी में मन नहीं लगा तो वह मुंबई चले आए। यहां उन्होंने पंकज पराशर के साथ बतौर असिस्टेंट डायरेक्टर अपने करियर की शुरुआत की थी। अनुभव सिन्हा हमेशा अपनी फिल्मों में नए प्रयोग करने के लिए जाने जाते हैं, लेकिन ये भी सच है कि उनके प्रयोग वाली ज्यादातर फिल्मों का बॉक्स ऑफिस पर बुरा हाल हुआ है। हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'अनेक' इसका उदाहरण है। आज अनुभव सिन्हा अपना 57वां जन्मदिन मना रहे हैं। इस खास मौके पर हम उनकी कुछ हिट और फ्लॉप फिल्मों के बारे में बताने जा रहे हैं।इस फिल्म से अनुभव सिन्हा ने बतौर निर्देशक फिल्म इंडस्ट्री में कदम रखा था। यह फिल्म एक लव स्टोरी है। इसमें प्रियांशु चटर्जी, संदली सिन्हा, हिमांशु मलिक, राकेश बापट और अमृता प्रकाश मुख्य भूमिकाओं में थे। बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म ने ठीक ठाक बिजनेस किया था। बतौर निर्देशक यह अनुभव सिन्हा के करियर की पहली सबसे बड़ी फिल्म रही। इस मल्टीस्टारर फिल्म में संजय दत्त, सुनील शेट्टी, अभिषेक बच्चन, शिल्पा शेट्टी, एशा देओल, दीया मिर्जा और जाएद खान अहम भूमिकाओं में हैं। 2005 में रिलीज हुई ये फिल्म उस साल की आठवीं सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म साबित हुई।2007 में आई इस फिल्म से अनुभव सिन्हा पहली बार प्रोड्यूसर बने थे।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।

# बोर्ड पास छात्र-छात्राएं चिंता छोड़े बनाएं अपना भविष्य...

नैनी/इलाहाबाद। इलाहाबाद यूपी एवं सीबीएसई बोर्ड से हाई स्कूल इंटरमीडिएट परीक्षाओं में सफल छात्र-छात्राओं के पास अपना भविष्य बनाने का सुनहरा मौका हैं। ऐसे अभ्यर्थी को भविष्य बनाने का मौका नैनी इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट दे रहा है। इसके जरिए बिना अतिरिक्त समय गवाएं आसानी से अपना भविष्य बना सकते हैं। यह चमत्कार होगा व्यावसायिक शिक्षा से। तीनों बोर्ड के परिणाम घोषित हो चुके हैं। इन बोर्ड परीक्षाओं में उत्तीर्ण प्रदेश के तकरीबन छब्बीस लाख विद्यार्थियों के सामने उच्च शिक्षा के साथ अच्छे करियर की भी चिंता है। ऐसे विद्यार्थियों के लिए इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट आईटीआई में चलने वाले कोर्सेज फॉर स्पीड के रूप में सामने आए हैं। धीरे-धीरे यह रोजगार की गारंटी बनते जा रहे हैं इनकी पत्रदाई के बाद सरकारी और निजी संस्थानों में नौकरी के अलावा स्वरोजगार अवसर के साधन है। इसके अलावा आईटीआई में एक लाख से अधिक युवाओं की मांग है इसके विपरीत हर साल मात्र तीस हजार प्रशिक्षित युवा मिल रहे हैं। इसके अलावा इन दिनों हिमाचल रोड ट्रांसपोर्ट समेत कई विभागों में सैकड़ों पदों के लिए आईटीआई पास अभ्यर्थियों से आवेदन मांगे गए हैं। आईटीआई पास अभ्यर्थियों के लिए रेलवे में ढेरों संभावनाएं हैं ऐसे में विशेषज्ञों की सलाह है कि परंपरागत कोर्स के साथ युवा आईटीआई की ओर ध्यान देकर बेहतर कैरियर प्राप्त कर सकते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर तथा पढ़ाई में बहुत अच्छा नहीं करने वाले विद्यार्थियों के लिए भी यह एक बेहतर विकल्प है। औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र के प्रवक्ता **वरुण स्वराज** से हुई खास बातचीत में उन्होंने इसके बारे में विस्तार से जानकारी दी।

**पूछे गए सवाल**

**प्रश्न-** नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र क्या है? इसके बारे में बताएं।

**उत्तर-** नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र जो नैनी आईटीआई के नाम से लोकप्रिय है एवं तर्कणीय तौर पर अपने प्रकार का एक मात्र संस्थान है जो उद्योग सहयोग हेतु भारत सरकार शासनादेश संख्या नंबर डीजीईटी-6/24/78/2008-टी.सी. द्वारा श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्रालय भारत सरकार द्वारा स्थापित संस्था नियमानुसार विभिन्न प्रदेश राष्ट्रीय निकायों द्वारा मान्यता प्राप्त है। एनसीवीटी-डीजीटी-नई दिल्ली, एनएसआइसी- नई दिल्ली, एनआईओएस - नई दिल्ली।

**प्रश्न-** नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र में अध्ययन से क्या लाभ है?

**उत्तर-** वर्तमान परिदृश्य में पाठ्यक्रम आईटीआई द्वारा समय पर परीक्षाएं एवं समय पर परीक्षा परिणाम का अपग्रेडेशन। श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम बेहतर प्लेसमेंट सांस्कृतिक एवं अन्य गतिविधियां का सूर गठित आयोजन विद्यार्थियों का संपूर्ण विकास मूल्य एवं गुणवत्ता आधारित शिक्षा, व्यवस्थित एवं सुनियोजित एकेडमिक कैलेंडर, डेडीकेटेड टू एजुकेशन मिशन को पूरा करने के उद्देश्य से संस्थान 9 वर्षों से प्रयासरत है। केंद्र से आज तक 5000 से अधिक प्रशिक्षणार्थियों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया जा चुका है एवं केंद्र द्वारा प्रशिक्षित छात्र छात्राएं इस समय सफलता प्राप्त कर चुके हैं। सफलता पूर्वक प्रशिक्षण पूर्ण करने वाले प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाण पत्र दिए जाते हैं जो देश विदेश में सभी जगह मान्य है।

**प्रश्न-** नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र में कौन से पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं?

**उत्तर-** कोपा (कम्प्यूटर आपरेटर एण्ड प्रोग्रोमिंग आसिस्टेंट), फीटर, बेसिक कंप्यूटिंग, डाटा एंट्री ऑपरेशन, फायर प्रीवेंशन एंड इंडस्ट्रियल सेफ्टी, सिक्योरिटी सर्विस, कंप्यूटर हार्डवेयर एंड मेंटेनेंस इन कंप्यूटर एप्लीकेशन, सीसीए (सर्टिफिकेट इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन), इलेक्ट्रिकल टेकिनशियन, रेफ्रिजरेशन एंड एयर कंडीशनिंग, योगा असिस्टेंट, वेल्डिंग टेक्नोलॉजी, सीएनसी प्रोग्रामिंग एंड ऑपरेशन, इलेक्ट्रिशियन, कंप्यूटर टीचर ट्रेनिंग, इत्यादि।

**प्रश्न-** आपके औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र एवं अन्य प्रशिक्षण केंद्रों में क्या अंतर है?

**उत्तर-** नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र अंतर्राष्ट्रीय मानक आई.एस.ओ प्रमाणित है एवं श्रम रोजगार मंत्रालय भारत सरकार द्वारा इसकी स्टार (सितार) ग्रेडिंग की गई है एवं एम.आई.एस.डिफेंस मिनिस्ट्री भारत सरकार द्वारा अधिकृत प्रशिक्षण केंद्र भी नियुक्त किया गया है। अत्यधिक जानकारी के लिए आप फोन भी कर सकते हैं हमारे फोन नंबर इस प्रकार है- 0532-2695959, 9415608710, 9415608783, 9415608790, 7459860480, 7380468640, 6394370734।

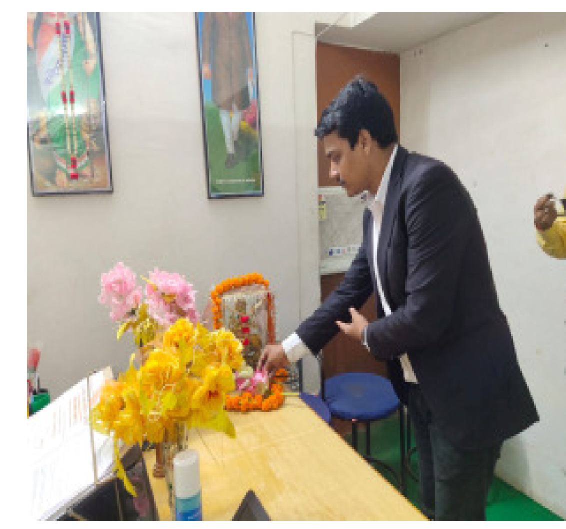

आरके अग्रहरि अनुदेशक राजकीय आईटीआई नैनी, नैनी आईटीसी की प्रवेश विवर्णिका का विमोचन करते हुए।

आकांक्षा वर्मा टीवी एक्ट्रेस नैनी आईटीसी का भ्रमण करते हुए।

स्मृति सिंह मिसेज एशिया पेसिफिक नैनी आईटीसी के छात्रों को साथ।

# बोर्ड पास छात्र-छात्राएं चिंता छोड़े बनाएं अपना भविष्य

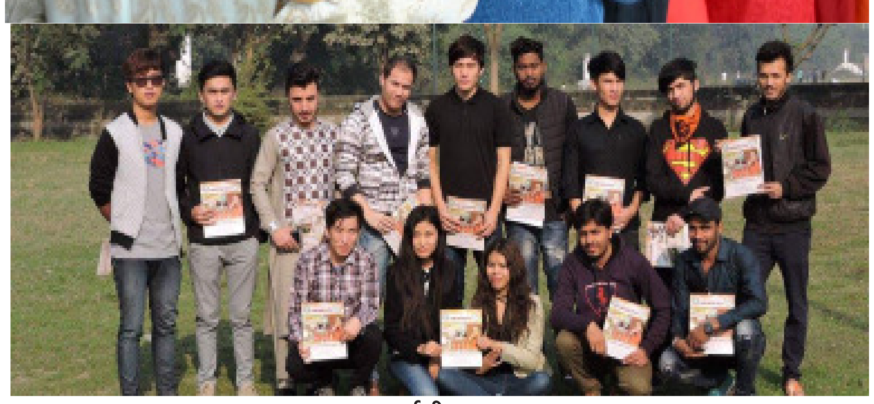

अन्तर्राष्ट्रीय छात्र समूह

एसके गुप्ता प्रधानाचार्य राजकीय आईटीआई नैनी, नैनी आईटीसी के अनुदेशकों से बात करते हुए।

आरके दुबे प्रधानाचार्य राजकीय आईटीआई भदोही नैनी आईटीसी की वेबसाइट का विमोचन करते हुए।

मो. कौशर अनुदेशक नैनी आईटीसी द्वारा राजकीय आईटीआई के समस्त अनुदेशकों नैनी आईटीसी के छात्रों द्वारा बनाये गये मास्क वितरित करते हुए।

नैनी आईटीसी के छात्रों द्वारा बनाया गया मॉडल।

अर्चना सरोज अनुदेशक कोपा ट्रेड राजकीय आईटीआई खागा नैनी आईटीसी के छात्रों को पढ़ाते हुए।

## कार्यालय प्रधानाचार्य नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र
(भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त)

### सीधे प्रवेश सूचना

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र मे प्रस्तावित व्यवसायों मे अगस्त 2021में प्रारम्भ होने वाले सत्र में प्रवेश हेतु इंजीनियरिंग एवं नॉन इंजीनियरिंग प्रशिक्षण कोर्स कोपा, फिटर, बेसिक कम्प्यूटिंग, डाटा एन्ट्री ऑपरेशंस, फायर प्रीवेन्शन एण्ड इण्डस्ट्रीयल सेफ्टी, सिक्योरिटी सर्विस, कम्प्यूटर हार्डवेयर असेंबली एण्ड मेनटेनेन्स, सर्टिफिकेट इनक म्प्यूटर एप्लीकेसन (सी0सी0ए0), इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन, रेफ्रिजरेशन एण्ड एयर कन्डिशनिंग,योगा असिस्टेंट, वेल्डिंग टेक्नोलॉजी, सी0एन0सी0 प्रोग्रामिंग एण्ड ऑपरेशन, इलेक्ट्रीशियन, कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स के लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्यता हाईस्कूल उत्तीर्ण है।

ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया :– इस प्रक्रिया के लिए हमारी वेबसाईट www.nainiiti.com पर जाकर Student's Zone → Online Form → Choose Course → Apply Now पर अपने व्यवसाय कोर्स का चयन कर अपना प्रवेश सुनिश्चित करें।

ऑफलाइन आवेदन प्रक्रिया :– इस प्रक्रिया में प्रशिक्षार्थी अपनी शैक्षिक योग्यता प्रमाण पत्र, आधार कार्ड एवं 4 पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ के साथ प्रवेश कार्यालय में सम्पर्क करे।

नोट-: प्रवेश प्राप्त करने की अन्तिम तिथि 30 अप्रैल 2021 है।

अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए
visit us at : www.nainiiti.com

प्रवेश कार्यालय :- तुलसीयानी प्लाजा तीसरी मंजिल,
एम.जी. मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

फोन करें :- 0532-2695959, 9415608710, 6394370734, 7355448437, 6386474074, 6306080178, 9026359274